

JASAWANT UDYOT

BY

DALPAT MISHRA

पी एलएनएनपीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

Edited by

AGARCHAND NAHATA

ANUP SANSKRIT LIBRARY

BIKANER.

1949

PREFACE.

The Anup Sanskrit Library has already published three works, viz, the Gitamanjari, the Vira gita and the Dayaldas Ki Khyat in the Sadul Orinatal Series. The Jasawant Udyot, a work of both literary and historical importance, is now published as No 3, edited by Mr Agarchand Nahata. I have no doubt that scholars will appreciate this publication particularly at a time when modern Indian languages are coming to their own.

The Library takes the opportunity to express its gratitude to His Highness the Maharaja of Bikaner, whose kind and generous patronage has not only enabled it to make rapid progress in all its literary activities but also has been a constant source of encouragement to it.

Thanks are due to Mr Agarchand Nahata who edited this for the Library.

Anup Sanskrit Library } K. Madhava Krishna Sarma
BIKANER 1940 }
Curator

दो शब्द

सेठ श्री अग्रचन्द्र नाहटाने जसयन्त उद्योतका सम्पादन कर राजपूत ऐतिहासिकी श्रीधृद्धि की है। आरम्भिक भाग विष्णु-पुराणसे लिया गया है। उसकी शुद्धियों या अशुद्धियोंके लिये "उद्योत" का कर्ना दल्पति कवि उत्तरदायी नहीं है। अन्य साठ रानाओंको इतिवृत्त लोकरूपाओंके आधार पर दिया गया है। ॐ कवि यह दावा नहीं करता कि उसमें लिखी सत्र चार्ले सर्वथा ठीक हैं। पुरानी कथाओंमें कुछ न कुछ कल्पनाका सम्मिश्रण रहता है, वह "उद्योत" की कथाओंमें भी स्वभावतः वर्तमान है।

'उद्योत' के आधार पर यह सिद्ध करना कठिन है, कि राठौड़ शास्त्रमें सूर्य-यज्ञी थे। प्रतीत होता है कि किसी परवर्ती कालमें विष्णुपुराणकी वंशावली राठौड़ों की यशावली से जोड़ दी गई, पद्य दोनोंके बीचके समयान्तरको कल्पित नामोंसे भर दिया गया। ऐसी यशावलीयें भी वर्तमान हैं जिनमें राठौड़ोंका सम्बन्ध युध पद्य चन्द्रमासे कर दिया गया है। कल्पित नामोंकी सख्यामें पर्याप्त विभिन्नता है। कुछ लेखकोंने राठौड़ोंको कन्नौजके गाहड़वालोंने अभिन्न माना है। किन्तु शिखरलेखोंके आधारपर 'उद्योत' आदिका यह कथन असत्य सिद्ध किया जा सकता है कि जोधपुर के राठौड़ जयचन्द्रके वंशज हैं।

तथापि 'उद्योत' का यह परम्पराश्रित वर्णन सर्वथा मूल्यहीन नहीं है। उसके अनुसार राठौड़ पहले कर्णाट देशमें राज्य करते थे। सितु ग (श्रीतुङ्ग) के पुत्र भरतने सर्वप्रथम कन्नौजमें राठौड़ राज्यकी स्थापना की। मारवाड़ राज्यके संस्थापक सीहा इसके वंशज थे। इतिहाससे सिद्ध है कि दक्षिणमें राष्ट्रकूटोंका महान् राज्य वर्तमान था। इन्द्र, भृगु, गोविन्द आदि राष्ट्रकूट रानाओंके आक्रमणके कारण अनेक राष्ट्र-

कथुरु वंस वरणीय प्रथम, विष्णु पुराणहिं मानि

करनि साठि नरि दकी, बरनी लोक कयानि ॥ (पृष्ठ ८७)

१ इस विषय पर "जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री" में प्रकाशित हमारा लेख पद्य ओमानो रचित जोधपुर का इतिहास, प्रथम भाग देखें।

फूट राज्योंकी उत्तरापथमें स्थापना हुई। इनमें से एक कान्यकुब्जका राठौड़ राज्य था। इसके परवर्ती राजा; संभवतः विजयचन्द्र, जयचन्द्र आदि गाहड़वाल राजाओं के सामन्त थे, कन्नौज के मुसलमानों द्वारा विजित होने पर वे अनेक स्थानोंमें भ्रमण करते हुए मारवाड़ पहुँचे। इन्हीं ऐतिहासिक तथ्योंका त्रिकुव रूप 'जसवन्त उद्योत' में वर्तमान है।

सीहानी को सिद्धराज जयसिंहका समसामयिक राजा मानना ग्रन्थकारकी भूल है। दोनों के ठीक समयमें कमसे कम सौ वर्ष का अन्तर है। इसीप्रकार अन्य भूलोंकी कमी भी नहीं। उन्हें किसी अंशमें 'छन्द राठ जइतसीरो' आदिके आधार से ठीक किया जा सकता है। ग्रन्थ के विद्वान सम्पादकने अनेक ऐसी भ्रान्तिर्योंका टिप्पणीमें यथास्थान निर्देश किये हैं।

राव चन्द्रसेनसे महाराज जसवन्तसिंह तकका भाग इतिहास दृष्टिसे विशेष उप-योगी है। किन्तु जसवन्त-उद्योत संभवतः केवल इतिहासका नहीं, अपितु अलङ्कार का भी ग्रन्थ था^२। श्री नाहटा द्वारा सम्पादित 'जसवन्त-उद्योत' उसका एक प्रकरण मात्र है। कम से कम पुष्पिका के ये शब्द—

“इति श्री तुलसीराम सुत दलपति कवि विरचिते जसवन्तउद्योते वंसावली प्रकरणं संपूर्णम्”

इस अनुमानकी समर्थित करते हैं। परवर्ती प्रकरण कभी लिखे गये या नहीं, या लिखे गये तो अब प्राप्य है या नहीं यह कहना हमारे लिये कठिन है। किन्तु जिस योजनाकी दृष्टिसे ग्रन्थका आरम्भ हुआ था, उससे शायद ऐतिहासिक भाग कुछ संक्षिप्त हो गया हो, 'उद्योत' में ऐतिहासिक घटनाओंका वर्णन इतना विशद नहीं है जितना हमें अनेक रासों एवं वचनिकाओंमें मिलता है।

काव्य दृष्टिसे जसवन्तउद्योत अच्छा ग्रन्थ है। शाहजहाँवाद को अमरावतीसे श्रेष्ठ सिद्ध करनेमें कविने खूब चातुर्य दिखाया है। रघुवंशका आश्रय लेकर कुंठ रघुवंशी घटनाओं का भी अच्छा वर्णन दिया गया है। “हार दै दै हीर दै दै चामी-करु चीरु दै दै दीन विपति वहाई है” जैसी अनेक पक्तियाँ काव्यमें वर्तमान हैं। काले काले हाथियों को जलधर, गोलोंकी आवाजको वादलोंकी गरज, वीरोंके शस्त्रास्त्र

२. यह अनुमान बहुत कुछ पुष्पिकाके आधार पर है। विद्वान सम्पादकने दलपति मिश्रको जसवन्तसिंहजीका काव्यगुरु माना है, संभव है बाकी का भाग महाराजाकी काव्यशिक्षा के लिये लिखा गया हो।

की चमकको दामिनीकी दमक मानकर रिपुसम्पत्तिको अभिसारिकाका रूप देना दलपतिके कवित्वका सूचक है यद्यपि यह कवित्व काव्यकी प्रथम श्रेणी तक प्रायः न पहुँच सका है।

जसवन्त-वद्योत का दूसरा नाम 'जसवन्त विलास' है सम्भव है 'वद्योत' य विलास' नामान्तक अन्य ग्रन्थ भी कविने लिखे हों। उनका पता शनैः शनैः लग सकता है। राजाओं की कृतियोंके रूपमें प्रकाशित अनेक ग्रन्थ प्रायः उनके आश्रित कवियों की रचनाएँ होती हैं। इनका पता लगाना भी श्री नाहटा बन्धुओं जैसे अवेपकोंका कार्य है। दलपति कवि के परदादा दीपमिश्रने जोधपुर नरेश उदयसिंह के ज्येष्ठ भाई रामको पढ़ाया था^३। सन् १७०५ में महाराज जसवन्तसिंहसे मिलकर दलपति मिश्रने सभ्यत इस अध्यापनपरम्परा को फिर चालू किया हो^४। जसवन्तसिंहजी की आयु उस समय केवल २१ साल की थी। वे ऐसी अवस्था पर पहुँच चुके थे जब वे काव्यके मर्म को पहुँचे और उसका अच्छी तरह अध्ययन कर सकें। जसवन्त सिंहजी ने अनेक विद्वानों, कवियों एवं साधुओंकी सगतिसे सम्भवतः पर्याप्त लाभ उठाया था। किसने उनको कहाँ तक प्रभावित किया, यह कहना कठिन है। किन्तु सम्भव है कि प्रारम्भिक प्रभाव दलपति मिश्रका रहा हो। दलपति मिश्र अच्छे कवि थे, यद्यपि उनका कवित्व और वैदुष्य उस कोटिका न था जो उन्हें जसवन्तसिंहजी का सर्वाङ्गीण काव्यगुरु बना सके। महामहोपाध्याय डाक्टर गौरीशङ्कर हीराचन्द्र ओझाने सूरतमिश्र को महाराजाका काव्यगुरु माना है। किन्तु जिस विद्वानको प्रथम रचनाकाल जसवन्तसिंहजीकी मृत्युके बाद आरम्भ होता है उसे महाराजका काव्यगुरु मानना भूल है। हम श्री नाहटाके इस निर्णयसे सर्वथा सहमत हैं कि सूरतमिश्र जसवन्तसिंहजीके काव्यगुरु न थे।

मंगलपुरम्

दशरथ शर्मा

७—५—१९४९

३. देखो 'वद्योत' पृष्ठ २, पद्य सख्या ७

४. देखो टिप्पणी २.

प्रस्तावना

आर्यावर्त आध्यात्म प्रधान देश है। यहाँके ऋषि-मुनि वेद और दुनियाकी ओर अधिक ध्यान नहीं देकर शाश्वत आत्माकी ओर ही लक्ष्य आकृष्ट थे। भारतीय संस्कृतिमें आत्म प्रकाशन तो दूर रहा, अपना साधारण परिचय भी स्वयं देना हेय समझा जाता है। नामका मोह-यशकीर्तिकी कामना भी हमारे यहाँ स्याज्य मानी गई है। यही कारण है कि हमारे प्राचीन ग्रन्थकारोंने वृद्धतर ग्रन्थ निर्माण करके भी अपने कुल, वंश आदिका परिचय तो दर्किनार, अपने नामका निर्देशतक नहीं किया। हमारे व्यवस्थित इतिवृत्तकी अनुपलब्धिका यह भी एक प्रधान कारण है।

भारतीय प्राचीन साहित्यमें जिसे विशुद्ध इतिहास कहा जाय वेंसा ग्रंथ तो उपलब्ध नहीं, पर उन्होंने महापुरुषोंकी जीवनीको बड़े रोचक ढंगसे अपने काव्यग्रन्थोंमें उपस्थित किया जिससे वे जनसाधारणके लिये, अत्यन्त उपयोगी प्रमाणित हुए। इन ग्रंथोंने विशिष्ट लोक-जीवनके निर्माणमें बहुत बड़ी प्रेरणा दी जिससे महापुरुषों के चरित्रको आदर्श रखकर जनताने अपने नैतिक व आध्यात्मिक जीवनको उन्नतरमें उठाया। रामायण एवं महाभारत ऐसे ही महत्त्वपूर्ण काव्य हैं। इनमेंसे महाभारतको हमारे प्राचीन ग्रन्थकारोंने इतिहासकी संज्ञा दी एवं उसका उल्लेख चार वेदोंके साथ पंचम वेदके रूपमें किया है^१। ऐसे ग्रंथोंमें घटनाओंकी संघन मिति उपलब्ध नहीं; इससे भारतीय इतिहासका सिञ्चसिला बैठाना अत्यन्त कठिन हो गया है। उनमें कथित बहुत सी बातें ऐतिहासिक होनेपर भी इतनी अत्युक्ति पूर्ण, और अलंकारिक भाषामें लिखी गई हैं कि तथ्यको निकालना असम्भव नहीं तो भी कठिन अवश्य है। प्राचीन भारतके इतिहासकी समस्या इन्हीं सब कारणोंसे अबतक उलझनमें है।

इतिहासके विशिष्ट साधनोंमें अभिलेख एवं मुद्राओंका स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। अध्यावधि प्राप्त भारतीय अभिलेख लगभग २५०० वर्ष^२ से प्रारंभ होते हैं और

१ जैनागम कल्पसूत्र में भी "रिठव्वेय, जन्नुव्वेय, सामव्वेय, अत्थव्वणवेय इतिहास पंचमाणं" शब्दों द्वारा इसका समयन पाया जाता है।

२ स्वर्गीय महामहोपाध्याय डा० गौरीशंकर हीराचन्द बोभाकी 'भारतीय प्राचीन-लिपि' साला' के अनुसार शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण सबसे प्राचीन अभिलेख वीरात् ८४ वाला जैन-लेख है। जो मध्यमिका से प्राप्त एवं अजमेरके संग्रहालय में उन्हीं के द्वारा संग्रहीत है।

उन्हींके आधारसे प्राचीन इतिहासके व्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है, पर उनसे हमें थोड़ी सी घटनाओंका ही पता चलता है। हमारे पौराणिक ग्रन्थोंमें भी कुछ कुछ इतिहास सामग्री एव राजतशावलियों प्राप्त होती है। पर उनका आधार बहुत कुछ अनुश्रुति परम्परा होनेसे उनमें प्रतिपादित बातें अन्य समकालीन प्रमाणों द्वारा समर्थित होनेपर ही मान्य हो सकती हैं। पुराणोंमें प्राप्त वज्रावलि^३ की जाच करने पर कई स्थानोंमें कई नाम छूटे हुए और कहीं कलित नाम जोड़ दिये गये मालूम देते हैं। जब पुराणोंमें ऐतिहासिक घातोंको समग्र करनेकी और ध्यान दिया गया तो प्राचीनकालकी बहुत सी बातें विस्मृत हो चुकी थीं और सुनी सुनायी घातोंमें एफता नहीं पायी गयी इसीलिए ऐसी गडबडी हो जाना अस्वाभाविक नहीं। इनके परवर्ती ऐतिहासिक साधनोंमें विदेशी यात्रियोंके भ्रमण वृत्तांत भी उपयोगी साधन हैं।

हमारे ऐतिहासिक ग्रन्थोंकी अधिकता तेरहवीं शतीसे प्रारम्भ होती है इससे पूर्ववर्ती^४ समकालीन इतिहास ग्रंथ बहुत कम मिलते हैं। जैन ग्रन्थकारोंने ऐतिहासिक ग्रन्थोंके निर्माणमें अत्यधिक योगदान किया है। इस समयके रचित ग्रन्थोंसे वर्तमान इतिहासके साथ साथ पूर्ववर्ती इतिहासकी जानकारी भी कम नहीं मिलती।

तेरहवीं शतीसे निरन्तर ऐतिहासिक ग्रन्थोंके निर्माणकी धारा प्रवाहित^५ होती रही।

- ३ वायुपुराण, विष्णुपुराण, मत्स्यपुराण, भविष्योत्तर, ब्रह्माण्ड और भागवत पुराणमें प्राचीन राजवंशावलियों परी जाती हैं। जैन ग्रन्थ तिल्लोगाली पयसा आदि एव बौद्ध ग्रन्थोंमें भी कतिपय प्राचीन राजवंशोंकी नामावली उपलब्ध है, जिनमें उनका राज्यकाल भी दिया गया है।
- ४ पूर्ववर्ती ग्रन्थोंमें सुमाराक्षस नाटक, हर्षचरित (७ वीं शती), नवसहस्रिक चरित (१० वीं शती), विक्रमादित्यचरित (११ वीं शती) रामचरित (१२ वीं शती) आदि धोड़े से ग्रंथ ही उपलब्धनीय हैं।
- ५ तेरहवीं से पन्द्रहवीं शतीके उपलब्धनीय ग्रंथ इस प्रकार हैं:—राजतरङ्गिणी (सं० १२०५) पूष्यराज विजय (सं० १२४७ लगभग), ब्रह्मभय काव्य (सं० १२१७), कीर्तिकौमुदी (सं० १२८२), सूक्तसकीर्तन (सं० १२८५), हम्मीर मद मर्दन (सं० १२८६), बल्लुपाल सम्बन्धी अनेक ग्रंथ, आबूरास, गिरनार रास, युगप्रधानाचार्य गुब्बानली (सं० १३०५), जगद्गुरुचरित (सं० १३२०), प्रभाषकचरित (सं० १३३४), प्रबन्धचिन्तामणि (सं० १३६१), विविधशीर्षकल्प (सं० १३६०), शत्रुजयतीर्थोद्धार प्रबन्ध (सं० १३६२), उपवेशगच्छ चरित, पेशदास, समराराम, हमीर महा काव्य (सं० १४०० लगभग) प्रबन्धकोष (सं० १४०५), सुमाराखचरित्रादि।

यही समय भारतमें मुस्लिम राज्य स्थापनाका है और उन्होंने भी इस कार्यमें प्रगंसनीय कदम उठाया। मुस्लिम साम्राज्यके अनीतिपूर्ण व अशान्त शासनने हमारं बहुतसे अनमोल साहित्य एवं स्थापत्यसे हमें सदाके लिये वंचित कर दिया। सम्राट अकबरके शासनकालमें भारतकी वस्तु जनताने पुनः शान्तिका आंशिक अनुभव किया, फलतः इस समय भारतीय साहित्य कलाका सर्वतोमुखी विकास हुआ नजर आता है। भारतीय नरेशोंने अपने इतिहासको संग्रहित करनेका प्रयत्न किया और ख्यात लिखनेकी परम्परा भी इसी समयसे चालू हुई। ख्यात लेखकोंके सामने प्राचीन इतिहासकी समस्या बड़े जटिल रूपमें उपस्थित हुई पर उन्होंने उसे पुराण, अनुश्रुति आदिके द्वारा सुन्दारकर सन्तोष माना। उस समय आजकलकी तरह न तो इतनी ऐतिहासिक साधनोंकी उपलब्धि ही थी और न वैसी विश्लेषणात्मक दृष्टि ही, अतः उनसे एतद्विषयक जानकारी सीमित ही प्राप्त हो सकती है। ये ख्यात आदि ग्रन्थ हमें बहुत कुछ सहायता करते हुए भी कहीं-कहीं बड़े चक्करमें डाल देते हैं, अतः इन सब साधनोंका उपयोग बड़ी गम्भीरता एवं परीक्षणके साथ ही किया जाना उचित प्रतीत होता है।

जैसा कि अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थोंमें पाया जाता है कि ग्रन्थ रचनाका सामयिक और थोड़ा पूर्ववर्ती इतिवृत्त तो ग्रन्थकारके सम्मुख घटित या उन घटनाओं के देखने व सुननेवाले व्यक्तियोंके कथन पर अवलम्बित होनेसे प्रायः सही होता है पर ग्रन्थ रचनाके दो सौ चार सौ वर्ष पूर्वकी बातों विसृति एवं भिन्न भिन्न व्यक्ति सम्बन्धित प्रवादोंसे सम्मिश्रित हो जानेके कारण बहुत कुछ भूल भ्रान्तियोंसे युक्त हो जाती हैं। ख्यात ग्रंथोंका यही हाल है, राठौड़ोंके इतिहासको ही लीजिये, तेरहवीं चौदहवीं शतीमें इनका मारवाड़में राज्य स्थापन हुआ पर उनकी ख्यात—इतिहास लेखनका कार्य सतरहवीं शतीमें प्रारम्भ हुआ विदित होता है। फलतः पन्द्रहवीं शतीके पहलेके राजाओंके जन्मादि एवं घटनाओंका समय ख्यातोंमें नहीं पाया जाता; किसी किसी में मिलता भी है तो वह अन्य प्रामाणिक साधनसे गलत एवं कल्पित सिद्ध होता है। राठौड़ वंशकी प्राचीन वंशावली बहुत ही अशुद्ध है, उनकी परम्परा गाहड़वालोंके साथ मिला दी गयी है एवं गाहड़वाल नरेशोंमें भी जयचन्द्रके पिता विजयचन्द्रके पहले की वंशावली शिलालेखादिमें उल्लिखित वंशावली के नामोंसे सर्वथा भिन्न है^६। भिन्न भिन्न ख्यात लेखकों द्वारा लिखित राठौड़ोंकी

६ अनूपसंस्कृत लाइब्रेरीकी एक ख्यातमें जो कि राजा पदार्थ से प्रारम्भ होती है राजाओं के जन्म, राज्याभिषेक, स्वर्गारोहण, के समयसूचक जो उल्लेख हैं वे सर्वथा कल्पित प्रतीत होते हैं। माननीय ओम्काजीने भी अपने जोधपुर राज्यके इतिहास (प्रथम खंड पृ० १४८ से १५७) में ऐसे उल्लेखों की अवास्तविकता प्रतिपादित की है।

वंशावली में भी एकता नहीं पायी जाती* । किसीने उन्हें चन्द्रवंशी घतलाते हुए शिव शक्तिसे वंशावलीका प्रारम्भ किया तो किसीने उन्हें सूर्यवंशी कहते हुए नारायण, ब्रह्मासे उनका सम्बन्ध मिलाया है । परिशिष्टमें दोनों प्रकारकी वंशावलियें दी गयी हैं । ऐसी त्रिकट परिस्थितिमें यह अत्यन्त आवश्यक है कि बचे खुचे समस्त ऐतिहासिक साधनों को शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित किया जाय और उनकी जाच पड़तालके साथ सशोधनात्मक इतिहास तैयार किया जाय । पर लेन्के साथ कहना पड़ता है कि अभीतक इन सब साधनों के अनुमधान पथ प्रकाशनकी ओर हमारे विद्वानोंने बहुत ही कम ध्यान दिया है ।

अग्नेयी साम्राज्यकी स्थापना—विशेषतः सन् १८४१ में एसियाटिक सोसाइटी बंगालकी स्थापना—के बाद पाश्चात्य विद्वानोंने अनवरत श्रमसे हमारे इतिहासमें एक नवीन क्रान्ति उपरिधत हुई जिसके द्वारा हमारी अनेक भ्रान्त परम्पराओंका शोधन हुआ । कतिपय भारतीय मनीषियोंने भी उसमें योग देकर इस कार्यको आगे बढ़ाया फिर भी अभी तक इस क्षेत्रमें जो कार्य हुआ है वह अपर्याप्त है और उसे जोरोंसे चलानेकी आवश्यकता है । राजस्थानके इतिहासको ही लीजिये स्वर्गीय ओझाजीके अत्यधिक परिश्रम करने पर भी अभी तक समस्त रियासतोंके इतिहास प्रथम प्रकाशित नहीं हो पाए । हालांकि प्रत्येक राजघरानों पथ प्रतिष्ठित रानदानोंके पास अपना यत्किंचित् इतिवृत्त विद्यमान है ही जिन्हे प्रकाशमें लाने पर हमारी जानकारी बहुत ही बढ़ सकती है ।

संस्कृतके ऐतिहासिक काव्योंकी भांति हिन्दीमें भी ऐतिहासिक काव्योंका निर्माण तेरहवीं शतीमें प्रारम्भ होता है । चन्द कविका पृथ्वीराज रासो हिन्दीका सर्वप्रथम

७ जसन्त उद्योत में दी हुई वंशावली बृहद्बल तक की बहुत कुछ पुराणोंसे समर्थित है पर उसके बाद बहुत ही गड़बड़ी है । प्राचीन चरित्रकोष के परिशिष्टानुसार बृहद्बलसे समिन्त तक ४२ नाम आते हैं तब प्रस्तुत ग्रन्थमें केवल ११ नामोंका ही उल्लेख है । उनमें भी शिवाकर, सहदेव और अन्तरोक्ष इन तीन नामों छोड़कर बाकीके नामोंमें सर्वथा वैषम्य है । स० १६४५ की धीकानेर दुग प्रशस्तिमें नारायणसे सीताराम तकके राजाओं की संख्या १३४ पाई जाती है । पर हमारे समग्र की राठौड़ वंशावलीमें सीताराम ५३ पे मन्वरमें आते हैं । डा० पृ० पी० टैलीटोरोके अनुसार अन्य एक व्यातमें वहाँ तकके राजाओंकी संख्या २५० क लगभग है । वंशावलियोंकी अप्रामाणिकता व अशुद्धता का इससे बढ़कर और क्या प्रमाण होगा ।

ऐतिहासिक काव्य है। यद्यपि पीछेसे उसमें अन्यधिक प्रश्लेष हुआ है और उसका ऐतिहासिक महत्त्व नष्टप्रायः हो गया है। उसके मूल्ह्वका पता लगानेका प्रयत्न चालू है। सतरहवीं शताब्दीमें लिखित रासोके जो लघु एवं लघुनम रूपान्तर^८ हमें प्राप्त हुए हैं उससे रासोका परिमाण बहुत छोटा जात होता है। यद्यपि इससे भी प्राचीन प्रतियोंकी उपलब्धि हुए बिना रासोके ऐतिहासिक महत्त्व ही समस्या सुलझायी नहीं जा सकती फिर भी इन लघु संस्करणोंमें बहुतसी इतिहास विरुद्ध कही जानेवाली बातें नहीं पायी जातीं।

सतरहवीं शताब्दीसे हिन्दी भाषामें ऐतिहासिक काव्योंका निर्माण बराबर होता रहा है। फलतः पचासों ऐतिहासिक काव्य उपलब्ध होते हैं। उनमेंसे कई ग्रन्थ तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं पर खेद है कि हमारे इतिहासकारोंने उनका उपयोग करनेमें बहुत ही उपेक्षा की है। मुस्लिम साम्राज्यकालके इतिहासके लिए हमारे विद्वानोंने फारसी तवारीखोंको ही प्राधान्य दिया है; पर विधर्मी होनेसे तवारीख-कारोंने अपना महत्त्व बतानेके लिए सत्यको छिपाकर बहुतसी विपरीत और विकृत बातें लिख डाली हैं। फारसी लिपीकी अस्पष्टता और अवैज्ञानिकताके कारण बहुधा व्यक्तियोंके नाम तक गलत प्रकाशमें आये हैं^९। इस सबका संशोधन एवं वास्तविक तथ्यकी जानकारी हमारे हिन्दी काव्योंसे कई अंशोंमें भली प्रकारसे हो सकती है।

हिन्दी भाषाकी बहिन राजस्थानी-डिंगल भाषामें राजस्थानके इतिहासकी अनमोल सामग्री भरी पड़ी है। इस भाषाके ऐतिहासिक काव्य ख्यात^{१०}, वात^{११}, डिंगलगीत^{१२}

८ इनके सम्बन्धमें राजस्थानी भाग ३ अङ्क २ एवं विशालभारत (जून १९४३) में हमारे लेखमें प्रकाशित हो चुके हैं।

९ देखिये पं० चन्द्रबली शास्त्री का "अबुलफजलका यथ" (नागरी प्रचारणी पत्रिका वर्ष ५१ अङ्क १), एवं बम्बई से प्रकाशित "प्रतिभा" पत्रिका में लेख।

१० सुहणोत नैगसी और दयालदास सिंहायचकी ख्यात भाषा एवं इतिहास उभय दृष्टि से बहुत ही महत्त्व की है इनमें से प्रथम का हिन्दी अनुवाद दो भागोंमें नागरी प्रचारणी सभा, काशीसे व दूसरीका मध्यमांश मूल रूपमें अक्षर संस्कृत पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

११ स्वर्गीय पारीकजी सम्पादित "राजस्थानी वातों" नामक ग्रन्थ पिलाणीसे प्रकाशित हुआ था। राजस्थानीवातोंका साहित्य अति विशाल है। उसके ३ भाग स्वामी नरोत्तमदासजीने संपादित किये हैं ऐतिहासिक दृष्टिसे बाँकीदासकी वातें विशेष महत्त्वपूर्ण हैं जिसका भी संपादन कार्य चालू है।

१२ महाराणा यश प्रकाश नामक ग्रंथमें कुछ डिंगल गीत पहले प्रकाशित हुए थे, अभी राज-

आदि प्रचुर परिमाणमें उपलब्ध हैं जिनमें अनेक ऐसे रणगीर, दानगीर, धमगीर व्यक्तिओंके ऐतिहासिक चित्रण मिलते हैं जिनके नाम तक हमारे इतिहासकार नहीं जानते। राजस्थानमें सतीस्मारक, जूझार देवल व शिलालेख आदि पद पदपर विखरे पड़े हैं उन सबको संगृहीत कर प्रकाशमें लाये बिना हमारा इतिहास अधूरा ही रहेगा। इस दिशामें अपेक्षाके कारण हमारी विशाल ऐतिहासिक सामग्री नष्ट होती जा रही है और थोड़े दिनोंमें जो कुछ विद्यमान है वह भी तिलीन हो जायगी। -यदि अब भी हम नहीं समझें तो फिर पश्चात्तापके सिनार रह ही क्या जायगा ?

हिन्दी भाषामें राजस्थानी भाषाके जितनी तो नहीं पर कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री अवश्य ही पायी जाती है। भारतीय सत्तों व भक्तजनोंसे सबंधित ऐतिहासिक साधनोंका हिन्दीमें प्राचुर्य है। भक्तमाल और चसकी टीकाएँ, कबीर, नामदेव, रैदासकी परिचई आदि प्रकाशित ग्रन्थोंमें भक्तों एवं सन्तोंके चमत्कारिक जीवनवृत्त पाये जाते हैं। भक्तों एवं शिष्यों द्वारा इनमें कुछ अंशोंमें अतिरंजन भले ही किया गया हो पर इनका ऐतिहासिक महत्त्व अस्वीकार नहीं किया जा सकता। पुष्टिमार्गी वैष्णव सम्प्रदायके सम्ग्रन्थमें भी हिन्दी भाषामें बहुत कुछ ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त है। चौरासी घण्टनकी वार्ता, २५० घण्टनकी वार्ता, अष्ट सखानकी वार्ता, प्राचीन वार्ता रहस्य, बल्लभ वशावली, बल्लभाद्यान, वनयात्रा, व्रजवस्तु वणन आदि वैष्णव सम्प्रदायके ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रकाशमें भी आ चुके हैं। राजकीय इतिहासके लिए वीरसिंहदेवचरित्र, राजविलास, शिखरवशो स्वप्ति, हमीर रासो, परमाल रासो, फेशरीसिंह समर, सुजानचरित, छत्रप्रकाश, हमीरहठ, हिम्मतबहादुर प्रयावली, सांभर युद्ध, वशभास्कर आदि ग्रन्थ बल्ले-लनीय हैं और प्रकाशित भी हो चुके हैं। गोरानादलकी कथा आदि कई ग्रन्थ विशुद्ध इतिहासके रूपमें न होने पर भी अद्भुत ऐतिहासिक अन्वय हैं। जैन कथि बनारसीशासका अर्द्धकथानक हिन्दीका सर्वप्रथम आत्मचरित्र एवं विशुद्ध ऐतिहासिक

स्थानी वीर गीत नामके स्वामी मरोत्तमदासजी के संपादित एक संग्रह अल्प संख्यक पुस्तकालयसे प्रकाशित हुआ है। ध्युयुत् सीतारामजी लालम और उदयपुरने हिन्दी विद्यापीठ द्वारा बहुतसे दिग्गज गीतोंका सम्पादन हुआ है। दिग्गज गीत हजारोंकी संख्या में पाये जाते हैं।

ग्रन्थ है। बुद्धिविलास^{१३}, गुलालचरित^{१४}, भावदेवसूरिरास^{१५} आदि जैन ग्रन्थोंमें भी इतिहास सामग्री पायी जाती है। वैसे प्राचीन राजस्थानी भाषामें तो जैन कवियों द्वारा रचित ऐतिहासिक रास, चौपाई, कागु, विद्याहला, तीर्थमाला, भास इत्यादि प्रचुर परिमाणमें उपलब्ध हैं जिनमेंसे ऐतिहासिक राससंग्रह भाग १ खे ४, ऐतिहासिक गूर्जर काव्य संग्रह, ऐतिहासिक रासमाला, प्राचीन तीर्थमालासंग्रह ऐतिहासिक सञ्ज्ञायसंग्रह और हमारे संपादित ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह आदि ग्रंथोंमें बहुतसे जैन काव्य प्रकाश में भी आ चुके हैं।

प्राचीन ग्रन्थोंके अन्वेषण, संग्रह एवं प्रकाशनकी ओर प्रारम्भ से ही हमारी अभिरुचि रही है। हस्तलिखित संग्रहालयोंके अवलोकनका कार्य भी निरन्तर चलता रहता है। अभी कुछ वर्षोंसे हिन्दीके अज्ञात ग्रन्थ^{१६} संग्रहका कार्य हाथमें लिया गया तो कतिपय नवीन ऐतिहासिक ग्रंथोंका पता चला। कलकत्तेकी राजस्थान रिसर्च सोसाइटीके संग्रहमें लावा रासा^{१७}, रतन रासा^{१८} आदि ऐतिहासिक काव्य दृष्टिगोचर हुए इसी प्रकार बीकानेरकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें प्रस्तुत जसवंतउद्योत, गोकलेश विवाह^{१९}, कवीन्द्रचन्द्रिका, कवीन्द्रकल्पलता आदि कई ऐतिहासिक ग्रंथ प्राप्त हुए।

१३ देखें हमारा "बखतराम विरचित बुद्धिविलास" शीर्षक लेख जो कि जैन सिद्धान्त भास्वर वर्ष १४ अङ्क १ में प्रकाशित है।

१४ देखिये उसी पत्रके वर्ष १२ अङ्क २ में प्रकाशित हमारा "ब्रह्म गुलाल चरित" नामक लेख।

१५ देखिये "भावदेवसूरि और लाहोरके छलतान सम्यन्धी विशेष ज्ञातव्य" नामक हमारा लेख जो कि इसी पत्रके वर्ष १४ अङ्क २ में प्रकाशित है।

१६ लगभग ३५० अज्ञात ग्रन्थोंका विवरण संग्रह किया गया है जिनमेंसे १८३ ग्रन्थोंका विवरण हिन्दी विद्यपीठसे प्रकाशित "राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रंथोंकी खोज" द्वितीय भागमें प्रकाशित हो चुका है, अवशेष तीसरे भागमें प्रकाशित होनेवाले हैं।

१७ इसका सम्पादन स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजीकेतत्त्वावधानमें श्री महतायचन्द्र सारेड्ढने किया था पर पुरोहितजीके स्वर्गवासी हो जानेसे वह अब तक अप्रकाशित पड़ा है।

१८ कवि कुम्भकरण विरचित इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थका प्रकाशन ऐतिहासिक टिप्पणके साथ सीतामऊके राजकुमार डा० रघुवीरसिंहजी शीघ्र ही करनेवाले हैं। जिसका सम्पादन कार्य बीकानेर में श्री काशीराम शर्मा कर रहे हैं।

१९ इसमें बल्लभ सम्प्रदायके गोकलेशजीके विवाहका वर्णन कवि जगतानन्दने किया है। इस कविके बल्लभ वंशावली आदि अन्य समस्त ग्रन्थ विद्या विभाग, काँकरोलीसे जगतानन्द नामक संग्रहमें प्रकाशित हैं।

कायमरासो^{२०}, अष्टपर्खा की पैही^{२१}, अमर वत्तीसी^{२२}, परमारवश दर्पण^{२३}, जहाँ-
गीर यश चन्द्रिका^{२४}, भावदेवसूरि रास, नगर वर्णनात्मक पचास गजल^{२५}, आदि
बहुतसे ग्रन्थ हमारे समक्ष भी हैं। दिन्डी राजवशावली स्थानीय वृहद् ज्ञानभण्डार
में एव श्रीयुक्त मोतीचदजी खजाचीके समक्ष प्रतापगढ राज्य सम्बन्धी एक ऐतिहा-
सिक काव्यकी अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई है। जैसे हिन्दीके अनेक ग्रन्थोंके प्रारम्भमें कवियोंने
अपने आश्रयदाताओंका एव अपना परिचय दिया^{२६} है उनसे भी कुछ ऐतिहासिक
तथ्य प्रकाशमें आते हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ "जसयत उद्योत" जोधपुरके राठौड़ोंके इतिहाससे सम्बन्धित है।
ग्रन्थके अन्तमें दिये हुए पद्यमें कविने सूर्यवशी वृहद्बाहु तक की वशावली विष्णु
पुराणसे एव उसके परवर्ती ६० राजाओंका विवरण लोककथाके आधारसे दिये
जानेका उल्लेख किया है। माननीय ओझाजीके मतानुसार सीहाके पिता सेतराम
से परवर्ती राजाओंके नामादि तो इतिहाससे बहुत कुछ समर्थित हैं पर जयचन्द्र
गाहड़वालके साथ उनका सम्बन्ध जोड़ना स्पष्ट भूल है, जय कि ५० त्रिवेश्वरनाथ
रंज गाहड़वाल व राठौड़ोंका एक ही वंश मानकर इरे ठीक समझते हैं।

जसयत उद्योतके प्रारम्भमें इसका रचनाकाल सं० १७०५ आषाढ़ शुक्ल ३

२० इसका ऐतिहासिक सार हिन्दुस्तानी पृ० १५ अङ्कमें हम प्रकाशित कर चुके हैं। नागरी
प्रचारिणी मभाकी ओरसे इसे दीर्घ प्रकाशित करनेकी योजना है।

२१ हिन्दुस्तानी पृ० १६ अङ्क ४ में इसे प्रकाशित कर दी गयी है।

२२ भारतीय विद्या पृ० २ अङ्क १ में हमारे "राठौड़ अमरवत्तीसी सम्बन्धी दो ऐतिहासिक
रचनाएँ" छेपमें प्रकाशित।

२३ श्रीकानेरकी व्यासक उपसिद्ध लेखक सिद्धायच दयालदासकी यह रचना है। राजस्थानमें
हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज, द्वितीय भागमें इसका विवरण प्रकाशित है।

२४ उपसिद्ध कवि जेठवशावलीके सं० १६६६ में रचित है जिसे प्रकाशित करना आवश्यक है।

२५ कतिपय नगर वर्णनात्मक गजलोंको "हिन्दी पद्य समग्र"के नामसे मुनि कान्तिदासजीने
प्रकाशित की है। ३२ गजलोंका विवरण राजस्थान में हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी
खोज भाग २ में प्रकाशित है।

२६ हेतिये कतिपय हिन्दी कवियोंका "वंश परिचय" नामक हमारा छेप (मनभारती वर्ष ४
अङ्क ५) एव नागरी प्रचारिणी पत्रिका पृ० ५० अङ्क ३ ४ में प्रकाशित प्रकाशित काव्यमं

दिया है पर इस ग्रन्थमें सं० १७०७ के कार्तिकमें हुई पीहकरण विजय तकका वृत्त पाया जाता है अतः प्रस्तुत ग्रन्थकी रचनाका प्रारम्भ सं० १७०५ में होकर १७०८के करीब परिसमाप्ति हुई समझनी चाहिये क्योंकि इसके पीछेको कोई वृत्तान्त इस काव्य में नहीं पाया जाता। जोधपुरके राजवंशमें महाराजा जसवंतसिंह वड़े साहित्यप्रेमी, विद्वान एवं प्रतापी राजा हुए हैं। कवि उनके आश्रयमें ही रहता था और कई वर्षों तक साथ रहनेके कारण उसे राठौड़ोंके इतिहासकी अच्छी जानकारी हो गयी थी। फलतः उसने कई स्थानोंमें राठौड़ वंशके प्रधान पुरखाओंसे चली शाखाओंका व उनके विशिष्ट व्यक्तियोंका महत्वपूर्ण निर्देश किया है। मुहणोत नैणसीकी ख्यात से भी प्रस्तुत ग्रन्थ प्राचीन एवं महाराजा जसवंतसिंहकी विद्यमानतामें रचा होनेसे इसका ऐतिहासिक महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

जिस^{२०} प्रतिके आधारसे प्रस्तुत ग्रन्थका सम्पादन किया गया है वह वीकानेर राज्यकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें उपलब्ध है। इस लाइब्रेरीके पूर्ववर्ती सूचीपत्रमें इसका उल्लेख नहीं था पर डा० एल० पी० टैसीटरीने इसे अवलोकन किया प्रतीत होता है। संभवतः कलकत्तेकी एशियाटिक सोसाइटीके संग्रहमें जो इसकी प्रतिलिपि प्राप्त है वह इसी प्रतिसे नकल करवाके उन्होंने भेजी होगी। पाठकोंको यह जानकर आश्चर्य होगा कि प्रस्तुतः ग्रंथके जोधपुरके इतिहाससे सम्बन्धित होनेपर भी वहाँकी राजकीय सुमेर लाइब्रेरी आदिमें भी इसकी अन्य प्रति प्राप्त नहीं है। दूसरी प्रतिकी अनुपलब्धिके कारण प्रस्तुत ग्रंथमें कई स्थानोंमें त्रुटित अंश एवं छन्द भंग रह गये हैं जिनकी^{२०} पूर्ति नहीं की जा सकी फिर भी प्राप्त प्रति सुत्राच्य एवं शुद्ध है। हमारा

२७ प्रस्तुत प्रति पुस्तकाकार ६।।X ६" साइज की है। इसकी पत्र संख्या ४० है प्रत्येक पृष्ठमें पंक्ति २७ से २६ एव प्रति पंक्ति अक्षर २० से २४ लिखे गये हैं। १९४१ के मार्गशीर्ष कृष्ण १४ भोमवारको मंडतामें ब्राह्मण चूरा महोदयके लिखित है। इस ग्रन्थका सर्वप्रथम परिचय से ऐ० सारके हाथ हिन्दुस्तानी वर्ष १६ अंक ३ में प्रकाशित किया गया था तत्पश्चात् हिन्दी विद्यापीठ उदयपुरसे प्रकाशित राजस्थानमें हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज द्वितीय भागमें विवरण प्रकाशित हुआ है।

२८ यथा—पद्यांक २ में १ पंक्ति व पद्यांक ३५६-४०६ में पाठ त्रुटित है। पृ० ५८ में पद्यांक ६२-६३ के बीचमें १ पद्य और होना चाहिये जिसमें २३ वें पुत्र खेतका उल्लेख है। पृ० ७० के पद्यांक ४ में पृष्ठ ७४ पद्यांक ३०-३१ में, पृष्ठ ७५ के पद्यांक ३७ में १ पंक्ति त्रुटित है।

प्रिचार परिशिष्टमें जोधपुर राज्य सम्बन्धी अन्य महत्त्वपूर्ण स्यार्तोंके उद्धरण आदिको देकर इस ग्रन्थको विशेष उपयोगी बनानेका था। पर वैसे करने से प्रकाशनमें बहुत विलम्ब होता। इधर लाइब्रेरीके अधिकारियोंकी ओरसे इसे शीघ्र प्रकाशित कर देने की सूचना मिलती रही अतः इसे काव्यके ऐतिहासिकसारके साथ ही प्रकाशित करके सन्तोष मानना पड़ता है।

प्रस्तुत ग्रन्थके सम्पादन व प्रकाशनमें श्री अनूप संस्कृत लाइब्रेरीके क्यूरेटर श्री माधवकृष्ण शर्मा एव प्रो० नरोत्तमदासजी स्वामीका सहयोग बल्लेखनीय है। डा० दशरथजीशर्माने सदाकी भाति उचित परामर्श एव 'दो शब्द' लेखनादि द्वारा प्रेम और सौजन्यका परिचय दिया है। अपने सहयोगी भ्रातृ पुत्र भँवरलाल नाहटाका तो प्रत्येक कार्यमें पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ ही है। पर उसके लिए कृतज्ञताज्ञापन कर उसके महत्त्वको कम करना नहीं चाहता। ग्रन्थ संपादनकी स्वीकृतिके लिये वीकानेर के भू-पूर्व प्रधान मंत्री श्री कवलम माधवजी पणिकर महोदयका मैं सविशेष आभारी हूँ। समयमाघसे जैसा चाहिये, संपादन नहीं हो सका इसके लिये पाठकोंसे क्षमा मागते हुए अपना चकन्व्य समाप्त करता हूँ।

कलकत्ता
अक्षयतृतीया
स० २००६

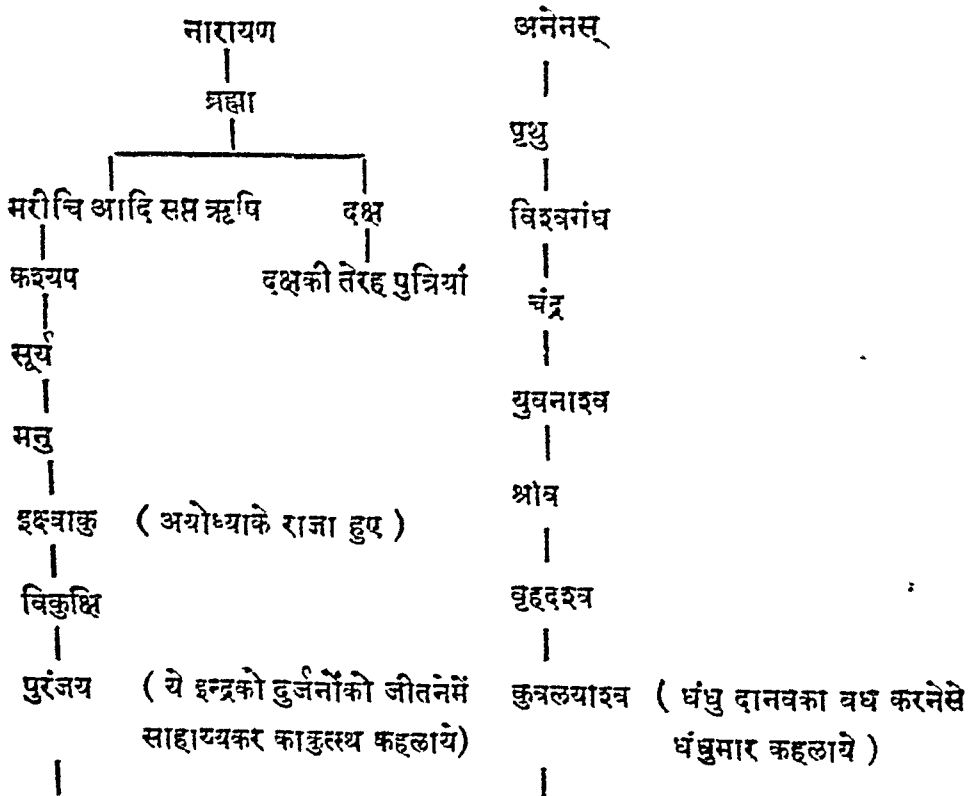
}

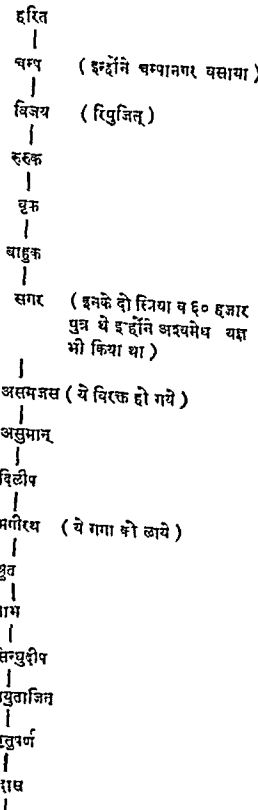
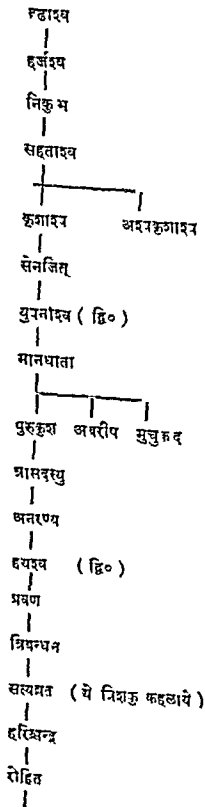
अगरचन्द नाहटा

जसवन्त उद्योत का ऐतिहासिक सार

संगलाचरणमें गणेश, शारदा एवं शिव की स्तुति करते हुए कविने अपना वंश-परिचय दिया है—सुरसरीके तटस्थ अकबरपुरमें माथुर दीप मिश्र निवास करते थे इन्होंने नृपति रामके यहां कुछ दिन रहकर उन्हें पढ़ाया। इनके पुत्र शिवरामके पुत्र तुलसीराम हुए जो कि कवि दलपति मिश्रके पिता थे। सं० १७०५ आगढ़ शुक्रा ३ को जहानावादमें कविने प्रस्तुत ग्रंथकी रचना आरम्भ की। यहीं महाराजा जसवन्तसिंहसे कविका साक्षात्कार हुआ था।

परवर्ती चार सर्वैयोंमें सम्राट शाहजहाँ और शाहजहानावादका वर्णन करते हुए नारायण व उसके दशावतार—भीम, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्किका एक-एक पद्यमें वर्णन कर राठौड़ोंकी वंशावली इस प्रकार दी है :—





मिश्रसह

|

अश्मक

|

मूचक

|

एलविल्ह

|

विश्वसह

|

दिलीप (द्वि०)

|

रघु (इन्द्रसे युद्ध कर दिग्विजयी हुए)

|

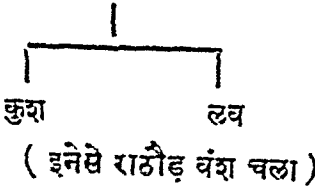
अज

|

दशरथ

|

राम (पचास ७७ से ३२२ तक
रामायण की कथा दी है)



|

अतिथि

|

निषध

|

नल

|

नभ

|

पुण्डरीक

|

क्षेमधन्वा

|

देवानीक

|

अहिनग

|

पारियात्र

|

दञ्ज

|

शस्य

|

उन्नाभ

|

वज्रनाभ

|

खंडूण

|

विश्रुताश्व

|

विश्वसह

|

हिरण्यनाभ

|

पुष्प

|

शुभसिन्धु

|

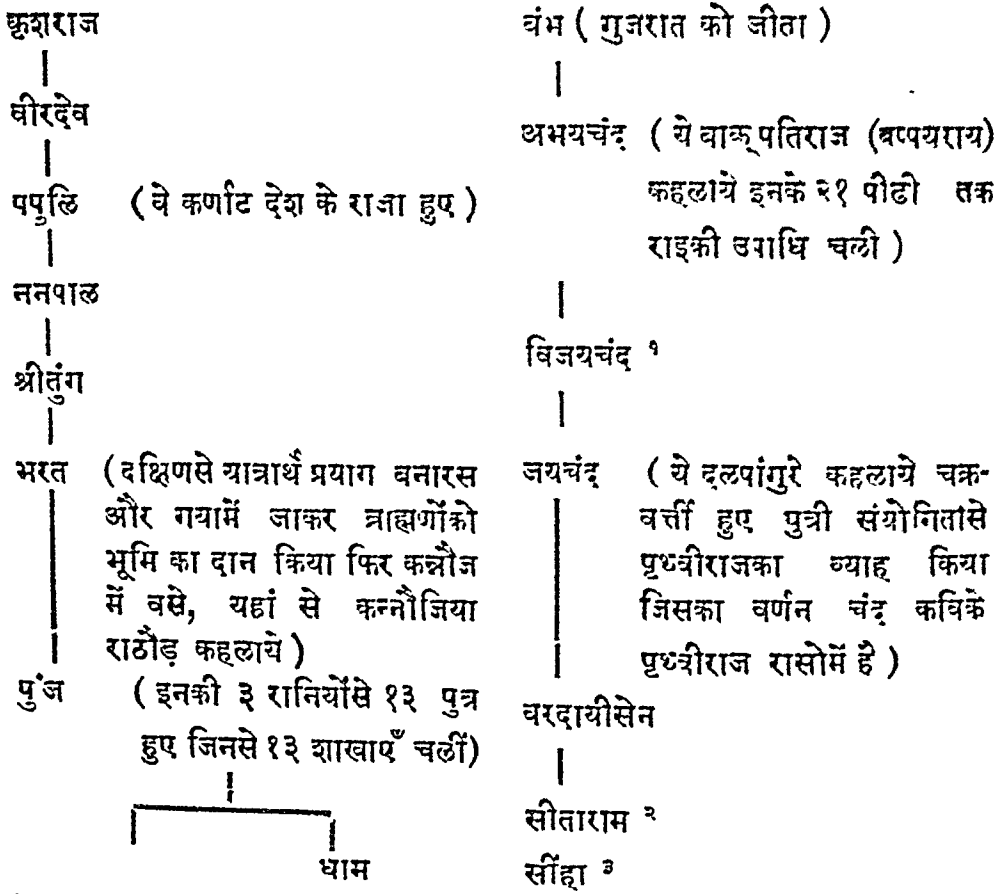
सुदर्शन

|

अग्निवर्ण

|

शीघ्र (गर्भमें ही राज्याभिषेक हुआ)	सुमित्राजित
मरु (योगीदर, तद्विराश्रममें अवस्थित)	इक्ष्वाकु
प्रतिश्रुत	विभीषण
सुमन्त्रिन्	अश्वसेन
सहस्रवान्	वर्षप (यारीपप)
विश्रुतमान्	कीर्त्तिरमा
वृहद्बल (महाभारत युद्धमें अभिमन्यू के साथ लड़े)	त्रिपाण्डुविजय
विश्वंभर	कणसेन
वृहद्ब्याहु	काकलदेव
वृहच्छत्र	अग्निरव
पात्र	जज्ञकपल
वस्तुमित्र	गोप गोविन्द
दिवाकर	रोमसेन (इनमें ९ पीढ़ी तक राना कहलायें)
सहस्रेष	वीरयिपुत्र
सोमउग्र	असुसेन
अतरिक्ष	वीरजषात
सुधाण	धरराज



- १ ताम्रपत्र एवं शिलालेखोंमें इनके पिताका नाम गोविन्दचन्द्र मिलता है पर यहां अभयचन्द्र पाया जाता है। वस्तुतः इनसे पहलेकी नामावली इतिहाससे समर्थित नहीं है इस विषयमें जोधपुर राज्यके इतिहास (ओझाजी) के पृ० १३६ में प्रकाशित तुलनात्मक नामोंकी तालिका देखनी चाहिए। राठौड़ वंशावलीमें केवल विजयचन्द्र और जयचन्द्र ये दो नाम ही इतिहाससे मेल खाते हैं। जयचन्द्रके पुत्रका नाम इस ग्रन्थमें वरदायीसेन है जब कि ताम्रपत्रादिमें हरिश्चन्द्र मिलता है। विजयचन्द्र और जयचन्द्र गाहड़वाल वंशीय और कन्नौजके शासक रूपमें प्रसिद्ध हैं। राठौड़ोंका राज्य भी वहीं कहीं आस-पासमें रहा होगा। वंशावली लेखकोंने ये दो प्रसिद्ध नाम बीचमें देकर असली राठौड़ वंशावली को विकृत कर दिया मालूम होता है।
- २ सींहाके स्मारक शिलालेखमें इनका नाम सेतकंवर मिलता है इससे ये राज्याधिकारी नहीं हुए प्रतीत होते हैं।
- ३ वंशावलियोंमें इसका समय स० १२१२ के लगभग बतलाया है पर वह कल्पित है। स्मारक लेखसे सींहाजीकी मृत्यु सं० १३३० कार्तिक कृष्ण १२ सोमवार को हुई, निश्चित है। जोधपुरके राठौड़ राज्यकी स्थापना वराजाओंके निश्चित समयकी उपलब्धि यहींसे होती है। स्मारक लेख द्वारा सींहाजी सम्यन्धी ख्यातमें उल्लिखित सींहाजीका सिद्धराज

सींहाजीने कन्नौजसे द्वारिका यात्रार्थ प्रयाण किया। पहले मथुराकी यात्राकरे वहकि माथुरोंको दान दिया, जगदीशजी व वेशनरायजीके मन्दिरोंकी पूजा की, गोकुल यात्रा करके द्वारिका पहुंचे वहा रणछोड़जीके दर्शन किये। द्वारिकासे लौटते समय सोलकी सिद्धराज जयसिंहसे मिले। जयसिंहने अपने शत्रु लाखा कूलाणीको मारने के लिए इनसे अनुगोध किया तत्र आपने ८० कोश जाकर उस जाड़ेचा राजाको मारा सोलकीने इससे रागुष्ट होकर सींहाको अपनी पुत्री व्याही व मारवाड़का देश वहेज में दिया। तबसे सींहाकी मारवाड़के अधिपति होकर वहीं रहने लगे।

राज सींहाके तीन पुत्र थे आस्थान, ४ अज और सोनिग। इनमें अज द्वारिकाके राजा हुए जिनके वंशज बाढेठ राठौड़ कहलाते हैं। सोनिगने ईडरको विजय की उनके वंशज ईडरिया राठौड़ कहलाये। आस्थानने अपने भुजबलसे खेड़नगरका राज्य प्राप्त किया वके वंशज खेड़ेचा कहलाते हैं।

आस्थानके पुत्र दूहड़ ५ हुए, इन्होंने कर्णाट देशसे अपनी कुलदेवी चमेश्वरीको लाकर मारवाड़के नागाणे गावमें स्थापित की। तबसे उस देवीका नाम नागणेचिया ६ प्रसिद्ध हुआ। दूहड़के पुत्र राजपाल हुए जो महीरेलन कहलाये। आपने एक यदुवशी चदा राजपूतको सर्वस्व दान देकर अपना याचक बनाया। चन्दाके वंशज रोहड़िया कारण कहलाये।

राजपालके पुत्र कान्हड़ और उनके पुत्र जासूण हुए। एक बार राज जासूण शिकार खेलने गये वहां कुछ दूर वृक्षकी बेलकी देखाकर कहा कि इसके फल कोई न तोड़े पर उनकी आज्ञाका पालनकर समरकोटके परमार सोढान ७ एक फल तोड़

जयसिंहसे मिलना, लाखा कूलाणी को मारना, सिद्धराज जयसिंहकी पुत्रीसे विवाह, मारवाड़ राज्य प्राप्ति आदि सभी बातें इतिहास विरुद्ध हैं क्योंकि लाखाकूलाणी, और जयसिंहका समय इससे बहुत पूर्ववर्ती है। सींहाजीके मारवाड़ राज्यप्राप्ति सम्बन्धी पद्यातोंके भिन्न २ मतोंके विषयमें जोधपुर राज्यका इतिहास देखना चाहिए।

४ पद्यातोंमें इनका जन्म सं० १२१८ कार्तिक वदि १४ शुक्लवारमें हुआ लिखा है पर यह कल्पित है। भोजपुरी क मतानुसार इनका राज्यकाल सं० १३२० से १३४८ तक है।

५ इनके सं० १३६६ के स्मारक लेखमें इनका नाम धूहड़ लिखा है।

६ भोजपुरीके निर्द्वानुसार मूल नागाणा ग्राम पंचमश्रा जिलेमें अवस्थित है। इस देवीका मन्दिर अभी बीकानेरके १ मील नागाणेची स्थानमें है।

७ जोधपुरकी पद्यातके अनुसार सोढाने जिस वृक्षका फल तोड़ा था वह चानाणी गांवका प्रसिद्ध प्रास भमारवृक्ष था। सोढाके स्वामी का नाम गांगा पाया जाता है।

हाला इससे क्रुद्ध हो जासकने उसका डेरा लूट लिया एवं उसे दण्डित किया इससे सोडाके वंशज डंडेल कहलाये ।

राठ जालोरणके पुत्र छाड़ा हुए, उनके तीटा व तीटाके सलवा हुए जिन्होंने संग्राममें जालोरपति पर विजय प्राप्त की^८ ।

सलवाके चार पुत्र थे । राउमालहा, जयतमाल, वीरम और शोभित । इनमेंसे राठ मालहा बड़े प्रनापी हुए, जिन्होंने दिह्रीपति तैमूरलङ्ग व गर्जराधिराजिको परास्त किया शोभितने सिन्धुपतिकी सेवा की और गाथोंके वचनके हेतु संग्राममें अपने प्राण दिये^९ ।

रात्र वीरमके पांच पुत्र, १ राठ चौंटा २ गोंगा ३ देवराज ४ जेसंग ५ बीजा थे । इनमेंसे चौंटाके वंशज महाराजा जसवंतसिंह हुए । गोंगाके वंशज गोना राजपूत व देवराजके वंशज देवराजोन कहलाये । रात्र चौंटा बड़े प्रनापी हुए, इन्होंने अपने बाहुबलसे मण्डोवर व नागौरको अपने आधीन किया ।

राठ चौंटाके १२ पुत्र^{१०} थे । १ पूता २ सत्ता ३ सहस्रमल ४ वीरू ५ रिणमल ६ रावत ७ कान्ह ८ भीम ९ शिवराज १० लोभा ११ विजड १२ रामदे । इनमें रात्र रणमल^{११} राठ्याधिकारी हुए, इन्होंने अपने शत्रु १६० जालौरियोंको कुंएमें डुबा दिया । पीरोखान पठानको पराजित किया, महमदखानको मारा^{१२} । जेसलमेर नरेशने इनसे पराजित होकर अपने भाट द्वारा अभयकी याचना की । राव रणमलके २४ पुत्र थे जिनसे उनका वंश खूब विस्तृत हुआ ।

१ राव जोधा २ मण्डण (इनके वंशज मण्डणोत कहाये), ३ अखैराज (इनके वंशमें कूपा और जयता हुए, कूपाके वंशज कूपावत हैं जिनमें नाहरख्वा प्रसिद्ध है, उसपर महाराजा जसवंतसिंह की कृपा है), ४ नाथा (नाथावतोंके पूर्वज), ५

८ जालोरपतिके नामका वहां निर्देश नहीं है न अन्य ख्यातोंमें ही । अनुसन्धान आवश्यक है ।

९ इसके हमलेका समय सं० १४५५ के लगभग है ।

१० जोधपुरकी ख्यातके अनुसार इनके १४ पुत्र व १ पुत्री थी । इनके मगदोवर अधिकृत करनेका ओझाजीके और नागौरका रेऊजी के इतिहास से समर्थन होता है ।

११ जोधपुरके इतिहासके अनुसार चौंटाके उत्तराधिकारी कान्हा और उसके बाद सत्ता हुआ यहाँ इन दोनोंका उल्लेख न कर चौंटाके वा३ सोधा रणमल लिखा है । सम्भवतः कान्हा और सत्ताके अल्पकाल शासन करनेके कारण दलपति ने उनका उल्लेख नहीं किया हो ।

१२ जोधपुरके इतिहास ग्रन्थोंमें जालोरके इसनखानके इनसे सन्धि करने व मांडूके महमुद को हरानेका उल्लेख पाया जाता है ।

द्वार (द्वारोत्तोंके पूज), ६ कर्ण (करणोत्तोंके पूज), ७ रूपा (रूपान्तोंके पूज) ८ चापा (इनके वशन चापावत कहलाये जिनम विद्वत्दास प्रसिद्ध हैं) पाता (पातान्तोंके पूज) १० गाला (गालान्तोंके पूज) ११ काँवल (कधलोत्तोंके, पूज) १२ सायर (लघुवयमें फालप्राप्त) १३ लखा १४ हापा १५ मडला १६ वीरू १७ साडो १८ ऊनरा १९ ऊधो २० शत्रुसल्ल २१ वहरो २२ जयतमाल २३ गेता (इनके वशमें गेतस्योत राठौड) २४ भाखर ।

राव रणमलके समय चित्तौड़के राणा लाखा और सेना दो भ्राता थे। इनमें से लाखाको रणमलकी बहिन हसाराई व्याही थी। ऐतोंने एक रूपवती बढइनसे अपना सम्बन्ध जोडा। राणा लाखाके पुत्र मोकल हुए, ऐताके बढइनसे चाचा और मेरा जन्मे। चाचा मेराने राज्यलोभसे मोकलको मारकर मेराड अपने वशनर्त्ती कर लिया। चित्तौड़का यह वृत्तान्त सुनकर भानजेका बदला लेने राव रणमल चित्तौड़ गये और मोकलके पुत्र कुभोको सहायता दी, इन्होंने चाचा और मेराको पहाडों में भगा दिया व उनकी कन्याए राठौटीको व्याह दी। राणा कुभाने कुमतिपश अपने उपकारी रणमलको रात्रिमें निश्चिन्त सोते हुए मार डाला।

राव रणमलके ज्येष्ठ पुत्र राव जोधा^{१३} का जन्म स० १४७२ के वैशाख मासमें हुआ जोधाने पिताका बदला लेनेके लिए चित्तौड़ पर चढ़ाई की और राणा कुभाको विचलित करके भगा दिया। वहाँसे निरुद्ध कर स० १५१५ में जोधपुर बसाया।

एक बार राव जोधा पिताके पिण्डदानके हेतु गया जा रहे थे वहाँ जौनपुराधीश ने दो मजिद साथ जाकर उनसे दिल्लीपतिसे अपने प्राण दिलानेके लिए प्रार्थना की। उसकी प्रार्थनासे जोधाने उसे बहलोलखों लोवी द्वारा जौनपुर घेरने पर रणक्षेत्रमें

१३ रेडजीक इतिहासमें इनका जन्म स० १४७२ वैशाख यदि ४ लिखा है एवं जोधपुर दुर्गकी स्थापना स० १५१६ जेठ शुक्र ११ रानिवार को करनेका उल्लेख है। रेडजीके अनुसार जाधाजी का राज्याभिषेक स० १५१५ में हुआ था। वास्तवमें नगर निमाण इसके पश्चात् ही सम्भव है। रेडजीने राठौड़ कणक द्वारा भागरेमें बहलोलखा से मिलकर जोधाजीक पात्रियोंका कर चुकानेका उल्लेख किया है। उन्होंने जौनपुरके घासक हुसेनशाहको दायुर्भों पर विजय पानेमें सहायता वाक्य की थी पर वह दिल्लीपतिके विरुद्ध की हुई छद्म में ही यह उल्लेख ठोक नहीं मालूम होता इस प्रपमें जोधाक १४ पुत्रोंका उल्लेख है तब रेडजीने २० और भोक्राजीने १४, १७, १९ पुत्र होनेका उल्लेख किया है। हमारे खयालसे दलपतिके कथन विशेष ग्राह्य है। जोधाजीके सारगर्हा को मारनेका समथन गजसोकी कथा से भा जाता है।

सहायता दी। जिससे दिग्दर्शीपतिको भागजाना पड़ा। अत्रुके धाता सारंगरौ को इन्होंने दुद्रुमें मारा।

राव जीवाके १४ पुत्र थे १ सूजा, २ सातल ३ वीका ४ दूदा ५ राटपाल ६ करमसी ७ वणशीर ८ शिवराज ९ लीवा १० वीदा ११ सामन्तसिंह १२ भारमल १३ नरसिंह १४ जोगा इनमेंसे राव वीकाने वीकानेर वमाया जिनके वंशज महाराजा कर्णसिंह हैं। दूदा मंडूतामें रहने लगे जिनके वंशज मेढुनिया राठौड़ कहलाये (जिनमें अभी सुन्दरदासका पुत्र गोपाल व वीर विहारीदासका पुत्र बनगालीदान प्रसिद्ध योद्धा हैं सुन्दरदासका पुत्र गोकुल और रामदासका पुत्र जगतसिंह भी इस वंशके उल्लेखनीय व्यक्ति हैं)। राटसिंहका पुत्र शीलनिधि दाता और शूरवीर है। राटपाल और करमसी लीवसर ग्राममें रहने लगे कर्मसीके वंशज करमस्योन पीवाड़में प्रसिद्ध हैं। दूणाड़में शिवराज और सावंतसिंह टांवरमें रहने लगे भारमलने वीलाड़में अत्रुको जीता जिनके वंशज पृथ्वीराज बलोन प्रसिद्ध हैं।

राव जीवा चिरकाल राज्य कर सं० १५४५ में स्वर्गवासी हुये इनके पीछे सातलने दो तीन वर्ष राज्य किया इनके बाद राव सूजा गद्दी पर बैठे जिनका जन्म सं० १४९६ भादवामें व राज्याभिषेक सं० १५४८ में हुआ जिनके ८ पुत्र^{१५} थे इनमें १ बाबाका जन्म सं० १५१४ में व स्वर्गवास सं० १५७१ में कुंवर पदमें ही हो गया दूसरे पुत्र शेखा ३ ऊदा ४ देवीदास, ५ प्राग, ६ सांगा, ७ नरो, ८ तिलोकसी थे। राव सूजा ने २४ वर्ष राज्य कर सं० १५७२ में कालधर्म प्राप्त किया। इनके ज्येष्ठ पुत्र राव बाबा के ५ पुत्र हुए १ गांगा, २ वीरमदे ३ जयतसी ४ खेतसी ५ प्रतापसी। इनमेंसे पिता के कुंवर पदमें मरजानेसे गांगा गद्दीके अधिकारी हुए। इनका जन्म सं० १५४० के वसंतमें व राज्याभिषेक सं० १५७२ में हुआ। इन्होंने दौलतखां^{१६} की फौजको विचलित कर उसकी सेनाके हाथीको मारा। राव गांगा १६ वर्ष राज्य कर सं० १५७८ में स्वर्गवासी हुये। इनके ६ पुत्र थे—१ मालदेव २ मानसिंह ३ कृष्णदास ४ कान्हू ५ तेजसी ६ बैरसह। इनमेंसे मालदेव राज्याधिकारी हुए इनकी सेनामें ८०००० घोड़े थे।

मालदेवका जन्म सं० १५६८ में और सं० १५७८ में राज्याभिषेक हुआ। इन्होंने

१४ रेकजीने अपने इतिहासमें इनके १० पुत्रों के नाम दिये हैं।

१५ रेकजीके इतिहासमें दूधे नागौरको शासक बतलाया है।

मारवाड़ राज्यको खूब बढ़ाया । इनके वंशजर्त्ती कतिपय स्थानों^१ के नाम दिये जाते हैं—१ सोनत २ सांभर ३ मेड़ता ४ खाटू ५ बधनौर ६ लाहणू ७ राइपुर ८ भाद्राजन ९ नागौर १० सिजाणागढ ११ लोहगढ १२ जयपल १३ बीकानेर १३ भीनमाल १५ पोहकरण १६ छाहड़ १७ वाहड़मेर १८ रैवासा १९ फासली २० जोनावर २१ जालोर २२ कुभलमेर २३ नाहल २४ फलोधी २५ साचौर २६ डिडराणा २७ चाटसू २८ फनैपुर २९ चित्तौड़ ३० अमरसर ३१ कोटरा ३२ सामड़गांव ३३ खायडि ३४ वनवीरपुर २६ टूक ३६ टोडौ ३७ अजमेरगढ इन सब स्थानोंको जीत कर उमरावोंको जागीरें बांट ली । जाजपुर और उदयपुरको भी उन्होंने जीता और राणाको जगलोंम भगा दिया था । मडोरराधिपति मालदेवने ननिहाल सीरोही दशक्री काण रसी, अर्थात् उम पर चढ़ाई नहीं की ।

राव मालदेवके ८ पुत्र^{१०} हुए यथा—१ राम २ उदयसिंह ३ चन्द्रसेन ४ भोजराज ५ रत्नसी ६ राहमल ७ विहमादित्य ८ भाण । राव मालदेवने ब्येष्ट पुत्र रामकी विधमानता में भी चन्द्रसेनको राज्य दिया जिससे राम असंतुष्ट होकर राणाके पास चला गया द्वितीय पुत्र उदयसिंह दिल्लीपतिकी सेवा करने चला गया । कुछ समय बाद मालदेवके स्वर्गयासी होने पर राम और उदयसिंहने मौका पाकर दोनों ओरसे चन्द्रसेनको घेर लिया । चन्द्रसेनने अत्रसरोचित रामको सोजत देकर मेल कर लिया अत उदयसिंहसे चन्द्रसेनका भयकर युद्ध हुआ पर उदयसिंहको सफलता नहीं मिल सकी ।

रामके ७ पुत्र थे १ राव पूर्णमल २ वर्ण ३ कलाराय ४ भूपति ५ केशव ६ नारायण ७ राघवदाम । इनमें केशवको दिल्लीशने चोल देशमें मैसूरका शासक बनाया । अब भी उनके वंशज दक्षिणमें प्रसिद्ध हैं ।

चन्द्रसेनके ३ पुत्र हुए १ उमसेन २ आसकरण ३ राइसिंह । इनमेंसे चन्द्रसेनने आसकरणको राज्य दिया पर वह अल्पकाल राज्य करने पर उमसेनकी फटारीसे मारा गया । यह देग आसकरणके खयास चौधरिया राठीउने उमसेनका भी काम समाप्त कर डाला । मौका पाकर (मालदेवके पुत्र) उदयसिंहने सम्राट अकबरसे मारवाड़का राज्य स० १६४० में प्राप्त कर लिया । उदयसिंह शरीरसे बड़े स्थूल थे और राज्य भी बढ़ा मिल गया अत अकबर इन्हें मोटे राजा नामसे सम्बोधित करता था ।

१६ रेक्रीने ५८ परगनोंके नाम दिये हैं ।

१७ रेक्रीने इतिहास में २२ पुर्योंका दल्लेख है ।

चन्द्रसेनके तीसरे पुत्र राउसिंह १८ को सीरोही नरेशने मार डाला था। एक दिन उद्यसिंहको रणवासमें बैठे रायसिंहके बैरका बदला लेना स्मरण हो आया। इन्होंने सीरोही पर चढ़ाई कर दी। इनकी प्रबल सेनाके ममक्ष अर्जुदपतिको भाग जाना पड़ा। उद्यसिंहने वहाँ की अट्टालिकाओंको धराशायी कर चुतुर्दिक अपनी आज्ञा प्रसारित की। अन्तमें आवृपतिके दण्ड देना स्वीकार करने पर पुनः राज्य दे दिया।

उद्यसिंहके ११ पुत्र^{१९} थे यथा—१ सूर २ कृष्णसिंह (जिनके वंशज रूपसिंह प्रसिद्ध हैं) ३ सकतिसिंह ४ नरहरदास ५ अम्बरराज ६ भूपति ७ जैतसिंह ८ दलपति ९ मोहन १० माधव ११ भगवान। इनमेंसे सूरसिंह राज्याधिकारी हुए इनका जन्म २० सं० १६२८ राज्याभिषेक सं० १६५२ में हुआ सम्राट अकबरने इन्हें मारवाड़ का राजा स्वीकार किया। इन्होंने नृपनीतिसे राज्य किया, भाईकी अनीति देखकर उसका भी वध किया दक्षिणमें सूरसिंहने^{२०} गुजरातसे बहादुरशाहको निवाला बाहर किया व अकबरके निजामशाह के विरुद्ध भेजने पर वहाँ भी युद्धमें विजय प्राप्त की।

सूरसिंहकी २ राणियोंसे १ गजसिंह और २ सबलसिंह दो पुत्र हुए। २४ वर्ष पर्यन्त राज्यकर इनके स्वर्गवासी होनेपर सं० १६५२ में जन्मे हुए जेष्ठ पुत्र गजसिंह राज्याधिकारी हुए। इन्होंने जालोर पर चढ़ाईकर शत्रुको हराया। जहाँगीरकी आज्ञा से शाहजहाँसे युद्ध किया और भी जब २ दिल्लीपतिका आदेश मिला, शाहीसेनाका नेतृत्व कर शत्रुओंसे लोहा लेकर अपने वीरत्व का परिचय दिया।

महाराजा गजसिंहजीकी पट्टराज्ञी रुक्मावतीसे जसराज—जसवन्तसिंह एवं सोनगिरीकी कुश्वीसे अमरसिंह जन्मे। इनमेंसे अमरसिंहको ज्येष्ठ होने पर भी स्वयं महाराजाने राज्याधिकारसे वंचित कर दिया। अमरसिंह बड़े स्वाभिमानी

१८ सम्राट अकबरने सं० १६४० में चन्द्रसेनका राज्य उपसेन व आसकरणके सारे जाने पर उद्यसिंहको दिया ऐसा प्रस्तुतः ग्रन्थमें उल्लेख है पर रेडजीके अनुसार इतःपूर्व सं० १६३९ में रायसिंह जोधपुरके राजा हुए, सीरोहीके राज सुलतान से युद्ध करते समय मारे जानेके बाद उद्यसिंहको राज्य मिला। रायसिंहके अल्पकाल राजा रहनेके कारण दलपतिने उनका निर्देश नहीं किया।

१९ रेडजी के इतिहास में इनके १६ पुत्रोंका नाम दिया है।

२० रेडजीने इनका जन्म सं० १६२७ वैशाख कृष्ण १५ लिखा है, सम्भव है कि श्रावणादि वर्ष प्रारम्भके कारण यह अन्तर रहा हो।

२१ रेडजी के इतिहासमें इनका नाम किसनसिंह लिखा है। सं० १६७२ में अजमेर में ये मारे गये थे।

ये उर्होंने दरबारे ग्रासमें अनुचित कथनसे उत्तेजित होकर तत्काल एक ही कटारसे सलावतखाने को मार डाला^{२२} एवं स्वयं धीरगतिको प्राप्त हुए।

महाराजा गजसिंहके उत्तराधिकारी जसवंतसिंह हुए। इनका जन्म सं० १६८४^{२३} माघ (कृष्ण) ४ मध्याह्न अभिजित नक्षत्रमें बुरहानपुरमें हुआ था। सं० १६६५ की गृष्म ऋतु^{२४} के लगते ही महाराजा गजसिंह स्वर्गवासी हुए अतः सं० १६६५ मि० आपाद कृष्ण ७ शुक्रवारको सम्राट शाहजहानने जसवंतसिंहको राज्याभिषिक्त किया।

इसके पश्चात् कचिने वंशावलीके प्रधान नामों एवं घटनाओंको दुहराया है, तदनंतर महाराजा जसवंतसिंह का अलंकारिक वर्णन किया है। यहां केवल ऐतिहासिक बातोंका ही संक्षिप्त सार दिया जाता है।

शाहजहानने दरबारकी लड़ाई में जसवंतसिंह को अपने साथ रखा और उसने इनके रणकौशल से प्रसन्न होकर सं० १७०७ के चैत्रमें पोहकरणका पट्टा दिया। महाराजा पोहकरण पर अधिकार करनेके लिए स्वदेश लौटे और आश्विन शुद्ध ३ को पोहकरण के अधिकारी भाटी पर अपनी फौजे भेजी। ये सेना तीन भागोंमें विभाजित की गई— १ मेड़निया सुदरदासोत गोपालदास २ चापावत गोपालदासके पुत्र विट्ठलदास एवं ३ कृपावत राजसिंहोत नाहरदास इनके अध्यक्ष थे। इन तीनों हुजदारोंने तीनों ओरसे पोहकरण पर चढ़ाई की। संवरी प्रतापमल, भडारी जगन्नाथ, सुहणोत नेणसी और पचोली मदनदास इनके साथ थे। आश्विन शुद्ध १५ के दिन पोहकरण को चतुर्दिक घेर लिया गया। भाटियोंने इनकी शक्तिसे घबड़ा कर धर्मद्वार माग लिया। सं० १७०७ गिति कार्तिक कृष्ण ६ द्वाविघारके दिन यादव भाटियोंने पोहकरण छोड़ दी। चारह भाटी सरदारोंने युद्ध किया, अवशेषने सुहमें वृण धारण कर लिए। महाराजाने रामचन्द्र भाटीको स्वदेह कर सखलसिंह (राजल मालदेवके पुत्र) को सहायता दी^{२५}। कवि कहता है कि शाहजहानने इनकी बड़ी सराहना की और

२२ इन घटनाका प्रामाणिक वर्णन अमरपत्नीषी और अमरसिंहजी की बातमें विस्तार से पाया जाता है जो कि भारतीय विद्या उप० अ० १ में प्रकाशित है।

२३ रेकजी और भोकाजी ने जन्म सं० १६८३ लिखा है पर समकालीन होने से दृष्टव्यता कथन ठीक जँचता है।

२४ रेकजीने मितो ज्येष्ठ शुक्ला ३ को इका स्वर्गगाम लिखा है।

२५ रेकजी के इतिहासमें सखलसिंहको जेयलमेरका राज्य दिवाने रूप यह सहायता दी गयी लिखा है।

इनके पूवज उदयसिंह, सुरजसिंह और गजसिंह जितनी भूमि दखल न कर सके इन्होंने अपने अधीन कर सुयश फैलाया। महाराजा जसवन्तसिंहके ग्यारह पीढ़ियों से स्वामीभक्त पंचोली बल्लू और मोहनदास सरदार थे। इनमेंसे बल्लूको बुद्धिमान देखकर महाराजाने दीवान नियुक्त किया।

इसके पश्चात् कविने महाराजाके हाथी, घोड़े, नायिकाएं, वसन्त फागोत्सव एवं अन्तःपुरके सुख आदिके वर्णन करते हुए हाडी, कुगवाही, गौड़ी, यदुवंशी, चौहानी रानियोंका वर्णन किया है। प्रसंगवश नव रस शृंगारके सम्बन्धमें कविने अपने अन्य ग्रन्थ 'रस रत्नावली'का उल्लेख किया जो अब अप्राप्य है। अन्तमें कविने महाराजाके चिरंजीवि होनेकी शुभाशीष व्यक्त करते हुए लिखा है कि सम्राट अकबर ने गुणी जानकर वीरबल^{२६} विप्र कविको राजा बनाया एवं खानखाना^{२७} व गंगकवि^{२८}को प्रसिद्ध व सम्मानित किया। शाहजादेने हाथी, घोड़ा, स्वर्णदानसे गंगकविका वारिद्र दूर किया। शाहजहाँने सुन्दर कवि पर प्रसन्न होकर उसे महाकवि का विरुद दिया। बुन्देले राजा इन्द्रजितने केशवदास^{२९} का महत्त्व बढ़ाया राव शत्रु

२६ कविवर भूपणके उल्लेखानुसार ये त्रिविक्रमपुर (तिकवाँपुर) के निवासी थे। स्वर्गीय रामचन्द्र शुक्लने लिखा है कि इनके कुलका पता नहीं पर भूपण व दलपतिके कथनानुसार इनका ब्राह्मण होना निश्चित है। दलपतिने इन्हें सम्राट अकबरसे मिलनेके पूर्व गरीब लिखा है। प्रयागके किल्लेमें अवस्थित अशोक स्तम्भके लेखमें इन्हें गंगादासका पुत्र बतलाया है। इन्होंने सं० १६३२ में प्रयागकी यात्रा की थी। कुछ लोग इनकी जन्मभूमि नारनौल व मूल नाम महेशदास बतलाते हैं। भरतपुरमें आपके रचित बहुतसे कवित्तों का संग्रह विद्यमान है।

२७ स्वर्गीय रामचन्द्र शुक्लने लिखा है कि ये अकबरके दरबारी कवि थे और खानखाना अब्दुरहीम इन्हें बहुत मानते थे। कुछ लोग इन्हें ब्राह्मण कहते हैं पर अधिकतर ब्रह्मभट्ट होनेकी प्रसिद्धि है। कहा जाता है कि ये किसी नवाब या राजाकी आज्ञासे हाथीके पैरों तले कुचलवाये गये थे। प्रवाद है कि खानखाना ने एकवार इन्हें एक छप्पय पर छत्तीस लाख रुपये भेंट किये थे। आपके रचित कतिपय कवित्तोंका संग्रह स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी ने प्रकाशित करवाया था।

२८ इनका जन्म सं० १६१० व मृत्यु सं० १६८३ है। हिन्दी साहित्यमें ये बहुत प्रसिद्ध हैं आपके रचित दोहा, सतसई आदि ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

२९ इनका जन्म सं० १६१२ व मृत्यु सं० १६७४ के लगभग है। आपके छंदमालादि ग्रन्थोंके सम्बन्धमें हमारा एक लेख हिन्दुस्तालीमें प्रकाशित हुआ है।

सालने कनौजिया कवि केहरी^{३०} को कपीन्द्र पद देकर निहाल किया। वैसे ही महाराजा जसवंतसिंहके आश्रयमें आया हुआ कवि दलपति क्यों न निहाल होगा ? तदनन्तर कविने जसवंतउद्योत श्रवणका फल हरिवंश श्रवणके सदृश बतलाते हुए इसमें वर्णित पूर्ण घशावली विष्णुपुराण व पीठके ६० राजाओंकी वगावली जनश्रुति के आधारपर रचनेका सूचन कर ग्रन्थ समाप्त किया है।

कविने जसवंतउद्योत स० १७०८ के लगभग समाप्त कर दिया था। इसके पश्चात् भी महाराजा जसवंतसिंहने बहुत वर्ष राज्य किया। ये सफल शासक होनेके साथ साथ साहित्य मर्मज्ञ और वेदान्तके विद्वान थे। आपके रचित भाषा-भूषण ग्रन्थने हिन्दी साहित्यमें बड़ा आदर पाया, इस पर तीन चार टीकाएँ भी परवर्ती विद्वानोंने निर्मित की हैं। अलंकारके विषयमें एक छोटेसे ग्रन्थमें बहुत ही सुन्दरतासे प्रकाश डाला गया है। आपके अन्य ग्रन्थोंमें आनन्दविलास, अनुभवप्रकाश, अपरोक्षसिद्धान्त, सिद्धांतमोक्ष, सिद्धांतसार, प्रबोधचन्द्रोदय अनुवाद—चन्द्रबोध, पूली जसवंत सवाद, फुटकर दोहे, आनन्दविलास (संस्कृत पद्यमें) और गीता भाषा टीकादि उल्लेखनीय हैं। आनन्दविलास आदि वेदान्त विषयक ५ ग्रन्थ गवर्नमेण्ट प्रेस जोधपुर एवं भोपाभूषण नागरी प्रचारिणी सभासे प्रकाशित हो चुके हैं। आपके कतिपय ग्रन्थोंकी हस्तलिखित प्रतियाँ हमारे संग्रहमें भी हैं। गीता भाषा टीकाकी प्रति अनूप संस्कृत पुस्तकालयमें है।

माननीय ओझाजीने अपने जोधपुर राज्यके इतिहासमें महाराजा जसवंतसिंह के काव्यगुरु सूरति मिश्रको बतलाया है पर यह असंभव है क्योंकि सूरतिमिश्रका ग्रन्थ रचनाकाल स० १७२६ से १८०० तकका है जबकि महाराजाके काव्यगुरु का समय स० १७०० के आस पास होना चाहिये। जहाँ तक हमारा विश्वास है महाराजाको कविता की शिक्षा देनेवाले प्रस्तुत ग्रन्थ रचयिता दलपति मिश्र होने चाहिये। स० १७०५ में इस ग्रन्थकी रचना प्रारम्भ हुई, इसमें वर्णित बातोंसे कविका महाराजाके साथ पहले अज्ञा सम्बन्ध होना सिद्ध होता है। अतः स० १७०० के लगभग महाराजाको इन्होंने काव्यकलाकी शिक्षा दी होगी।

महाराजा जसवंतसिंहका व्यक्तित्व महान् था। हम उसके विषयमें अपनी ओरसे कुछ न बहकर स्वर्गीय ओझाजीने जोधपुर राज्यके इतिहासमें जो कुछ लिखा है उसे यहाँ उद्धृत कर देते हैं—

३० दलपतिके उल्लेखानुसार ये भी एक एकविध पर इनका हिन्दी साहित्यके इतिहास ग्रन्थोंमें कोई उल्लेख नहीं मिलता। अतः इनके ग्रन्थोंका अनुसन्धान करना आवश्यक है।

महाराजा (जसवंतसिंहजी) का व्यक्तित्व

महाराजा जसवंतसिंह अपने समयका बड़ा वीर, साहसी, शक्तिशाली, नीतिज्ञ, उदार एवं न्यायप्रिय नरेश था। उसके राज्यकालमें जोधपुर राज्यका प्रताप बहुत बढ़ा। बादशाह शाहजहाँके समय शाही-दरवारमें उसकी प्रतिष्ठा बढ़े ऊँचे दर्जेकी थी। उसके समय उसका मनसब बढ़ते बढ़ते सात हजार जात सौर सात हजार सवार तक पहुँच गया था और समय समय पर उसे बादशाहकी तरफसे हाथी, घोड़े, सिरोप्राव आदि मूल्यवान् वस्तुएँ उपहारमें मिलती रही। उसके (शाहजहाँ) समयकी चढ़ाईयोंमें शामिल रह कर उसने राठौड़ोंके अनुरूप ही वीरताका परिचय देकर अपने पूर्वजोंका नाम उज्ज्वल किया। बादशाह उसपर विश्वास भी बहुत करता था—शाहशुजा, औरङ्गजेब एवं मुरादकी तरफसे खतरेकी आशङ्का होते ही उसने आगरेके किलेकी रक्षाके लिये अचिलम्ब महाराजा जसवंतसिंहजीको नियुक्त कर दिया। इस अवसर पर स्वयं उसके पुत्र दाराको भी रात्रिके समय किलेमें प्रवेश करनेकी पूरी मनाही थी। अनन्तर उसने जसवंतसिंहको ही आगरेकी ओर बुरी नियतसे बढ़नेवाले औरंगजेब और मुरादकी सम्मिलित सेनाओंको परास्त करनेके लिये भेजा। दोनों शाहजादोंकी संयुक्त सेनाकी शक्ति बहुत बड़ी थी पर न्यायके पक्ष में होनेके कारण वह जरा भी विचलित नहीं हुआ। उसने ऐसी वीरताके साथ विद्रोही शाहजादोंका सामना किया कि कुछ समयके लिये उनके हृदय पराजयकी आशंकासे विचलित हो गये, परन्तु दूसरे शाही अफसर कासिमखानके विश्वासघात करने तथा अचानक युद्धक्षेत्र छोड़कर चले जानेसे युद्धका रूप बिल्कुल बदल गया। शाही सेना बुरी तरह पराजय हुई। जसवंतसिंह उस समय भी लड़नेके लिये कटिबद्ध था, पर उसके स्वामीभक्त सरदारोंने इसकी निष्फलता जतलाकर उसे युद्धक्षेत्रका परित्याग करनेके लिये मजबूर किया। ऐसी दशामें भी औरङ्गजेबको उसका पीछा करनेकी हिम्मत न पड़ी क्योंकि उसे उसकी वीरताका भलीभाँति ज्ञान था। अपनी इस पराजयकी महाराजाके मनमें बहुत समय तक ग्लानि बनी रही। इसके थोड़े समय बाद ही वास्तविक उत्तराधिकारी दाराको हरा और शाहजहाँको नजर कैदकर औरंगजेबने सारा मुगलराज्य अपने अधिकारमें कर लिया परन्तु दारा और शुजाके जीवित रहते हुए उसका मार्ग निष्कण्टक न था। इन काँटोंके रहते हुए उसने जसवंतसिंह जैसे शक्तिशाली शासकसे बैर मोल लेना ठीक न समझा और उसे बलाकर

उसका मनसब आदि बहाल कर उसे अपने पक्षमें कर लिया, पर इससे जसवंतसिंह की मनस्तुष्टि न हुई। ऊपरसे किसीप्रकारका विरोध प्रगट न करने पर भी उसका मन औरगजेबकी तरफसे साफ न हुआ। पिताकी जीवितवस्थामें ही उसका सारा राज्य हृदय लेना न्यायप्रिय जसवंतसिंहको पसन्द न था। देशकी दशा तथा औरङ्गजेबकी बढती हुई शक्तिको देखते हुए प्रकट रूपसे उसका विरोध करना हानिप्रद ही सिद्ध होता। फिर भी खन्नाकी लडाईमें एकाएक औरङ्गजेबकी सेनामें लूटमार मचाकर उसने अपनी विरोधी भावनाका परिचय दिया। उस समय औरङ्गजेबके लिये बड़ी निकट स्थिति उत्पन्न हो गई थी, पर शाह-शुजाके ठीक समय पर आक्रमण न करनेके कारण इससे कुछ भी लाभ न हुआ और जसवंतसिंहको शीघ्र जोधपुर जाना पडा। औरङ्गजेब इस बातसे उसपर बड़ा नाराज हुआ और उसने रायसिंह को एक बड़ी सेनाके साथ उसके विरुद्ध भेजा, लेकिन पीछेसे उसने उससे मेल कर लेनेमें ही भलाई समझी। भविष्यमें वह उसकी तरफसे सावधान रहने लगा, जिसमें उसने अन्तमें उसकी नियुक्ति दूर देशमें ही की ताकि वह निकट रहकर कोई बसेड़ा न खड़ा कर सके। उसको सुश रतनक लिये उसन समय समय पर उसे इनाम इकराम भी दिये।

महाराजा कट्टर हिन्दू था, इसीसे बादशाह द्वारा प्रसिद्ध मरहठा घोर शिवाजी क विरुद्ध भेजे जाने पर भी उसने उन चढ़ाइयोंमें विशेष उत्साह नहीं दिखाया। अपने पड़ोसी राजाओंके साथ उसका सदा मैत्रीभाव ही बना रहा। महाराणा राजसिंहन राजसमुद्रकी प्रतिष्ठाके अयमर पर अन्य मित्र राजाओंके समान उसके पास भी पहुँची, दो घोड़े, सितोपाय भेजा था। कछवाहा राजा जयसिंहक साथ भी उस (जसवंतसिंह) की ऊँचे दर्जेकी मैत्री बनी रही।

बहुधा शाही सेवामें संलग्न रहने पर भी वह अपन राज्यक प्रबन्धकी तरफसे कभी उदासीन न रहा। सरदारों आदिके बगैरे होने पर उसन योग्य व्यक्तियोंको भेजकर उनका सदा ठीक समय पर दमन करवा दिया। उसके समयमें राज्यमें शान्ति तथा समृद्धिका निवास रहा।

वह जैसा धीर था, वैसा ही शानी, विद्वान और विद्याप्रेमी नरेश भी था। उमने स्वयं भाषामें कई अपूर्व ग्रन्थ बनाये थे जिनका उल्लेख ऊपर आ गया है। उसके मन्त्रियों में से सुहणोत नैणसी पद्म योग्य, विद्वान् तथा धीर व्यक्ति था। उमका लिखा हुआ इतिहास ग्रन्थ जो "सुहणोत नैणसीकी रयात" क नामसे प्रसिद्ध है,

ऐतिहासिक दृष्टिमें बड़ा महत्व रखता है । महाराजाकी सन्तीसे तंग आकर सुंदर-
णोत नैणसीने पीछेसे कटार खींचकर आत्महत्या करली । यदि वह जीवित रहता
तो ऐसे कई अमूल्य ग्रंथ लिख सकता था ।

महाराजाने काबुलमें रहते समय वहाँमें बटिया अनारके पैड़ माली चतरा
गहलोतके साथ भेज कर जोधपुरमें कानाके बागमें लगवाये । अब भी मिठाम व गुण
के लिये यहाँके अनार दूर दूर तक मंगायें जाते हैं और बहुत प्रसिद्ध हैं ।

महाराजाकी मृत्युके साथ ही जोधपुर राज्यका नितारा अन्न ही गया ।
उसकी मृत्युके समय उसके कोई पुत्र जीवित न होनेसे बादशाहको अपनी नाराजगी
निकालनेका अच्छा अवसर मिल गया । उसने अविलम्ब सेना भेजकर जोधपुर
राज्य खालसा कर लिया और वहाँ कितने एक वर्षों तक मुगलोंका अधिकार बना
रहा । इस सम्बन्धमें जसवन्तसिंहके दुर्गादास आदि स्वामीभक्त सरदार प्रशंसाके
पात्र हैं क्योंकि उनकी वीरता एवं अनवरत उद्योगके फलस्वरूप ही जसवन्तसिंहकी
मृत्युसे कुछ समय बाद उत्पन्न उसके पुत्र अजीतसिंहको औरङ्गजेबके मरने पर पुनः
जोधपुरका राज्य प्राप्त हो सका ।

(ओझाजीका जोधपुर राज्यका इतिहास भा० १ पृष्ठ ४७२)

॥ श्री गणेशाय नम ॥

अथ महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवंतसिंघजी को ग्रंथ

जसवंत-उद्योत

मिश्र दलपति को कह्यो लिख्यते ।

दोहा

प्रथम मंगलाचरन देव चरन चितलाइ ।
गनपति गिर गिरोस को बिनती करो बनाइ ॥१॥

अथ गणेशकी स्तुति

धारम चरन चारर्थीबरन सरन आय । आपदा हरन नरदेवता असुरके ।
मनोरथ दाइक सहाइक सांकरै ठोर । मदागनाइक धरैया धराधुरके ॥
दलपति दीरघ दुरित उधरत गित । आनदकरन गिरिजा गरीस करके ॥२॥

अथ सारदाकी स्तुति

चतुरान आन चारि कह्यो । सहसानन हू सहसाग गायो ।
मुप पाच गिर तर नाचकने । भट्टभातिनि गीत सगीतनि गायो ॥
दलपति चारु बिचारु सवै । श्रुतिषारु पुराननि व्यास जनयो ।
मानव दानन देवगिद् । मरवागी पयोधि को पाठ न पायो ॥३॥

अथ शिवस्तुति

वारुको वनाएँ वकसत वसुमती नैक । नीरु सिर नाए करै भगतिकी भाईजू ।
 निधिके पलटे चारि चाँवरनि लेतदेत । आकके पातनि नाक नाथनकी बढाईजू ॥
 दलपति जहा जहा साकरै स्पोरत तहां । लागति न आंचे संचे ऐसै सरणाईजू ।
 तीन्योताप मोचन तिलोचन तिमूलधारी । तिपुरविदारी तिहूँपुरके गुमाईजू ॥४॥

अथ कृवि वंस वर्णनं

अकवरपुर अनुपम सहव, वसे सुरसरी तीर ।
 चाख्यौ वरन रहै जहा, धरम धुरंधर भीर ॥५॥
 दीप मिश्र माथुर तिहां, सदा कर्म पट् लीन ।
 साधु सिरोमणि सीलनिधि, पंडित परम प्रवीन ॥६॥
 तिन पुनि राम नरेस दिग, क्रियौ कछुक दिन वासु ।
 पाठे नृप कौविद घरनि, जगमगातु जसु जासु ॥७॥
 सदाचार गुन गननि पुन, तासु तनय सिवरांम ।
 तिनके सुत तुलसी भए, सकल धर्म के धाम ॥८॥
 तुलसी सुत दलपति सुकवि, सकल देव द्विज दासु ।
 तिन वरन्यो बल बुद्धिसौं, श्रीजसवंत विलासु ॥९॥
 पाच अधिक सत्रह सई, संवत् को परमानु ।
 ग्रीष्म रीति आंसाठ सुदि, तीज वारु हिम भानु ॥१०॥
 नगर जहानावाद जहा, रन्यौ चकतां भूप ।
 तहा दलपति जसवंत की, पोथी रची अनूप ॥११॥
 नगर जहानावाद कौ, वरनन कखौ बनाई ।
 जहां नृपति जसवंत कहँ, मिव्यौ कवीसुर आइ ॥१२॥

अथ जहानावाद वरनन

घनाछरी छंद

एहा बहुभाँति हीर जवाहिर जोति वेहा । एकै अमरावती उदोतु नषतेसकौ ।
 एही अगनित गज अमित तुरंग वेही । एकै हाथी अरु एकै घोरी अमरेसकौ ॥

वेहां पुरदूतु एक नांक को नाइकु आदि । एहा पतिसाह साहिजहां देसदेसकी ।
 केसैं सम होतु अमरनि को नगद जैसे । साहिजहानावाद वसुधा नरेसकी ॥१३॥
 नीलमणि मई मनो जमुना वहति स्नाद । सुधासमनीर घाउली तलाह कूप हैं ।
 चाव चहवचा अरगजानिसौ भरे । अह नदन ते आगरे बगीचा बहू रूप हैं ॥
 फहै दलपति चहू चकके चकवे । जेहा साहिजहा साहिब किरान सान भूपहैं ।
 ज्यौं साहिजहानावाहु वसुह स्यौ हैं । ऐसे और दीप फहा और नगर अनूप हैं ॥१४॥
 फनक कुगुरा पटिकनके पगार जेहा । आगरेके चोक कलघोत जल दारे हैं ।
 भ्राभरी भरोपी हीरे जनाहिर मरे हरे । पनाके परम चाव चलत पनारे हैं ॥
 वेसैं समकीजे ओर लोकनिके ओक थोक । ज्यौं साहिजहानावाहु सदन सवारे हैं ॥१५॥
 भ्राभरी भरोपनि लसत भरकत उहे । लोचन ललित बीच अजनु सुटाव हैं ।
 विविध विद्योगा अघ उरध विताा छोई । नपसिप सोहत सुरग पटुचाव हैं ॥
 कोटु कटि किंकिनी मनुज मनसानि हरे । नीहनल ठरे दलपति मनोहाव हैं ।
 आगमुनाइक साहिजहा को निहारि मनो । दिल्ली नारि रस्यौ तन नूतन सिंगार हैं ॥१६॥

॥ अथ महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवंतसिंघजूके पुहयनको वर्णनु ॥

प्रथम आदि श्रीनाराइण

कुडलोया छद

नाराइण कारा प्रथम, अगुन अरूप अरेप ।
 धरे भगत हित हेत जिन, अमित आपने वेप ॥
 अमित आपने वेप धरे ससाव उधार्यौ ।
 अथम अजामिलु व्याधि भीधु गोकुल गज तार्यौ ॥
 गजु तार्यो दलपति नाउ निकसति पाराइन ।
 परम पुरुष प्रकृतीश प्रथम कारन नारायण ॥१७॥

अथ श्रीनारायण के दशावतार के वर्णनु

प्रथममी

भीनयपु धरत निगम उपरत गभु ।
 गोर निधि नीध एकमिक्कु भै रण्डु हे ॥

दलपति वाद्य विरोचन की आँच एक ।
 टोरके भएते कनकाचलु गलतु हैं ॥
 तीछन तरल पूंछ छोर फटकत टोरठोर ।
 चहू ओर अघ उरध दलतु हैं ॥
 दिग्गज चलत दिग्पाल दहलत मदा ।
 नागके हलत मनु भूगोलु हलतु हैं ॥१८॥

अथ कूर्मः

जत्र जत्र जहां जगदीस जैसे राश्री तत्र । तहांतिहि भांतिन जगतु निरखयो हैं ।
 महा मारु मएँ अथजात भुअलोकु पुनि । भीर पाइ कूरम सगीर आइ गली हैं ॥
 जैसे पीठि पर विलसति वसुमति । दलपति उपमांनि कवि कोविटनि कह्यो हैं ।
 प्रलय पयाधि जल बीच विहरत कमनीय । मनो चारुको कनूका लागि रखीहैं ॥१९॥

अथ वाराह

जैसे हरि हर्न्यो हरिनाकुस को भैया । भीरपरं फीनु एसे जगसांकरे सदाइ हैं ।
 कोल रूप आयुही अकेले जगदीसु । टाढ जोर अघगई अवनि उठाइ हैं ॥
 दलपति औरनि कह्यो न जाइ भेउ । व्यासदेवु वरनतुं उपमांछि उपजाइ हैं ।
 सोरभ छबुधि केतकी कुसुम बीच बसि रही । मनो भौरकी भांगिनी उट्टि आइ हैं ॥२०॥

अथ नृसिंह

दानव सरोस सनकादि सापवस । अमरनि की अकसपूतु आपनों पचाख्यो हैं ।
 मोह महु पिये मूढ जानतु नहिऐं । जगदीसकी सहाई जनुं मरतु न माख्यो हैं ॥
 दलपति वडी प्रभुजुकी प्रभुताई करि । भगतकी भाई हरिनाकुसु विटार्यो हैं ।
 किधौं पहलादकी सर सेवकाइ जिहि । पाथरकी कोर परमेसुर निकार्यो हैं ॥२१॥

अथ वामन

कही न परति एसी सहज निकाइ आपु । छोटे वही जगत कर्यो भगतकी भायो हैं ।
 देवनि के हेत भए मग्गने पराए जहां । डहकन गए तहां आपु डहकायो हैं ॥
 दलपति थाइ अगमने जन जाइ । बलिराजहि जनाइ रनिवासनि जनायो हैं ।
 नैनन निहाख्यो न कहूं सुन्यो न काम एसी । जेसी एकु नगर विटोना बोना आयी हैं ॥२२॥

अथ करसराम

इकईस दाद छत्रहीन 'छिति कै कै ।
 पुनि सकलपि देकें बढो जसु बगरायो ई ॥
 दलपति दुसद कुठारघार जोर ठोरठोर,
 रिपु सोनित को सागर बहायो ई ॥
 मेरे दरसत गरसतु कालु बामननि ।
 अथ हदि दुप जातु बहुतु सत्तायो इ ॥
 पार एक जो न देऊ जमहि सजा ।
 इतो कहाऊ न जगत जमदगनिकी जायो ई ॥२३॥

अथ राम

परसत सद्ज सोह सिंधुसोत सिंत ।
 कोरनि सीं होति चित्तचोर नित वामके ॥
 दे दे दानु अमित उद्धाह रग राचे ।
 दलपति दयापूरन कल्पतरु कामके ॥
 धेरिन भिहावने सिंहावने सुहृद मन ।
 भावने हसैया कमलावतीके धामके ॥
 नेकु रोसु क्रिये रिपु सोनित पिपे ।
 सरमीले महारसनि रसीले नैन रामने ॥२४॥

अथ कृष्ण

आवतत चित सत जागइत कै के तित ।
 श्वावतु समाधिनिनित साधि सत जागु है ॥
 पुरानपुष्य गुन गावत रइतु वेद ।
 पुरानु कहतु कहैं पावतु न लागु हैं ॥
 दलपति मुनि मुनि मनु हारयो हरि ।
 नैकन निहारयो मारयो मोहु दोऊ रागु है ॥
 उहे जग सेया भागें गेलतु बकैया औसी ।
 बसुह बढेरी जसुमति तेरी भागु है ॥२५॥

अथ बुध

सुरनकी औरजि असुर छल हेत आपु ।

निगम निकेत पसु पाखंड ब्रह्मान्यौ है ॥

अवगति गति जगदीसकी कही न जाई ।

बुध नामु कड़ाई अबुध मति मान्यो हैं ॥

मुनिव्रतु लैके तनु ज्वालनित चेकें ।

निसिदिन जोगकेके तादिने सुकृन जान्यो है ।

मारि जित वही अमारजित मन जाइ जाइ ।

जिन रूप विनुं जिन रूपु जगु टान्यो है ॥२६॥

अथ कल्की नाराङ्ण के ब्रह्मा

छप्पें

प्रथम होतु जग अंतु जगतु प्रलयानल बढ्यौ ।

सप्त सिंधु मिलि इक इक, सरवर जनु बढ्यौ ॥

सह संपत्त जगदीस, नाभि नीरजु तहां फुल्यौ ।

जहां वेदनिगुंजरत, भवर कमलासन भुल्यौ ॥

दलपति विरंचि चितति हृदय, तकिराय नारायन सरनु ।

तिहु पुर प्रसिद्ध जाकौ विरदु सु सकल दीन दुप उद्धरनुं ॥२७॥

ब्रह्माके मरीच,

नाभि सरोरह मध्य, कियौ ब्रह्मा अखंड तपु ।

सकल विश्व निर्माण हेत, दुषु सह सह्यौ वपु ॥

विष्णु कृपाविधि रच्यौ, सप्त मानसिक पुत्र पुनि ।

अत्रिय पुलक पुलस्ति अंगिरा ऋतु बसिष्ट मुनि ॥

दलपति अनंत गुन ग्याननिधि, तिनमहँ इकमु मरीचि क्रिय ।

जिहि पाइ प्रथित कस्यपु तनय, सुविमल कित्ति भुव विचरिय ॥२८॥

अथ दक्षकी उत्पत्ति

दोहा

वाम चरन अंगुष्ट विधि, रची एक तियचार ।

दक्षिन पद अंगुष्टतें, कस्यौ दच्छ अवतार ॥२९॥

छपै छंद

दञ्छ प्रजापति प्रथम, साठि कया सिरजी तहँ ।
 तिनमहँ तेरह चद्रवदनि, दिन्धी कश्यप कहँ ॥
 तिन तिय उर अबतही वसु पिण्डिये तिहु पुर ।
 यञ्छ रञ्छ गर्भर्ष नाग किन्नर दानव सुर ॥
 दल्पति अदिति नदन तिलदु, इहू सूर जग उगयो ।
 राजाधिरान राठोर मनि, सु जिहि कुल पुनि सूरजु भयो ॥३०॥

सूर्यके मनु

सग्या नाम प्रसिद्ध तीय, लद्विय सहस्रकर ।
 तहँ बनमिय मनु महाराज, वसुमती पुरदर ॥
 सो समस्त राठौर बस, कारजु जग जानिय ।
 सप्त द्वीप नवपद, त्रिमलजसु जासु वपानिय ॥
 दल्पति दिव्यश इन गुनित, इहू अधिक सत्तरि जुगहँ ।
 उधरत निगम वरनत विनुष, मवतर परिमान कहँ ॥३१॥

मनुके इक्ष्वाकु अयोध्याके राजा भए

मनु महीप के भए पुत्र नवमी पुनि नीतिरत ।
 गावत सुरनर गाग जासु सुनगन असपिसत ॥
 इहू इहू दिग भूमि सवनि कहँ तात असुदिय ।
 जिन प्रचढ भुनदढ शीर दुजन दलु जित्तिय ॥
 सब विधि समथु इक्ष्वाकु तहँ मध्यदेश अधिपति कियो ।
 रावन तिमित्त पूरन पुष्य सुरासु जासु जिहि कुल लियो ॥३२॥
 इक्ष्वाकुके विकुलिभए
 तेहँस साद कशए नरनाइहू इक्ष्वाकु पुत्र सत भए धुरधर ।
 जिन : पूरवू दछिउ पछाह : उत्तर यम्पौवर ॥
 तिनमहँ इहू विकुलि सातपिण्थो मृगयाकहँ ।
 आसु विनुष सु भण्यो नाउ लथ्यौ सगदु तहँ ॥
 हुअ तासु पुरषप गाम सुनु जिन समस्त भुगिय अवनि ।
 जिहि बस मथ काकुत्थ नृपसु हुअ अनेक दल्पति भनि ॥३३॥

विकुलके पुरंजय ते कङ्कस्थ कहाए
 इक समय मुरपरम दार दामनु रनु मंड्यौ ।
 दुहुन परस्पर क्रुद्धि कटकु आयुध वरपंत्यो ॥
 देवनि तस्यौ सरन हेत पुहमीसु पुरंजय ।
 अभयदान नृप दियौ लियौ निर्मल लए अल्य ॥
 वृषरूप इंदु चाहन भयो, तिहि विकुल नंदन चहिय ।
 जित्ति समस्त दुर्जननि कहँ सु, तिहुंपुर नाम कङ्कस्थ किय ॥३४॥

कङ्कस्थके राजा अनेनस—

दोहा

भयो पुरंजय के सुअनु, जातु अनेनस रांमु ।
 जिनन द्यौ निज बाहुवर, बैरिन फई विश्राम ॥३५॥

अनेनसके राजापृथु

नृपति अनेनस नंदु हुआ, पृथ नरेस सुभ अंग ।
 जा प्रताप पावक प्रवल, दुर्जन भए पतंग ॥३६॥

पृथुके विद्वगंध

दलपति पृथु पृथवीस कौ, विद्वगंध हुआ नंदु ।
 विद्वगंध सुतु चंद्रु हुव, नृप नछत्र गन चंदु ॥३७॥

चंद्रके राजा युवनास

भयो तहां नृप चंद्र सुतु, महावली जुवनासु ।
 जिहि अगनित मय गनकके, लहयो देवपुर वासु ॥३८॥

जुवनासके राजा श्राव

महाराजा जुवनास सुतु, श्राव नाम हुमीसु ।
 जिन समस्त दाननि ददे, तुष्ट कियौ जगदीसु ॥३९॥

श्रावके राजा वृहदस्व

श्राव सुअनु वृहदस्व नृपु, भयो वीर विरदेतु ।
 जो जसु फेलत स्वाम रगु, लयौ तिहुंपुर सेतु ॥४०॥

वृहदस्वके राजा कुवल्यास्व ते धुंधमार कहाए

कुवल्यास्व वृहदस्व सुतु, भयो महावल बाहु ।
 हन्यौ धुंधु जिन समर महँ, देवन द्यौ उछाहु ॥४१॥

धुधु बधकी क्या

छंद पाधरी

पृहदस्व महीपति महानानु तपहेत कस्थी वन कहा पवानु ॥४२॥
 सहेँ रिपित उत्तक यह कक्षी वेनु जसु लेहु एकु जगदेहु चेनु ॥४३॥
 शकु धुधु गाम दान प्रचहु ना खांत दहत ब्रहमड पहु ॥४४॥
 मेरी तपु छूत पाइ श्राउ तुम दनुज मारि वन करहु चासु ॥४५॥
 सुतु कुालियाउ अति धीरचित्त गृप दयी घुघ मारा निमित्त ॥४६॥
 तिता ह यौ धुधु निन राहु जोर जउ कक्षी आपणौ चहुँ ओर ॥४७॥

कुवलियास के राजा ददास

दोहा

कुवलियासु तदा भयो गृप ददासु परवीर ।
 उ तत तित्त गुमेरलौ साहरलौ गभीर ॥४८॥

ददासके राजा हर्जस

हुभ हर्जग महानत्री नृप ददासु को पृत ।
 रूप जित्यौ जिनपरवरु सुख नीत्यौ पुगृह ॥४९॥

हर्जसके राजा निकुम

भयो भूप हर्जस को सुतु तिष्ठ म तरनाथु ।
 जिग सुसुर सा सुरा कहँ ट्यौ सांकरै साधु ॥५०॥

निकुम के राजा हताउ

रूप तिष्ठ म नदनु तमउ संहतासु गुा भोनु ।
 जा प्रताप कुल बधुनि की आचरु छुयो त पीउ ॥५१॥

संहतास के दो पुग जेठे वृषाश लहुरे शस्तहशास्त्र

संहतास के सुभन द्वे उफल भूप तिरतान ।
 जिग तजी पल आघहुँ तेग त्याग की लात्र ॥५२॥
 लपुभ वृषासु पटेहु हुँअ तदा वृषासु टप एकु ।
 उग यस्थी भा राम महेँ पर घर दाउ विषु ॥५३॥

हतास के राजा सेगजित

हुभ वृषासु पुदमीग को सुभन सेगजित गांड ।
 अगराती मिशान गुर बा राजापी गांड ॥५४॥

सेनजित के राजा जुवनास्र दूसरे

नृपति सेनजित को सुअनुं हुव जुवनास्र महीपु ।
नैकन ऊंनौ बापतैं ज्यों दीपक तैं दीपु ॥५५॥
जुवनास्र के राजा मांघाता ते दहिनैं ओर पेट फारि निकरे तिनको उत्पत्ति
भयौ न सुदु जुवनास्र के कस्यो बहुत दिन भोगु ।
जु कछु जहां होनी तहां तैसोइ उपजतु जोशु ॥५६॥
तनय हेत जुवनास्र गयउ तापस समाज महे ।
दुषित चित्त नृप नांनि अनुग्रह करयौ रिषिन तहे ॥
पुत्रहेत वासव निमित्ति तिन मषु आरंभिय ।
अन जानत अवनीपु पुंसवन नीरु पांन किय ॥
दलपति अमोघ मुनि मंत्र बल, उदरु मेदि वालकु भयौ ।
जा जसु प्रताप पूरन पुहमि, सु सत्त सिंधु पाहर गयौ ॥५७॥

दोहा

हंद्र आपनी अंगुरिया दई पियन कहैं ताहि ।
नांउ मांनघाता धरयौ जगत सराहउ जाहि ॥५८॥

मानघाता के तीन पुत्र जेठे पुरकुश लहुरे अंबरीक मुचकुंद

सोरठा

तीन महा बलवांन भए मांनघाता तनय ।
नृप पुरकुश सुजांन अंबरीप मुचकुंद पुनि ॥५९॥

पुरकुश के राजा त्रसदस्व

हुव पुरकुश महीप सुदु श्रीत्रसदस्व नरेस ।
जा जसु वरनत सहस मुष पाव न पायो सेस ॥६०॥

त्रसदस्व के राजा अनरन्य

श्री त्रसदस्व महीप को सुत अनरन्य नरींदु ।
विमल वंस यी विमल भो ज्यों पयोधि तैं इंदु ॥६१॥

अनरन्य के राजा हर्जस्व दूसरो

अवनिपाल अनरन्य कौ हुव हर्जसु नरदेउ ।
फल उपजत या मंत्र कौ लह्यो जगत महे मेउ ॥६२॥

हर्जस्थ के राजा पवन

हुच हर्जस्थ नरेश कौ प्रता नाम छितिपाल ।
या प्रताप वर प्रजनि कहँ नेकन व्याप्यौ फालु ॥६३॥

प्रपन के राजा त्रिवधन

भयौ त्रिवधन तासु सुतु जगत तिमोमनि साधु ।
सत्यव्रतु सुतु परिहृष्टौ जिन गिरपत अपराधु ॥६४॥

त्रिवधन के राजा सत्यव्रतु ते त्रिसकु कदाए ताको कथा

माधरी छद

इक विप्र सुता परिनयन गाह जवहरी सत्यव्रतु जिय उछौह ॥६५॥
इहवात सुनी जव तात आपु उपज्यौ उर अंतर महा तापु ॥६६॥
ता तज्यौ पृतु निज धर्म हैत वरज्यो वसिष्ठानिकासि देत ॥६७॥
घामहँ वसिष्ठ की एरु गाइ त्रिनुग्याग व्रत हनी जाइ ॥६८॥
यह भयो पूहमि पूरन कलकु तन बह्यौ सचिग कहँ त्रिसकु ॥६९॥
तिन कखी माधरी सुत सनेहु ता मत्र नख्यौ सुरपुर सदेहु ॥७०॥
पुनि द्यौ तदा देवनि गिराइ तव गाधि सुभन राख्यो धमाइ ॥७१॥

त्रिसकु के राजा हरिश्चद्र

सोरठा

भयोभूप हरिचद्रु सत्यव्रतु नदन गवलु ।
सह्यौ दुमह दुपदद्रु जिनन तय्यौ सुतु आपो ॥७२॥

हरिश्चद्र के राजा रोहित

रोहित नाम नरिद्रु जगत विदित हरिचद्र सुतु ।
जा जसु पूरा इद्रु रोहितास मिस जगमगत्रु ॥७३॥

रोहित के राजा हरित

मूरतिवत त्रिवकु हरिताम रोहित सुभतु ।
पुदगि पुरदरु एक चतुगना मानहँ रख्यौ ॥७४॥

हरित के राजा चपु जिनको चपा गरी

जिदि विहात सब भूप चप नाम नुअ हरित सुतु ।
चपा पुरी भनूप चसुद सौनि सम जिग रची ॥७५॥

रूप के राजा विजय

विजय सरीसृप घातुं चंद्र तनय राजा विजय ।
रिपुजीत यह नाम् भुव नंदलद प्रतिष्ठ ह्युभ ॥७६॥

विजय के राजा रुद्रक

सदा सुकृत पथनेहु करयो रुद्रक कोमल धनी ।
मानहु भर्म सदेहु विजय भूप उर क्षीतस्थी ॥७७॥

रुद्रक के राजा त्रिक

त्रिक नाम नरनाहु रुद्रक नंदु रवि चंद्र मनि ।
सुगत मशानल बाहु प्रसन अजा त्रिमि दुभन जिहि ॥७८॥

त्रिक के राजा बाहुक

छप्पै छंद

दुभननि जीत्यौ देसु विकल बाहुक नरेस ह्युभ ।
निज फलंकु जिय जानि देर लंछिय अरुष्य भुभ ॥
पतिवना त्रिय तासु संग विगायी प्रसन मन ।
जिहि संगभे विप्र तशं गरलु दीग्यौ सपरिगन ॥
सह गमन समय वालुक भयी उवंजासु नंप्रद वस्थी ।
गर सहित गिस्थो जहिन बनसु सगरु नामु तहिन भरुी ॥७९॥

बाहुक के राजा सगर तिनके त्रिभुव वर्णन

कुंडलिया छंद

उर्व मुनीसुर नगर कहँ, विद्या सफल पटाइ ।
अशु अग्नि दंबतु दयो, दुभन जिते जिहि जाइ ॥
दुअनि जिते जिहि जाइ वापु कौ बैरन राप्यी ।
नागलोक नरलोक अमरलोकनि जस भाप्यो ॥
जसु भाप्यो दलपति प्रतापु प्रगत्योजु तिहंपुर ।
रण मरुहँ जय सदा कस्थी वरु उर्व मुनीसुर ॥८०॥

सगर की दुइ स्त्री

सौरठा

सुमति केसरी नाम सगर वरीवर नारि त्रिभि ।
रूपवंत सुनघामु सुर सुंदरी सिंहाहि जिहि ॥८१॥

उपं दयो वरदाउ एकदि छाडहार सुत ।

सूर खिरोमनि जाउ वस घरा उषु एक षई ॥८२॥

छद पाथरी

फिगी जन्यो सुत एकु चार नई असुमाग दुभ गुा उदार ॥८३॥

तहा सुमनि लीउ मरिया एक जहां तिल प्रगात बालक अनेक ॥८४॥

मुडु एकु एकु एन कु भ गाइ बलवत को धाइनि यदाइ ॥८५॥

सागर राजा जिय आरभ्यो तिनकी कथा

छप्ये

सागर मदीपति अरवभेषु आरभ पश्यो तई ।

गुप्त धेप बासवई तुरगमु हस्थी भाइ जई ॥

ता कारन सुभ खात सुत कीशो रतनाकर ।

यह देरत उत्तर दिगत देख्यो तापसु वर ॥

आठ्यो सहस्र विज कर्म यत पश्यो एकु अपराधु वर ।

रिपराज कोप वाचक प्रथम सु भए भयम तद्योई सब ॥८६॥

सागर के राजा अममजम ते विरक्त भए

अममजम केसिगी मुा प्रथम जाग सुधि वाइ ।

घर छाड्यो एके तजुनु असुमानु उपजाइ ॥८७॥

अममजम के राजा अममान

अममजम गदनु अममानु दुभ परम पुरघर महाजाउ ॥८८॥

तिग बस्थो कपिल मुनि गुप्त जाइ तूव जाउ विवाहो तुरग ल्याइ ॥८९॥

अममान के राजा दिलोव दिलोव के भगीरथ

दुभ अममान गदनु दिखीप सुत साठ भगीरथ कुल मदीर ॥९०॥

भगीरथ के परित्र कर्मन

कुंडलिना छद

भूर भगीरथ परम तपु बस्थो जगत रिग जाइ ।

सागर यत तिग उपरयो दश तरंगि मिलाइ ॥

ऐव तमगि मिलाइ परम कीरति क्षिति छाइ ।

अनु मनुजन देत गन्ने बिगरी समगाइ ॥

धी परग द्रव रूप कृपायो त्रिति अद्यय मधु ।

मुन प्रीत टलादि भयो भूभ मय भगीरथु ॥९१॥

भगीरथ को तपस्या तें गंगा आकास वै टूटी तिनको वर्णनु

घनाछरी छंद

दल्पति किधौं मुक्ति कौ मुतिछरा छूटि पर्यौ,

किधौं निपट गिरीन गिरिनोक कौ ।

किधौं दख्यौ परम पुरुष द्रव रूप,

किधौं सोपानु अनूप गरुडासन के ओक कौ ।

किधौं जमपुरी तें पटावौ जगदीस,

जग जीवनुके जीवनु उगर सुथोककौ ।

सुरपथ धर्यौ सुरसरीकौ प्रवाहु,

भगीरथकौ कमायौ रसायन तिहूँ लोककौ ॥६२॥

भगीरथ के राजा श्रुत

भूप भगीरथ को भयो सुत समथु सब भांति ।

जाकी क्रीरत जगमगी जो हंसन की पांति ॥६३॥

श्रुति के राजा नाभु नामु

सुत महीप जायौ सुअनु सूर मिरोमणि नामु ।

जा डर रिपु रनवास महुँ तज्यौ गामिननि नामु ॥६४॥

नाभु के राजा सिंधुदोपु

नाभु सुअन तिहूँपुर प्रगट सिंधुदीपु नरेसु ।

जा प्रताप तें पातकनि लख्यौ न पुहगि प्रवेस ॥६५॥

सिंधुदीप के राजा अयुताजित

सिंधुद्वीपु नरेसु सुत अयुताजित अवनीप ।

भुजबल जिन निज बस किये प्रथित अठारह द्वीप ॥६६॥

अयुताजित के राजा रितुपर्ण

अयुताजित अवनीर सुत भए भूप रितुपर्ण ।

जिन भूतल निज धर्म किये राधे चारों वर्ण ॥६७॥

रितुपर्ण के राजा सुदास सुदास के मित्रसह

भयौ भूप रितुपर्ण को सुत समरथ सुदास ।

ता सुन राजा मित्रसह मंदयनी तिय जासु ॥६८॥

मित्रसह के राजा अस्मक

भयो मित्रसहको सुअनु अस्मक नृप जयपभु ।
ना जसु अपर्ने लोक्र मह गावत सक रज्यभु ॥६६॥

अस्मक के मूलक राजा

अस्मक सुनु मूलक भयो मूपति परम प्रचढ ।
सप्तद्वीप नव पढ जिहि ल्यौ नृपति सी दड ॥१००॥

मूलक के राजा एलविलु एलविलु के विश्वसह

मूलक गाम रेदि वे भए एलविलु मूप ।
ता सुत राजा विश्वसह कामदेव सग रूप ॥१॥

विश्वसह के राजा दिलीप

भयो विश्वसह मूप कौ सुत दिलीप तराहु ।
तिग पायो खट्नागपदु प्रभनि द्यौ उत साहु ॥२॥

दिलीप के राजा रघु

प्रगथ्यो नृपति दिलीपकी रघु छितीस अवतसु ।
जिहिते परम प्रसिद्ध हुअ तिहुँ लोक रघुवसु ॥३॥

रघु चरित्र वर्णन

नृपति दिलीप रघु कहत है सतमप पूरन हेत ।
दुरग छोडि रच्छकु फस्थो बहतक सेा समेत ॥४॥
सतमप पदु जय थापनो जात लथ्यौ सुरराइ ।
मारज विषय विचार तत्र दुरग हस्थौ हर नाइ ॥५॥

राजा दिलीपको घोरो इद्र हस्थौ तब इद्रघोँ रघुघोँ जुद भयो तदा की कथा
पाघरो छ द

बहोँ हस्थौ दुरगसु तनु दुराइ अटकस्थौ इद्र तदा रघु बगाइ ॥६॥
तब फस्थौ कुबेर मघनानु डेरि यह दुरग हमारी देहु फेरि ॥७॥
तुम परम जाति महिमा समुद्र पर विषयु करत कत होत सुद्र ॥८॥
तब द्यौ इद्र उत्तर विचारि तुम हरत सुनसु निज दरदि डारि ॥९॥
सत मग चाहत मपु गियादि विनु दुरग जाहु कत करत पादि ॥१०॥

जत्र दंष्ट्र वचन यद्द पस्त्रीमानं
 रघु अङ्कित नुग पायी न जाहि
 तत्र पस्त्री परस्पर दुहन जोर
 नुगज नव्यौ आनुष शरोष
 उद परम पीर छन मह मनाइ
 छांटे गादक रघु धनुषु नानि
 तत्र फलौ दंष्ट्र रघु कहे बुलाइ
 इकु तुरगु छोटि वगभनु देहु
 जत्र फस्त्री विनय पूग्न सुनेस
 मतमप फल पायी टिलीप
 विनु तुग समापत क्रियौ जागु
 निज राज द्यौ रघु कहे बुलाइ
 पितु दत्त राज रघु कुर्वर पाइ

तत्र फस्त्री कीपु रघु परम जानि ॥११॥
 घम जाहि कदा हम सुद रिपाहि ॥१२॥
 उग्यौ गुन बल रघु दुसह घोर ॥१३॥
 उद लगी कुर्वर दादिने कोप ॥१४॥
 सनसुपि पायी उठि रघु गियाइ ॥१५॥
 मत्र छुष्ट भयी मन वज्रपति ॥१६॥
 तुम परम नीर विरयेन राइ ॥१७॥
 मनमप फल पूग्न गितहि देहु ॥१८॥
 तत्र चन्धो कुर्वर आपणे देस ॥१९॥
 जसु भयी जगत दस थाठ दीप ॥२०॥
 पाछे नृप उर उपज्यौ विसगु ॥२१॥
 नृप आप फस्त्री वनवास जाइ ॥२२॥
 म्नि पुष्टमि प्रजा रंजनु जनाइ ॥२३॥

रघुकौ दिग्विजय वर्णन
 पाधरी छंद

कछु दिननि मागि दिग्विजय हेत
 जयधुरी प्रथम पूरवह जाय
 जीत्यौ दक्षिणोसुह निजम जेज
 बहुस्त्री पछाद रघु मिधुमार
 पाछे नरेस उत्तरह थाइ
 वस क्रिये मकर पर्वत सरंग
 ले लै इहि विधि नृप दंड भागु
 तहा द्यौ सकल वसु दिबनि दार
 वगंतहु सिष्यतिहि समय गाइ
 जाच्यो नरेस सुह अर्थ काल
 सोचन लागे जिय रघु प्रवीन
 विनु दंड वच्यौ अलकां कुवेरु
 जत्र भयी भूपु पुर यह विचार

रघु किय प्रयांन दुहु दल समेत ॥२४॥
 दुर्जन पयोध पारहन घाइ ॥२५॥
 जह होत सहग कर मंड तेज ॥२६॥
 भुज जोर जवन दल किय संवार ॥२७॥
 हिमगिरि प्रतापु तीछन जनाइ ॥२८॥
 बहुस्त्री आए नृप औन देस ॥२९॥
 आरंग कस्त्री विजय जित जागु ॥३०॥
 मृदुवासन विनु राधो न आन ॥३१॥
 चउदह करोर सुवरग जनाइ ॥३२॥
 सनमान कस्त्री राजाधिराज ॥३३॥
 दिग्विजय भई शुभ वित्त हीन ॥३४॥
 चतुरंग माज तहे कल घेरु ॥३५॥
 सत्र कस्त्री धनद पूग्न गंडार ॥३६॥

वरततु सिष्य कहँ नृप बुलाइ उह साजु दयो आगट वदाइ ॥३७॥

परततु सिष्य उह दान लेत दीनी असीस सुन जनम हेत ॥३८॥

रघु के राजा अज

दोहा

रघु छितीस उर औतख्यौ राजा अज गुण सीव ।

बचन ॥ चरननि कुल जगत महँ नृपति गवाई गीव ॥३९॥

अज के राजा दशरथ

दशरथु ता उर औतख्यौ सम विधि गुणि अनूप ।

पाछै तिय वियोग बस तजी देइ अज भूप ॥४०॥

दशरथ महाराजा भयो

दशरथ नाम गरिद की महिमा कही न जाइ ।

जहा प्रगथ्यौ पूरा पुरुष ब्रह्म चतुर्विधि भाइ ॥४१॥

परत साकरी सुरनि कहँ जिहि धरपुर पगु धारि ।

भुजवर मगर सहाइ बड़े हने अमित अमरारि ॥४२॥

बा जछु तखरु जगमगतु अजो जगत अभिरामु ।

फनिजन बचन बिहग लो लहत जहा विश्रामु ॥४३॥

दशरथ के सीता स्त्री भइ कौसल्या के कई उमित्रा

दशरथ रूप नृप नदनी व्याही एदिन विचारि ।

कौसल्या अरु केकइ सुभग सुमित्रा गारि ॥४४॥

राजा दशरथ एरुदिन सिक्कार गए सदा भोवे एक तपस्वी माख्यौ

तिनके पिता माता आंधी-अधा दशरथ कहँ सरागु दिधौ कि जुग पुत्र योकरे

इबाकिया देइ छांडहो तदाकी कया

एक समय दशरथ नृपति दल चतुरंग समेत ।

पख्यौ पयानौ महावन विहरत मृगया हेत ॥४५॥

दशरथ कौ सिक्कार वर्णन

कवित

हो न हरित हिय सो रा हरिननेनी मडगेनी सीं बर बारण विचारि है ।

मारु धार दीरघ बिचारि विगानिके निहारिनेन राइहेत जमर सिंधारे है ॥

दलपति औरों शत्रुओं की निकाइ जहाँ जहाँ अत्रलोकी तहाँ साइकन टारे हैं ।
 पेलत निकार महाराजा दसरथराज पदके विरोध मृगराज मन मारे हैं ॥४६॥

दोहा

मृगया पेलत महाप्रसु तमर्गी नदी समीप ।
 अन जानत जल घोष मुनि तथा दृश्यो अवनीप ॥४७॥
 अंधी अंधा मातु पितु मगजोवत जा डोर । ॥४८॥
 तहाँ पधारे नीरु लं दसरथ नृप मि. भौर ॥४९॥
 हाथ जोर जापन फस्त्रो दोसन वेदन आपु ।
 पुत्र सोक ता प्रन द्यौ नृप कहँ दुहु न नगपु ॥५०॥
 पुत्र सोक चौ चिरद्वर्द प्राण हमार ज्ञात ।
 सुतु वियोग तुम तनु नजहु त्यों तरुनई विहात ॥५०॥

पाधरी छंद

इहि भाँति भयौ तापसु सरापु पाछँ आये नृप नगर आपु ॥५१॥

विनु पुत्र भए राजा दसरथ नवहजार वरस राजु क्रियौ
 पाछँ पुत्रके लिये जग्य आरंभ्यो तब दसरथके घर रामचंद्र अवतार लियौ
 रावन के मारिवे कहँ तहाँकी कथा

छंद पाधरी

नो सहस्र वरस विनु सत नरेस भोगियौ राज तजि औधिदेस ॥५२॥
 विनु तनय बन्धौ नृप उर विरागु तत्र गन्यौ आपनीं हीन भागु ॥५३॥

घनाछरी छंद

भावत न हाथी हय हाटक हरिननेनी द्वार हीर भूपन भंडार भोगुभोन कौ ।
 दलपति दिन दिन वीतत तरुन वैस छिन-छिन छूटत भरोसो सत होन कौ ।
 महापति मुकुट महीप दसरथ मनु डावाडोल डोलतु पतीआ जेसँ पौनकौ ।
 मलेविनु राज निजु लागतु न नीकौ ओसे फीकीं जेसँवनु विहूनौ एक लौनकौ ॥५४॥
 इहि बीच दसाननु दुसह तेज दिग विजय करी पुरन जेज ॥५५॥
 दिग जीति तहा दुर पुर पधारि आधीन किये सब दानवार ॥५६॥
 जत्र बन्धौ अमरपुर दुपु अपारु तत्र कबौ सकल देवन विचारि ॥५७॥

विनु दीनुबधु करुना निधान इदि समय आपनों कौन आन ॥५८॥

सत्र देव छीरनिधि तीर जाइ जगदीश, सरन ताकौ बनाइ ॥५९॥

रावन के प्रास देवता सब छीर समुद्र सेपसाई परमेस्वर के सरण गए
तहां को दोहा

जिही देवगनि छीरनिधि पहुँच्यौ श्रीपति पास ।

वचन सया साई तहा जागे जगत निवास ॥६०॥

कवित्तु

पारख्य । दंग जीति दस कषरु पधारि नाक लीगनितें निधिल निकारि देव दयौ हैं ।
दलपति आपनैं आपनैं अधिकार छोटे छीनबल बापुरे मलीन मन भए हैं ॥
सबनि समेत विधि नासब विचार तब वारिनिधि श्रीपति समीप असें गए हैं ।
सैम मग गाई अनेसें भेस घने घाम घनीह्यु ताकत तरनि तेन तए हैं ॥६१॥

अमर त्रिवेद रिचान सौं प्रहु विधि कख्यौ बपानु ।

कृपा कटाउन सौं चिते तत्र घोख्यौ मगवानु ॥६२॥

कु छलिया छ द

भगवानुवाच

जैसे हरिनाकुस प्रबलु तथ्यौ मजे जु जनाइ ।

असैं अब रायन तपहु कमलासनु घर पाइ ॥६३॥

कमलासन वर पाइ तेज तिहु लोकन धायो ।

मेरे सोधत सब निरधि देवनि दुपु पायौ ॥

दसरथ नहु कहाइ हनी रिपु राकस असें ।

इहे नृसिंह बपु हथौ प्रबलु हरिनाकुस जैसे ॥६४॥

इहे अतर दित महा प्रभु दे सब मुरनि जनाउ ।

नप दसरथ महें आपनौं प्रगट्यौ परम प्रमाउ ॥ ५॥

दसरथ राजा कहें पुत्र के लीने उह रिप्यशु गि रिपीखर जग्य करावौ
सहां जग्यके जग्निकु बते एहु पहर निकरगौ धीरलीन उह धीर
दसरथ कौं दोनी दसरथ आपनी ह्रीन कहें बांटदोनी तब तो यौश्री
गर्भवती भई सहां श्री कथा

रिपिगु गि रिपि आइ तहा आरग्यो इहु जागु ।

एव सुन कारन मत्र पुन दे दे देवनि भाग्य ॥६६॥

जहा करत जागु दसरथनंदु सत्र गिपिन सष्टत कुत्र कुमद द'हु ॥६७॥
तहां दर्श दृष्टिना विविध भांति अगनित सुवरन गत्र तुग्गयांति ॥६८॥

दोहा

अग्निकुंड महुँ एकु नहां प्रगट्यौ पुरुष उदार ।
कनकधार पायस भस्थौ त्यों दृष्टु कर चारु ॥६९॥ ॥२६॥

तिहि पुरुष प्रथम चरु गुन जनाइ उट अनु दगौ नृगर्को हुत्तार ॥७०॥
नृप ल्यौ अनु आनंद पाय उट चरु वांट्यौ रनिवाग जाय ॥७१॥

दोहा

पटगनी कौसल मुना प्रिया बेंकई नारि ।
दयौ दुहुन कहुँ भागु मम दगरथ नृरति विचारि ॥७२॥
कौसल्या अरु केकई दुहुन अदर निजभाय ।
सीति सुमित्रा कहँ दयौ सौरत निज अनुरागु ॥७३॥
गर्भवती तीन्यो भई तेजोमय चरु पाइ ।
कह्यौ अगाउ भूपर्षी सुप पिय रई जनाउ ॥७४॥
चारि भांति व्हे सवनि उर वस्यौ जगत शुभ एकु ।
जैसे मल्लि तरंग महुँ हिमकर होत अनेकु ॥७५॥
रितु वसंत मधुमास महुँ तिथि नवमी सुभुवार ।
कौसल्या उर ओतस्थौ आपु जगत करतारु ॥७६॥

राम जन्म कौ उत्सव वर्णन

श्रीवनि सुनत रामलला को जनमु कलु गाइ-गाइ गूंगौ अगाऊ बहरातु है ।
आंधरौ देपन तमासी उमहतु विनु पाइनहू पांगुरौ पपेरुलीं उडातु है ॥
दलपति लैलै दानुं मांगनीं देतु बढ्यौ इहार्ली हुलासु कोहु फूल्यौ ना समातु है । (
कह्यौ न परत पुरवासिन के लोगिनकौ गातकौ आनंद किधीं आनंदकौ गातु है ॥७७॥

दोहा

नृप दसरथ देख्यो कुँवर सत्र अंगनि अभिरांमु ।
त्रीलु जगत मंगलिनि कौ भस्थौ रासु वह नामुं ॥७८॥

केकई उर ओतखी भरथ परम गमीह ।

जने मुमिन्न नमल सुन लपन सत्रुघन बीह ॥७६॥

पाघरी छंद

सुत जनम बढ्यौ अनहु अपाक तूप कखी वेद मत लोक चार ॥८०॥

सर्ह दयौ द्विजनि कौं अमित दानु अभिलापन पूर्यौ पा समानु ॥८१॥

चारन यचन धि भाटनि समेत सग मन भाइ बकसीस लेत ॥८२॥

दोहा

बालवेश चारखीं सुभन विहरत सु दर गात ।

रूपसिंधु नैननि निगधि तरनारी न अघात ॥८३॥

चारिनहु मह परगपर यद्यपि प्रेम नु मगु ।

तयपि राघव लपन सगु भरथ सनुघा सगु ॥८४॥

राम की बाल दसा प्रणनु

पेटल ते कटुला कमनीय भडूला लट्टे लटक मुप ऊपरि ।

ओठनि बीच डुरी दतियां दमकै कजरा अपियानि दुहु पर ॥

मुसिक्यानि महामुनि मानसचोर सरोज मईगति आंगा भूपर ।

वारत कोटि मनोजनि माइ दल्पति श्रीरघुनदन जू पर ॥८५॥

चार चितौनि हरे हियरा अपियानि सोहोड परे जल जातनि ।

* नैनु कसी अघराति के बीच लसे दतियां विहसे छनि बातनि ॥

दल्पति राघव रूप ले उकठे तरु होनलगे फर पातनि ।

मोद महोदधि रामलला मुपु चूमति माइ समाइन गातनि ॥८६॥

धनाछरी छंद

ताक तिलकु चक चौधत चीकौंचार चहु कोदबिधुरे कुटिल कच माल है ।

पीरुयागे अघर परम कमनीय करत ललित कपोल लोल लोचन विछाल है ॥

दलगति कवि रघुपति मुप चद और चितवन चकित चकोर चप जाल है ।

) साधरे सलोने अग भैरानि के सग सग ओघघोरि पेरत फिरत रामलाल है ॥८७॥

तेसैह ललित लोल कुडल लसत वान कचिर कपोलनि हमत मुप मोर है ।

वारिध वरण ता चीकुने चार दल्पति लोचन लगाति दौरि दौरि है ॥

पगिया तनक बांधे ताक पिजारी कंधे ताक धनक सांधे लेत चितचोर है ।

तनक तनक लु भैयानि के सग रांस ओघघोरि पेलनफिरत चकघोरि है ॥८८॥

विश्वामित्र रिपोश्वर के जग्य महुँ राक्षस उपद्रह करही तिहिके लिये
 विश्वामित्र रामचंद्र कौं भागन आए तब दसरथ राम लक्ष्मण दुहनको
 विश्वामित्र के संग विदा कौनो तहां को कथा

दोहा

एक दिवस दसरथ जहा बैठे मभा समाज ।
 तहा पधारे गाध सुत ग्यांन सिंधु रिपिराज ॥८६॥-११२६॥
 व्ही आगे दसरथ नृपति मन वच किये प्रनाम ।
 विनय सहित रिपिराज कहँ पधरायो निज धाम ॥९०॥

पाधरो छंद

बैठारि रतन आसन अनूप पूछी बहुविधि कुसलात भूप ॥९१॥
 तत्र वचन कछौ कौसिक मुनिंद सत्र ठौर कुसल कौसल नरिंद ॥९२॥
 कुसलातन केवल जग्य बीच जहां करत विघन क्रव्यादि नीच ॥९३॥
 तहि हेत राम लक्ष्मनहि देहु रघुवंस जोग जसु जगत लेहु ॥९४॥
 यह छुनत विकल व्ही गयो गातु जिय सोचनि ज्वातु न द्यौ जातु ॥९५॥

दोहा

देत सोक अनदेत सुत परम सापु कुल होइ ।
 रह चिन्ता चौगान महि भयौ भूप मन गोइ ॥९६॥
 तत्र वमिष्ट वोल्यौ वचनुं रिषि प्रभाउ समभाइ ।
 राम लक्षण दोऊ कुंवर देहु सोच त्रिसराइ ॥९७॥
 गुरु वचनि दसरथ नृपति धत्यौ धीर उर मांहि ।
 कौमिक कहँ सोंपे कुवँर राम लक्षण गहि वांहि ॥९८॥

राम लक्षण विश्वामित्र के संग जाइ जे चरित्र कौने तिनको वर्णनुं
 सबैया

पितु आइस कौसिक संग पधारि उधारि सिला सुरलोक पठाई ।

ताडका राक्षस की रमनी सु हणी जग नीवनि की सुपदाई ॥

मपदेत गिसाचर गोतु हन्यौं दिज देवनि की विपदा विनसाई ।

तोख्यौ पिनाक सरामनु राम स्वयंवर श्रीय वधू परनाई ॥९९॥

तोख्यो धनुष रघुवस मति सीय बधू परनाइ ।
 घटुरत रोखी राम कहँ भृष्टादा मग आइ ॥२०॥

पाधरी छंद

अवलोकत रांसु प्रताप धांसु बोल्यो सकोप भारगन रामु ॥१॥

दाहा

धनुष

करसराम उवाच

सुनस लख्यो ह्रम तिहू पुर नीरा चापु चडाइ ।
 यत्ने बली मेरी धनुषु म सुद्ध सद्धु तवाइ ॥२॥

सौरठा

कन्ति भारगव चापु रामचढायी बाहुनर ।
 दयो सुजउ परतापु ओर तीसरी रमंगति ॥३॥

पाधरी छंद

इदि भाति दख्यो भारगन दापु घटुख्यो आय निज नगर आपु ॥४॥

राम कहँ दसरथ राज देण लागे तदा केकई बनवास दिवायी तदा की कथा

दाहा

निरपि आपरी विरधइ दसरथ बस्थी विचार ।
 सन्नगुन लाइक राम कहँ सापन भूतल मारु ॥५॥
 केकई प्रतिभूल बहँ सोति दाहु उपजाइ ।
 द्वे चर मागे पाठके दसरथ कहँ समुझाइ ॥६॥
 लपन सतत चोदर बरप राम करहु यावासु ।
 भरथ सनुषा दुहुन को सोंपहु औधि विवासु ॥७॥

बनचरत के सवैया

कहई कूर वृमच टयो पियकोननि काग वास जनाये ।

राजहु फालु अजाजनु जा यो प्रियाचस प्रीतम पूत पठाये ॥

धीरधुनाथ सिधारतहीं प्रति धामनि छोटे बहे बिलपाये ।

राम की रूप तिकाइ फदे पुर वासिनहु मा सीथल गाये ॥८॥

सौरठा

सीता सहज सनेह राम संग काननि चली ।
संपति मनहु सनेह गुननि इंधी पाछें लगी ॥६॥

दोहा

विद्युत्त राम वियोग वम प्रगड्यो तापम सापु ।
गौन कख्यो सुर ओक कहं मोक्षवंत नृप आपु ॥१०॥
राम गौनु कानन कख्यो दसरथ तख्यो सरीर ।
कै कैयतें आन्वो प्रजनि औध भरत वग्धीर ॥११॥

सोऱ्ठी

लघ्यौ भ्रात विनु भौनुं औध पधारत जहँ ।
कख्यौ ततछन गौनुं लेन हेत रघुनाथ कहँ ॥१२॥
चित्रकूट वन जाइ राम चरण परसे भरथ ।
दसरथ सोक सुनाई राज निवेदन कख्यौ जहँ ॥१३॥
तात मरनु श्रौननि सुनत बहुविधि कख्यौ विलापु ।
धीर चित्त रघुवीर तत्र बचन कख्यौ यह आपु ॥१४॥
तजी देह जिहि नेह वम मेरी होत वियोगु ।
ता पितु अग्र्यान जां भन्नी कहँ कयों लोयु ॥१५॥
कख्यौ जतन बहुविधि भरत घख्यौ न उर रघुराज ।
वहै निरास तत्र पादुका मागी पूजन काज ॥१६॥
भरतहि औधि पठाइ तहा सीता लगन समेत ।
कख्यौ गौनु रघुवंस मनि दंडक काननि हेत ॥१७॥

वनवास चरित्र वर्णनुं

छंद पाधरी

मगजात एक राकस विगधु तिहि डुहुन महि सीय साधु ।१८॥
तत्र डुहुन वीर राकसु प्रचंड वर वान कख्यौ तनु पंर पंर ॥१९॥
तहा कुंभ जनम उरदेस पाइ थिर पंचवटी थिति करी जाइ ॥२०॥

दोहा

एक दिवस रांवण सुसा सूपनषा दिग आइ ।
सुरत हेत रघुनाथ कहँ जाच्यौ रूप बनाइ ॥२१॥

एष नपदि कृतस्य दयौ तत्र रघुनाथु बिचारि ।
 माता वाचा कर्मता हौं न रमन्तु पर गारि ॥२२॥
 लघु मैया मेरी इहा सग रहत वन वास ।
 पूरा करन मनोरथदि तू पधार ता पास ॥२३॥

पाथरो छंद

पद वचु कहत रघुकुल प्रदीप वह गई तहा लछमण समीप ॥२४॥
 आदरी न जय लछमण प्रवीन तत्रभइ दुहु दिखमान हीन ॥२५॥
 भाई महुर्या रघुनाथ पास तव हसी जातुकी मृदुल हास ॥२६॥

दोहा

हसत सीय ततछन तहा सूनया सरमाइ ।
 धै सकोप डाटण लगी राकस रूप दिपाइ ॥
 लक्ष्मण करी त्रिरूपता तामुप मथ्य न तीन ।
 माहु राकमनु किसिरी मई तासिका हीन ॥२७॥

छंद पाथरो

तव सूनाया निज वास जाइ दुप कथी सबि मधुन सुनाइ ॥२८॥
 तव सकल निमाचर दुसह तेव रघुकुल प्रनीप पर करी रेज ॥२९॥

दोहा

परदूया त्रिसारादि तव राकस सेन अपार ।
 राम अदेले समर महँ किय सकल सघार ॥३०॥
 सूर्यनया रावन पास पुकारो रावन घोता हरु करी तहाकी कथा
 एतया मुप बंधु बंधु सुन्यौ दसान बीर ।
 मृग सकल राकस तहा पटायो हेम सरीर ॥३१॥

छोरठो

हेम कुरगा साथ गए उडुधि रघुनाथ जव ।
 ता औपर दगमाथ ही जनक ताना तहा ॥३२॥

दोहा

भाइ सघत्रय गीय बिजु लक्ष्मी पर्णमय मेहु ।
 बिरद शिष मह मगत भई गरी वल्लभा देहु ॥३३॥

विरह विकल व्हे चहुं दिसि हेरत सीता वाम ।
 सर सरितानि लतानि कहँ पूछत राघव राम ॥३४॥
 मिय हेरत रघुवर दुहुं लप्यौ जटाइ विहंगु ।
 पधु रोकत राघव कख्यौ प्रान सेप वपु भंगु ॥३५॥
 सीय हरी दसमाथ यह वचन विहंगु सुनाइ ।
 थापु गॉनुं सुरपुर कख्यौ राम राम रटलाइ ॥३६॥
 छूत देह जटाइकी कख्यौ गंग वहु सोक ।
 मनहुतात दसरथ नृपति थाजु तज्यौ भुअ लोक ॥३७॥
 क्रिषामिंधु प्रभु दूसरो राम समान न आनुं ।
 निहि विहंगुहूँ कहँकख्यौ कर्न तिलोदक दाजु ॥३८॥

छंद पाधरी

वन मित्यौ एक राकस कबंधु यह हन्यौ राम जग दीनबंधु ॥३९॥
 व्हे साप हीन तत्र दिव्य रूप तिहि कख्यौ इहां सुग्रीव भूप ॥४०॥
 यह वचनु सुनतु रघुनाथ आप तत्र कख्यौ कपीसुर संग मिलापु ॥४१॥

दोहा

स्त्री विरही सुग्रीव तहँ धिनु सीता रघुराइ ।
 एक विधा वाढ्यौ दुहुन प्रेम पगपग आइ ॥४२॥

छंद पाधरी

सुग्रीव कख्यौ निज दुपन जाइ दारा धनु वाली ल्यौ छुड़ाइ ॥४३॥
 तुम हनहुं बालि रघुवंस नाथ हम सीय सोधि कहँहोंहि साथ ॥४४॥
 तत्र हन्यौ बालि रघुकुल प्रदीप सुग्रीव किये कपि कुल महीप ॥४५॥
 अचर पठाइ सिय सोध हेत संग चल्यौ कीसु सेना समेत ॥४६॥

दोहा

चहुं ओर हेरन सियहि वानर स्वामित काज ।
 मनहुं आपने मनोरथ पठये श्री रघुराज ॥४७॥

छंद पाधरी

हनुमानि निकट संपाति आइ तिहि विहग दई सीता बताइ ४८॥

सीय सोध पाइ हउ मीन धीर नाघ्यौ सगुनु गभीर नीर ॥४६॥
 हउ मान लरु पर लपी सीय चहु ओर दुसइ क्रव्यादतीय ॥५०॥

दोहा

पौन सुभा परनीति कहँ तापति तहा पधारि ।
 हेम मुद्रिका राम की दद सीय करि डारि ॥५१॥

छंद पाधरी

रघुनाथ मुद्रिका सीय पाइ आनद न उर अतर समाइ ॥५२॥
 सिंग कही लपिन पवमाता पूत तुम परम धीर रघुनाथ दूत ॥५३॥
 रघुनाथ कुशल आनि सुवाद दुप सिंधु मगन उदख्यौ आइ ॥५४॥
 यह रतनु जाइ रघुनाथ हाथ दीजहु प्रतीत कहँ कीस साथ ॥५५॥
 यह रतनु पाइ साया मृगेस सचारु कख्यौ उपवन प्रवेश ॥५६॥
 तहा तोरि अमितफल पात फूल दल मन्यौ सफल उपवनु समूल ॥५७॥
 अज्ञानि निसाचर दल सधारि तहा कख्यौ गोंनु रिपु गगनहारि ॥५८॥
 पवमान पूत प्रभु निकट आइ परसे सुनीत रघुनाथ पाइ ॥५९॥
 पट्टुचाइ रता सीता सदेसु कपि हरौ रामु चिता कलसु ॥६०॥
 मालद राम पूरन सनेइ सिय विरइ दसा मानहु स देह ॥६१॥
 एष सिंधु मगन बहे निज सरीर तब वचनु कही रघुवस धीर ॥६२॥

दोहा

या सुन कहँ पलटी नहीं जिन जगु ल्यौ टटोहि ।
 उपहारन पवमाता सुन रिणी कख्यौ तुम मोहि ॥६३॥
 सीय सोध सुनि औधपति राज सेग बरु धीर ।
 दसकधर बध हैत प्रभु चले पयानिधि तीर ॥६४॥

राम यात्रा वगन

सवैया

फलमत्स्यौ कउपु सहस फदल मन्यौ ससनि न चख्यौ शुभ सचारु समीरकी ।
 अमित पदार चराति चक्रचूर धराधूरि बहे कहँ पूरा प्रजाहु सिंधु तीरकी ॥
 दल्पति त्रिगुण दिखानि दहलत दहलत नभु धीरज छूटहु मझाधीर की ।
 बल्लल बाग तर सुगट गाग्यज गात्रि रेंग्यौ सात्रि सूरनु कटहु रघुधीर की ॥६५॥

दोहा

वानर चमू समेत तत्र श्री रघुवंस प्रदीप ।
आपु प्रथम डेरा कश्यौ लवण समुद्र समीप ॥६६॥
सिंधु तीर रघुनाथ कहँ मिल्यौ विभीषनु आह ।
दई निसाचर साहिब्री परम प्रीत रघुराइ ॥६७॥

रघुनाथ कौ सील वर्णन
सबैया

तात की बात क औध तजी वनजात कुमातके बोल विसारे ।
केवट हू सो मितार्ई ठइ करषोंछै विहंगम गात हुपारे ॥
बैरी के बंधु हि रानु दयौद विरोध तहू रिपु राकस तारे ।
हृयांलगु सील पयोनिबि रामजू भील के भौननि आपु पघारे ॥६८॥

दोहा

सवनि बोलि पूछ्यौ प्रबनु जलधि हेत रघुवीर ।
बल प्रगटत तत्र आपनौ सुग्रीवाटिक भीर ॥६९॥

रघुनाथ समुद्र के लोने मंत्रु पूछ्यौ तव बड़े जोद्धा वानर आपनौ आपनो बडु
कहन लागे-प्रथम सुग्रीव के वचन

सबैया

काल सम घाइपु निसाइ रघुराइ रिपु रावनु संघारिवे कौ मेरे मन रोचु हैं ।
कह दलपति सत जौजन सकल सिंधु रिपिसरि सेपिवे कौ नैकहुं न सोचु हैं ॥
वीर मनि बालि बलवान के अनुज हम जांकी दापुहुअनु भयौ ससाइयोचु हैं ।
बार बार तुं मसौं जनाइ न सकल कछु यातें प्रभु जानकीस रावरौ सकोचु हैं ॥७०॥

अंगद के वचन

बालि सुत हाथ कौ पिलौना दसमाथु कीनौ सोइ गहिलंककौ गढोई अभिमानकै ।
साहिब सुजांन मनि नैकन त्रिलंबु करौ कहहुं पुकारिहौं सुनतु सबु कानु कै ॥
जानुकीरवनि रघुराज सौं रजाइ पाइ बैरी वरुं मीडि मारौं नीर निधिपांतुकै ॥७१॥

द्विविद के वचन

सेवकु सुग्रीव कौ द्विविदु सूर दास नैक विरचौं तौरन रापिसकै काहिकौ ।
कहै दलपति देव दानव दरेरि मार्गें रावनु रिजालौं राड रातिचर आहिकौ ॥

धीर रघुवीर राय रोपसँ करी समुद्र सेत जाधे समुके अगम जठ थाहिकौ ।

जान मनि जानकीस रावरे प्रताप वर सोपों सरितेशु करे पेरिवेकी पाहिकौ ॥७२॥

जामवत के वचन

भाकेँ तुम साहिव साहाँद सत्र ठोर ताकेँ सामुदे गनीमु कौनके गौर गारि केँ ।

दल्पति प्रभु पाइकौ भरौसौ करि मारौ भरि रोप राहु रावनु पचारिकेँ ॥

धीर बिरदेतु तौ हीं रीछपति जामवत गाजे गहि लक बरमूलतेँ उपारिकेँ ।

जागकीरवन रामकी रजाइ पाइ भूरौ करी भारसौ जलधि जलु जारि केँ ॥७३॥

नील के वचन

जागकीरवन पाइ परसि दुनीत बर रेचिचर चपरि चलाऊ जम औकही ।

कहै दल्पति कर कठिन चपेट चोट कोटुदलि चोहनि चवाऊ रिपु थोकही ॥

तौ हीं नील आइसु निरधि निरसक तन लपति खनि रुवाऊ पति सोकही ।

स्वास पौन पूरन पयोधि पेल पातालको भूमिकरौ उरघ उदधि ऊर लोकही ॥७४॥

इनुमान के वचन

कहौ तौ जलधि गाँधि ल्याऊ जाइ जानकी कौ रावरे प्रतापतेँ सकेगो समुहाइको ।

कहौ तौ पहारनि सों पूरा पयोधि पाटि मीढौराहु रावनु बरौशुमनभाइको ॥

रावरी रजाइ तेँ दहाऊ दसमाथ पुष अैसीकरौ ता पन कहाऊ सुतवाइकी ।

पैजके कइतु हूँ छितीस मनि जागकीस मेरें जिय परम भरौसौ प्रभु पाइको ॥७५॥

लछमन के वचन

आइस आस रहौ चुपचाप कहा प्रभुपास महा इडु नाधौ ।

जेर करौ रा रावनु राहु जहीकर कोपि सरासनु साधौ ॥

लक दरेरि दलों निरसक कहौ जितनी तिताी सत्र बाधौ ।

ने सुकु राज रजाइसि पाइ पहारनि पूरि पयोगिनि बाधौ ॥७६॥

रघुनाथ समुद्र के तीर तीनि दिन बसे बैठे रहे समुद्र से पैँडो मागिये को बिनती करन लागे

रघुनाथ की बिनय

सवैया

जागकी हरहुदिय मागत सल्ल द्रुम जानत दिनुन बरी बाहिरौग बरकी ।

कहै दल्पति दसरथकी तिमारी प्रीति मन बन करत सहाऊ निविचरको ॥

वार वार वार मांगत निशेरि मगु जानदेहु व्हें हे पुनि नातर उपाऊ रिपिवरकौ ।

आपने मजेज कत करत अनेसी अनी सागर निवारि नांतौ मिगरी नगरकौ ॥७७॥

परमेश्वर व्हेंके समुद्रां विनती करन लागे तहां कबि उक्ति

सवेया

जा पद पंकज लोचन वासत्र सोभत सेप रगातल पेटे ।

सेवत संभु समाधिक के कमलावन विस विसेसर जेटे ॥

बाहि जपे नर देव दलपति नाऊं लिये अध जात फटेटे ।

ते प्रभु पूरन जानकीनाथ महा दसखो मगु मागत वेटे ॥७८॥

जब समुद्र न मिल्यौ तब क्रोधुके लपमण सौं रघुनाथ वचन कएँ तहांकी कथा

दोहा

नृपकुल कमल दिनेस लषि जलनिधि कुटिल सुमाऊ ।

चित्तै लपन तन रोप मन वचन कएँ रघुगउ ॥७९॥

सवेया

बोलि मृदु वचन विनीत ज्यों ज्यों होत हम त्यों त्यों आपु उरध चलतु नभु चाहिहैं ।

सगर सनेह सोपियतु न सकोचु मानि इहैं जिय जानि कानि पाटली निवाहिहैं ॥

कहे दलपति धाजु आपुनौ छजसु वेचि बीस विसैं नीच मीचु आपनी विनाहिहैं ।

जोलीं लछिमन न सरोस सरु सांधियतु तोलीं सरितेसु न सरन अवगाहि हैं ॥८०॥

जब रघुनाथ क्रोधतैं वानुं संधान कीनो तब समुद्र कांप्यौ तब समुद्र

ब्राह्मण को रूप धरि रघुनाथ कहँ आइ मिल्यौ तहां की कथा

दोहा

दख्यौ दसानन दापु जिय मल्यौ महोदधि मानु ।

सीतानाथ सरोस जब गख्यौ सरासनुं वानु ॥८१॥

सवेया

ग्राम पुंज पूरन पुं हमि आसमान छ्यौ जातु धान नगर समोइ गयौ सोचहीं ।

वारि वीचि वीचनि विकल जलचर जीव उछलि पछलि अध ऊरध बिलोकहीं ॥

दलपति दहल दिगंत ह्थिआनि हिय दहसति दीरघ सकल हरितानहीं ।

इच्छ्यौ दमकंधर सहित सरितेसु सरु धख्यौ राम जापन सरासन सरोसहीं ॥८२॥

जानकीरवन रिपु राकम बदन हेत कटक समेत मगु मागत निहोरिके ।

नीरधि निलजु रघुवीर सँ विमुष न्हे केँ हाती किगौ नाती दमरथ नेहु तोरिके ॥
बैचति नृपति के सरासु सरोस तन मिल्यौ मुक्तानि लेँ सहमि सिंधु दौरिके ।

जानि जिय हानि भगवत भय मानिजमु दयौआनि आपनौ सुजसु करजोरिके ॥८३॥

समुद्र रघुनाथ को रतुति करन लागौ अरु कहन लागौ मै तिहारो अपराधो हो मोहि बांधिये
सवैया

जगत जनक अज आपही अमर हेत भीतरे अवनि दसरथ घर आनिजू ।

के केँ जोग जतन अपत जाहि जोगी तेइ तलफत तियकौ बियोग्य मन मानिजू ॥

द्वलपति गुननि कौ पावत न पाव चाव गावत मुजसु वेद बचन बपानिजू ।

धरम धुरधर करम करताव तुम परम पुष्य परमारथ के दानी जू ॥८४॥

दोहा

गुनहगार कहँ बांधियतु नीति कहत सब कोइ ।

यह विचारि रतुनसमनि बधनु मेरी होइ ॥८५॥

छंद पाधरो

यह बचा सुनत रघुवन राइ बाप्यौ समुद्र पर्वत मगाइ ॥८६॥

ता पथ पधारि सेवा समेत देख्यौ गढ रावनु इना हेत ॥८७॥

रनु मच्यौ परस्पर दुहुन आइ उत दसरथर इत राम राइ ॥८८॥

युद्ध वर्णन

राकसनि हउत वानर प्रचड वानरनि करत रिपु पड पड ॥८९॥

भूधरनि मत्त गज चूर हात वृक्षत दुरग रन कधिर छेत ॥९०॥

रजनिचर चावत रिमनि चोह किलकत वानर मटकाइ भोइ ॥९१॥

धूमन भट घाइनि पीरपाइ दीरत कचध रन दुसइ भाइ ॥९२॥

तब राकसन सोता कहँ रघुनाथ कौ झूठी मत्तक दिपायी

तब सेत। मूर्छित भई-तब रावन की बहन त्रिजटा धाइकेँ समाधान कीनौ तहाँ की कया

छंद पाधरो

राकसन झूठ रघुनाथ सीसु सीय निकट बह्यौ यह जानकीसु ॥९३॥

सीय गिरी दुभा माया निहारि यह कशो जहा त्रिजटा पधारि ॥९४॥

राकस माया सब झूठे लेपु रन मध्य ताजु रघुनाथ देपु ॥६५॥

हित वचन सुनत सिय व्हे सचेत शुभ चिंतन लागी राम हेत ॥६६॥

रावण कौ वैटौ इंद्रजीत राम लपमण कहँ उरगपास डारो तब रघुनाथ

गरर कौ छमिरनुं कियौ तब सर्प फांस झूटी तहां की कथा

दोहा

इंद्रजीत रावन दुअन समर सामुहे धाइ ।

राम लपन कहँ छन विकल कस्थी असुवगराइ ॥६७॥

सोरठा

ता औसर रघुराइ सौखी वाहन विहग पति ।

गरइ ततछन आइ सिथल नाग बंधन कस्थी ॥६८॥

रावण लछिमण कहँ सेहथीमारी तब हनुमान पर्वत समेत संजीवन मूरि ल्याए

लछमण को पीर दूर कीनी तहां की कथा

पाधरी छंद

तब आइ दसानन रोष भांड मास्थी लछनु रन सकति घाइ ॥६९॥

जत्र लख्यौ लपन उरसकति घाउ तत्र गिख्यौ विकल तन राम राउ ॥७०॥

हनुमान संजीवनि ल्याइ मूरि तन पीर ततछन करी दूरि ॥७१॥

तब लपमण इंद्रजीत कौ धनुष काखी तहां की कथा

छंद पाधरी

बख्यौ लपन रन रोस आयु द्वै पंड कस्थी इंद्रजीत चापु ॥७२॥

रावण कौ भाइ कुंभकरन जुद्ध करन आयौ सुग्रीव कहँ बकस्थी तब सुग्रीव नाक कान

ले भाजे घहुरि रघुनाथ कुंभकरण कुं मास्थी तहां की कथा

छंद पाधरी

दसमाथ कुंभकरनहिं जगाइ पख्यौ ता औसर जुद्ध जाइ ॥७३॥

रन कुंभकरन राकसु पधारि सुग्रीवु गह्यौ तिहि कर पसारि ॥७४॥

आयौ सुग्रीव ता पन छुडाइ रिपु कुंभकरन नावा नसाइ ॥७५॥

दोहा

कुंभकरन रघुनाथ कहँ रोक्यौ सनसुष धाइ ।

जानि उनीदौ राम सर राख्यौ समर उआइ ॥७६॥

बहुर रावनु रामचंद्र सौ पुत्र करन निकस्यौ तव रघुनाथ कहँ पयादौ जानि इद्र रघु
कवचु पठ्यौ तव रघुनाथ रथपर चढिके जुद्ध कस्यौ रावन कहँ मार्यौ तहां को कथा

छंद पाधरी

महुस्त्री दसकधर जुद्ध हेत निकस्यौ सरोस कींगय समेत ॥७॥
समुहाइ तहा रघुनाथ और रन रच्यौ तिसाचर डुमह घोर ॥८॥

सौरठी

रथ विनु रावण राइ रूप्यौ रथी लनेस जत्र ।
मातलि हाथ पठाइ द्यौ कनचु तत्र इद्र रथु ॥९॥

दोहा

रघुनदन रथपर चढत भई ओप इहि भाति ।
जैसे वादत विमल नम गृता जलधर कति ॥१०॥

रावण रामकहँ दाहिणी बाँह बाण मार्यौ तव रघुनाथ रावन कहँ छातो बाण मार्यौ
तव रावन से हथी चलाइ रघुनाथ टूक टूक करी तहां को कथा

दोहा

दछिन भुज रघुनाथ कहँ हथी दसाननु वांनु ।
माहु चला अतकपुरी घर्यौ प्रथम प्रस्थानु ॥११॥
राम बाण दसमाथ उर लभ्यौ ततछन जाइ ।
माहु लकपति मींचु कहँ मारग द्यौ पताइ ॥१२॥

छंद पाधरी

सैहथी चलाइ एकईम सतपट करी रा जागकीस ॥१३॥

तव रघुनाथ मझामु चलायो रावनके लग्यौ रावन सत्र्यौ तहांकोकथा

पाधरी छंद

तव राम ब्रह्म सांझु चलाइ रा हथी दसाननु दुसह माइ ॥१४॥

दोहा

प्रानहीत रावनु गिख्यौ पूरा जन्मी अनीति ।
देपत हु राम अमर गन करत ग मरा प्रनीति ॥१५॥

रावन कौ अधिमान वर्णन कविको उक्ति

सर्वथा

हारथी विभीषनु सीपत्र देहित भामिनी भोन अबोल न मांड्यौ ।

आयी महोरिपु सिंधु के कूटनि बालि बली जिहि वाननि कांड्यौ ॥
सेतु पख्यौ सुनु वंधु पख्यौ रज थानीं हख्यौ नतकां दद पांड्यौ ॥१६॥

तव रघुनाथ लंका भीतर गए विभीषन कहैं राज दिवौ सीतासौ सोह लेकें पुष्यक रथ
चढाइ धमोघ्या आए इग्यारह द्वार घरस राज क्रियौ तहां की कथा

रज दुमह दसाननु हन्यौ राम निज गोन कख्यौ लंकेम घाम ॥१७॥
तहां किए विभीषन लंक ईस निज बोल निवाली जानकीस ॥१८॥

दोहा

लई हुतासन सोध सिध जग वननी निकलंक ।
लोकनाथ व्हे राम हूं करी लोक की संक ॥१९॥
पुष्पकरथ आरुढ व्हे श्री रघुवंस नरेस ।
सिय समेत उछाई मन आए कौसल देश ॥२०॥
दुपु वरन्यौ बहु प्रथम बहुख्यौ सुपु संजोगु ।
अत्र मोपै न कही परे सीताराम वियोगु ॥२१॥
संवत्सर ग्यारह सट्स ११००० राजु भोगु रघुनाथ ।
गोन कख्यौ वेकुंठ कहैं लई औघ सब साथ ॥२२॥

रघुनाथ के द्वेषुत्र-कुश-लय-कुशराजाके राठौर वंसु लवके और राजा

कुसके वंस वर्णन

दोहा

कुस लव द्वै रघुनाथ सुत सफल भूप सिरमौर ।
कुस कुल महैं राठौर नृप लव कुस राजा और ॥२३॥

कुसके राजा अतिथि

दोहा

बुस नरिंद उर औतख्यौ अतिथि नाम नरनाहु ।
जा दर सूरज सोम कहैं कबहुं त्रत्यौ न राहु ॥२४॥

अतिथि के राजा निपथ

अतिथि बरी निपथ सुता सब अगनि कमनीय ।
निपथ नाम सुत औतख्यौ जहा परम रघनीय ॥२५॥

निपथके राजा नल

निपथ तने नल बाल सम प्रगठ्यौ पूरन दापु ।
ता सुत नभ नभ मास लों हख्यौ प्रजा सतापु ॥२६॥

नलके राजा नभ नभके पु डरीक राजा

पु डरीक नभ रूप तनय जिहि धाम्यो सुभ भास ।
पु डरीक दिगज मनहुं लयौ वसुह अवतास ॥२७॥

पु डरीक के राजा छेमधवा

प्रथम छेमधवा सुभनु पु डरीक उपजाइ ।
परमपुत्र महँ लीन चित्त कख्यौ महा तपु पाइ ॥२८॥
छेमधवा के राजा देवानीक देवानीक के राजा अहीनगु
छेमधवा उर औतख्यौ देवानीक गरिहु ।
जग्यौ अहीनगु नाम सुतु जह कुल कौरव रहु ॥२९॥

अहीनगुके राजा पारिजात्र

रूपति अहीनग सुत भयौ पारिजातु अचनीपु ।
जहा चपलना उत्तजी तख्यौ न रमा समीपु ॥३०॥

पारिजात्रके राजा दल दल के राजा सल

पारिजात्र उर औतख्यौ दल रूप परम दयालु ।
सीलसिंधु जग्यौ जहा सल नामा छितिपालु ॥३१॥

सलके राजा उन्नाभ

सल मरीच आयौ सुभनु भी उन्नाभु तरेष ।
सदा नीति गारग चर्यौ जा डर कौसल देसु ॥३२॥

उन्नाभके राजा वज्रनाभ वज्रनाभके राजा पपण

वज्रनाभ उन्नाभ सुतु वज्रासुध सम भूपु ।
पल पडन पपण जहा जग्यौ जगत अनूप ॥३३॥

पंपण के राजा विपुतास्व

बल पंडन पंपन सुअनु प्रगट्यौ नृप विपुतासु ।
रमा भारती एक मत कर्त्यौ जहां थिर वासु ॥३४॥

विपुतास के राजा त्रिस्वसह-त्रिस्वसह के राजा हिरण्यनाभु
भयौ एकु विपुतास्व सुत वसुह त्रिस्वसह साधु ।
जिहि हिरण्यनाभहि जन्यौ सुतु गुन सिंधु अगाधु ॥३५॥

हिरण्यनाभ के राजा पुष्प पुष्प के राजा सुभसिंधु
हिरण्यनाभ उर औतर्यौ पुष्पनाम अवनीपु ।
जनम्यौ जहां प्रताप निधि सुत सुभसिंधु महीपु ॥३६॥

सुभसिंधु के राजा सुदरसन-सुदरसन के राजा अग्निवर्ण
भुभ भूषण सुभसिंधु सुतु भयौ सुदरसन नांइ ।
अग्निवर्ण रघुनाथ जहां जनम्यौ मदन प्रभाइ ॥३७॥

अग्निवर्ण के बहुत स्त्री भोगकरत छई रोगु उपज्यौ तव गभवती स्त्री छ्वाडिके
अग्निवर्ण वैकुण्ठवास कियौ तव प्रज निमंत्रण गर्भहीको अभिपेकु कियौ
तहां राजा सीघ्र नाम भए

दोहा

अग्निवर्ण कहँ काम वस प्रगट्यौ पूरन रोगु ।
तन छांड्यौ उपजाइ तिन तियकहँ गर्भ संजोगु ॥३८॥
सब प्रजानि तत्र गर्भही कर्त्यौ सीघ्र अभिपेकु ।
सीघ्रनाम सुत औतर्यौ मूरतिचंत विवेकु ॥३९॥

सीघ्र के राजा मरु ते जोगीस्वर भए अवहँ जोगवल वदिकाश्रम महँ है

सीघ्र सुअनु मरु औतस्थौ जो रिपु इंद्रिय साधि ।
अर्जौ वदरिकाश्रम अमरु वैठ्यौ जोग समाधि ॥४०॥

मरु के राजा प्रत्युश्रुत प्रत्युश्रुत के राजा सुमंत्रि

ता सुत प्रत्युसुतु भयौ कुल करव रजनीसु ।
प्रत्युश्रुत उर औतस्थौ सुतु सुमंत्रि अवनीसु ॥४१॥

सुमनि के राजा सहम्यान—सहस्वान के राजा विश्रुतमान

दोहा

रूप सुमनि जायौ तनय सहस्वानु बलवातु ।

धरम धरधर औतस्थौ ता सुत विश्रुतमान ॥४२॥

विश्रुतमान के राजा बृहद्रथ ते भारत को कराई अभिम-यु के हाथ जूके पोने पाँच

हजार बरस भई तब ते राठौर भए बृहद्रथल के बसमई

दोहा

प्रगट्यौ विश्रुतमान सुत भूपु बृहद्रथ गाइ ।

भारथ कहँ अभिम-यु वह हन्यौ वीर रस गाइ ॥४३॥

भारथ कहँ वीती वरष पोने पाच हजार ।

ता पाछे राठौर कुल प्रगट्यौ परम उदार ॥४४॥

अथ महाराजाधिराज महाराजा श्री जमवंतसिध जू के पुरान मई जे पुर्यात कहे
तिनीकी वणनु । राजा बृहद्रथ के बस मई राजा विश्वभर १ तिनके राजा बृहद्रथ २

तिनके राजा बृहद्रथ ३ तिनके राजा पात्र ४ तिनके राजा वस्तुविष ५

तिनके राजा दिवाकर ६ एछऊ पुर्या एक कवित्त मई कहे तिनको

कवित्त

भूप बृहद्रथल बस भयो राजा विश्वभर ।

तासु तनय रूप बृहद्रथ हुअ धरम धुरधर ॥

बृहद्रथ ता सुभनु दुआ भजनु सुत लाइक ।

ता सुत प्रगट्यौ पर भूप मूल सुनदाइक ॥

पुहमीस पात्र नटनु तबट वस्तुविन विरदेत मनि ।

अवतस्थौ इऊ तहा दिनाकर जिा समस्त भुगिअ अवनि ॥४५॥

दिवाकरके राजा सहदेव ७ सहदेव के सोमछत्र ८ सोमछत्र के राजा अतरिक्ष ९

अतरिक्षके राजा सुवा १० सुवानके राजा सुमित्राजित ११

सुमित्राजित के राजा इक्ष्वाक बंधके १२ तिनको

कवित्त

भयो भूप सहदेव पुहमि पुरहूत विसिन्धौ ।

सोमछ । ता सुभनु सोम सग जा जसु विन्धौ ॥

अतरिक्ष अवनीप समर अंतकु अवतरियौ ।

या छत नृप सुवान ग्यान गनपति अनुमरियौ ॥

दलपति तांसु नृप मित्रजितु प्रगड्यौ परम प्रतापनिधि ।

इक्ष्वाकुवंस बहुस्थौ वसुहसु सब विधि रच्यौ समत्थु विधि ॥४६॥

इक्ष्वाक वंसके राजा विभीषण १३ विभीषण के राजा अश्वसेन १४ अश्वसेन के राजा

धारीषधे १५ वारोपधे के राजा कीर्तिहरमा १६ कीर्तिहरमा के राजा त्रिपांडुविजय

१७ त्रिपांडुविजयके राजा कर्णसेन १८ तिनकौ

कवित्तु

भूप विभीषण भयौ समर भीषण प्रचंड बल ।

अश्वसेन नृपु तासु जासु अगनित अश्वदल ॥

ता सुत वर्षप नृपति दान वर्षय समांन दिय ।

तासु तनय नृप कीर्त्तिवर्म जिनकीर्त्ति वर्म किय ॥

पुनि पांडु विजय दलपति भनि विजय पांडसुत सम समर ।

तहँ कर्णसेन हुआ कर्ण जिम जग मंडलह प्रताप वर ॥४७॥

कर्णसेन के राजा काकलदेव

दोहा

ता सुत काकलदेव नृप सकल भूप सिरें मौर ।

वसुहभाव जिन सेस सम सिर थांभ्यौ निज जोर ॥४८॥

काकलदेव के राजा अग्निरव

काकलदेव नरेसके भए अग्निरव भूप ।

जस पीयूष पूरन किए जिन सबके श्रुति कूप ॥४९॥

अग्निरवके राजा जग्यकषल

जग्यकषल नृप अग्निरव नंदन परम प्रवीन ।

जिन अपनी करतूत वर जगत कस्थौ आधीन ॥५०॥

जग्यकषल के राजा गोपगोविन्दु—

जग्यकषल नरनाथ के भए गोप गोविंदु ।

उथौ तिहँ पुर तमहँरनुं निर्मल जा वसुइंदु ॥५१॥

गोपगोविंद के राजा पैमसेन राजा ते राना कहाए
 नृपति गोप गोविंद सुअ पैमसेन सिरदार ।
 रनु जीत तजि बाहुनर लई रनार्द सार ॥५२॥

पैमसेन ते नव पुरवा राना कहाए
 नव पुषपा तिनते चम्पौ बसुहर गाइ वेकु ।
 राजा राउत रांजुजिय जाडरु तज्यौ न नेकु ॥५३॥

पैमसेन के राना वीर बिपुल के अमुसेन
 पैमसेन राना सुअनु वीर बिपुल वर वीर ।
 अंमुसेन राना जहा जनम्यौ सत्रु सरीर ।
 अमुसेन के राना वीरनवाज वीरनवाज के रानाबदाराज
 अमुसेन राना सुअनु राना वीरनवाज ।
 राना वीरनवाज सुअ राणा श्री बदराज ॥५४॥

बदराजके राना क्रमराज क्रमराजके राना वीरदेव
 राणा श्री बदराज सुअ राणा श्री क्रमराज ।
 वीरदेव क्रमराज सुअ प्रगल्थी हिंद जहाजु ॥५५॥

वीरदेव के राना पपुलिते कर्नाट देस के राजा भए तिनको
 कविते
 लप लप अठवार जासु रिंगिय सिकारि नित ।
 लप लप मगगणि देत जिग कस्यौ चाड चित ॥
 लप लप दुआणि हयौ जिग समर क्रुद्ध ता ।
 लप लप नृप सदा रखी सेवत जा परा ॥
 दल्पति लप आपहु हरनु जिग कीही जासु जगत कुलि ।
 कगाटदस पृथ्वी तिलकु भसौ इवु राग पपुलि ॥५७॥

राना पपुल के राना ननपाल गिनको

कविनु

जिन प्रचढ भुज दड जोर हुना दल जितिय ।
 मुडकु माल मातग ददे जिग जगु अपुष्य किय ॥

जिन प्रभुतां पूरनहँ चित्तु हरि चरननि राष्यौ ।
 सतपथ पथे संचख्यौ सुतु जिन कवहु न भाष्यौ ॥
 अंगवत अवनि राना पपुलि विनि थंमिय कनांठधुरि ।
 ननपाल कित्ति सुगरीय सम सुरपुर नरपुर नागपुर ॥५८॥

रांना ननलपालके राजा सितुंग तिनको .

कवित्तु

' तुंग वाहु वर तेज विद्विजित्यौ बटवानलु ।
 तुंग मौज वित्तरत जाहि कंष्यौ कनकाचलु ॥
 जाछु तुंग गुन मननि तुंग लोकनि प्रपानु किय ।
 तुंग वंस अवतख्यौ तुंग विदि वगत कित्तिनिय ॥

दलपति तुंगधनु तुंगमनु तुंग वचनु उचख्यौ भुअ ॥५९॥

राजा सितुंग के राजा भरत तिनका

कवित्त

भरत भूप सम राजु भरतपंडह जिन किम्हौ ।
 जिन समथ रिपुजीत्ति पथ जिमि जग जसु लिन्ही ॥
 जिहि अनेक मप्र करत सहस लोचन उर कंष्यौ ।
 जिहिरिगत नग धूरि पुरि सहसकद कंष्यौ ॥
 सीतुंग तनय दलपति भनि जाछु कित्ति जयु उचरतु ।
 कर्णाट देस दिगपाल मन सु भयौ एकु राजा भरतु ॥६०॥

राजा भरत दक्षिण ते गया की यात्रा कहं चले दक्षिणको धरती ब्राह्मणनुकु

संकल्पदीनी तर्हाकी कथा

भरत भूप त्रिस्थली हेत पुव्वह पथानकिये निज निवासु कर्णाट देसु विप्रनि समप्पिदिय ।
 दलचतुरंग समेतजाइ पहुँच्यौ प्रयागपुर जहा परसत पथ पवनु मिटत तछनहँ त्रिविधि जुर ।
 तहा मन प्रसन्नमज्जनु कर्यौ लख्यौ पुन्य पवित्र रसु ।
 वित्तरथौ अवनिपति विविध विध सु गज तुरंग अनिगनत वसु ॥६१॥

भरत राजा प्रयाग स्नान कियौ बहुतदान दियौ त्रिवेणो को स्तुति करण लागे

दोहा

त्रिपथ गामिनी तरनिजा मिली खिताखिन नीर ।

तहा विध वरणनु करयो भरत महामति धीर ॥६२॥

त्रिवेणो वर्णन

घनाछरो छंद

गग वारि बीच रवि ताया तरग अवलोकन अनेक मनमोद बरगत हैं ।
दल्पति तोर भूरुह जाम हेत साधिमप मुनि मगछानि तरगत हैं ॥
धम पुनीत पौनु लागत परतअघ पातकी परम तघ तोय परगत हैं ।
रखन उदोत अगमनेतम जात जेठे पाछे छोग इगनि दिनेसु टरगतु हैं ॥६२॥
रसरि बीच रविसुता की मिलनु जेठे मालभरी भोरनि विसदजल घातकी ।
तेम्मान भीतर तरल तरवारि किर्षी दल्पति दीरघ दुरित दल घातकी ॥
पेसौ तीरधेसु छ'हि महामप कोटिहिने पौनछिये जैहानि अधमगति गातकी ।
रत त्रिविधि तन ताप तीर तीर आवे नीर शये पावत परम पदु पातकी ॥६४॥
पौनु परसन तीर दीरघ दुरित घात ग्हात नर तीर तक लोकहि लहत्त हैं ।
रुहे दल्पति और तीरथ अकेरु जहा तीरधेसु जानि सब भाति उमहत हैं ॥
गग वारि बीच रवि तनया तर गि हेरि उपमा अनूप कवि कोविद कहत हैं ।
मानो महामोट मद लोनूप मधुपदेव दुरदु पदसिरस- पारस रहत हैं ॥६५॥
देव तरगनि बीच तरनि तनूजा सरमुती देये दुषु घिसरतु विकरातु है ।
तीर फनु छ'के नैक लागतु समीर भत्रिधि पार धे के होतु आगतु विछालुहें ॥
उपमानि के के गुन गावत निगम दल्पति अेसौ रूपु निहचल चिहू काल हैं ।
छाल गुन ठइ कमनीय भाति गई मांगी नील मगिमद मुक्ताहल की माल है ॥६६॥
जदी ता आइ घाइ लागतु पयनु दल्पति ताप त्रिविधि तही गसावत है ।
के नीरुद्धके भव नरक निवारि तरवारि पुरसारूप मुकुति पाइयतु है ॥
देव तरगनि बीच तरनि तनूजा अेठे उपमा अनूपम निगम गान्यतु है ।
छीरनिधि तरल सरग मांरु जेठे तीर मूरुह तमालिनी छ'हि छ'दियतु है ॥६७॥
घोरेदू त्रिवेणी गाम मुप निररतुमदी तही विगतु मद लोषु मोहु तंतु है ।
रघ तनु जाइ होतु सख्यमप गातु गग मोटु ग समातु जेमे पावसको मेहु है ॥

दलपति सितासित तरल तरंग अवलोकन ब्रह्म चीतगगनि कौ नेहू हैं ।
पाप संघरण उद्धरण भुअ नांनो सेत मावरे वरन मित्यौ हरिहर देहू हैं ॥६८॥

राजा भरत महीना भरि प्रवाग स्नान करिकें बानारसी कट्ट चले

दोहा

इहि विधि नृपति प्रियाग महेँ माधु मन्ध निरवाहि ।
कख्यौ कूचु सिवनगर कहेँ सिव रजनी प्रतु चाहि ॥६९॥
पागुन वदि निधि द्वासी जाइ भगन अवनीप ।
कटक सहित डेरा कख्यौ सूरजकुंड नमीप ॥७०॥

कविसु

वृत दिवसहँ नृप टान सारु संगद सत्रु लिन्द्यौ ।
मनि कर्ण तट जाइ न्हाइ विप्रनि कहेँ दिन्द्यौ ॥
छटस प्रकार प्रदोष संभू पूजा अरंभिय ।
रतन हेम भूपन अनूर अंचर अपन किय ॥
गुन गननि गाइ दलपति भनि हुअ समस्त निसि जागरण ।
प्रत्युप समय राजा भरतु उ लग्यौ ईस विनती करण ॥७१॥

सिवजी स्तुति राजा भरत कीनी तहांकी कथा

गरीब निवाज गीरवान सिरताज काशी नगर अनीति हौति रावरे चलाये हैं ।
नफा जिय जानि काहे देह दरे आनि भई मूरहू की हानि सु अजीर्णी विनुपाये हैं ॥
गुन के केँ वाही निगुन पदुपायौ सरबसु देकेँ वापुरौ जगत विमराये है ।
देव धुनी धरेँ काम देहेँ कोंकलंकुमिट्यौ रिणी को कलंकु केँसेँ मिटतु मिटाये है ॥७२॥
होहूँ दोष आकर जगत जानीयतु वह दोषाकरु लोक वेद पुराननि भापियेँ ।
वाकी कुटिलेँ तै नही न कुटिलई वह जडतां सवाख्यौ होहूँ जडु सत्रु सापियेँ ॥
दलपति कहतु पुकारि तिपुरारि तुम वह रसुचान छप्यौ अत्र वह रसु चापियेँ ।
मदन मथन जैसेँ माथेँ विधुधख्यौ अैसेँ ओगुननि भख्यौ मोहू चरननि रापियेँ ॥७३॥
पर द्रोहू केँ केँ परेप्राननि हरतु तन छन-छन कुटिल छरितु ताप भख्यौ हीं ।
संतनि की कही न सुनतु समभायेँ दलपति मनभायेँ विप बोल उदगख्यौ हीं ॥
जगत जनक कशमेरौ अपराधु औसौ अधसु असाधु तुमही संवारि कख्यौ हीं ।
गरीब निवाजन विचारियेँ विरदु जैसेँ व्यालगरै पख्यौ तैसेँ होहूँ गरै पख्यौ हीं ॥७४॥

पांच भूत वृहै कै पाचू भूत तन लागे पान विषय विकार छहू रिनु मोह दाई है ।
 दानत कुठाड साधु मग्न मानन चित्त चाकरो भवाइदेत महा दुपु पाइ है ॥
 गरीष निवाज गीरवांन विरतान भूतराज विनु फौनु दल्पति बरदाइयें ।
 मपत महोदधि गरलु अपायौ जैसे असें ननु आपनौ, अगाऊ अपनाइयें ॥७५॥
 प्रकृति सरूप पारश्वती वाइ ओर वाहीं द्विग कोर जीवजड जगम सवारे हैं ।
 गाम वामदेव दाहिने व्हें दल्पति दाहिने नयन पालत विरध ज्ञान वारे हैं ॥
 आपुही अकेलें एक आपिको अगनि अ धर मरत जगत ओक भाति जारे हैं ।
 पुर मथन त्रिपुरेश तीर्यो तावहारी तीर्यो गुनधारी तीर्यो लोचन तिहारे हैं ॥७६॥

राजा भरत वानारसी तें गया कई चले

देहा

क्षेत्र कृष्ण तिथि पचमी दल चतुर ग समेत ।
 कस्थी वृच नूप गया कई पित्त रनु मोचन हेत ॥७७॥

छ द पाधरो

कछू दिननि मक्ति नूप गया जाइ किय प्रथम श्राद्ध पत्युभ इइ ॥७८॥
 दीन और और तीरथ प्रदेश नाना विधि पिंड दये नरेश ॥७९॥
 षट तट पधारि राजाधिरानु सकस्यो दिन कई दान गानु ॥८०॥

राजा भरत गया मई गमा के प्राण्य कई इतनी दहिना दोनी तहाँ को
 कवित्त

बीस मस मातग इकसत तरल तुर गम इक तुला हाठकु अनेक मुफता गग उत्तम ।
 सहस गाइ सुवरा समेत अगनित धसन धर पच सहस मा ॥
 अंनु भछि कई प्रति सन्धर अद्यपवट तट दल्पति भनि पिंडदानु जहिन कस्थी ।
 नूप भरत गानु इत्तो तदिन मु गया वित्त कई वित्तस्थौ ॥८१॥

राजा भरत सातदिन गया मई रहे पुनि आइकेँ फनोज वाउ कियो तहाँको कया
 कवित्त

सप्तदिवस दल्पति रख्यो नूप गया नगर मई ।
 परसि गदाधर धरत सें सन्निय पछाई कई ॥
 निपत पुष अणुध्वजना ज्ञानहु सय मुहिन ।
 रहण हेत रमणीय ठीर निचइ निगाह क्य ॥

सुरसरी तीर द्रुगु शृङ्खल कनकज परम पवित्र सुभ्र ।

तर्हा वासु होत गठीर पद्दु तु जगमंडलहँ प्रसिद्ध ह्युध ॥८२॥

राजा भरत कनोज गगा के तीर डेरा कियो गंगाको वर्णनु कियो तर्हाको

दोहा

प्रथम दिवस डेरा पर्य्यो जर्हा सुगमरी गमी ।

दरमत पुन्य प्रवाहु तर्हा बरननु कस्यो महीप ।८३॥

गगा वर्णन

कवित्त

त्रिपथ गामिनी तेरे तीन्वीपथ किर्धी नीनि भानि भयो त्रिगुन मलपदी को भेदु हँ
किर्धी दलपति सुप्रसिधही के सोत होत सामुदे समूल विमरतु मन पेदु हँ ॥
किर्धी भगीरथ तप तेज आंच ताइ आइ सगुण सगीर ही ते पनख्यो प्रसेदु हँ ।
किर्धी जगदीसु जलनिधि साइ तेहा मिल्यो सरस प्रवाह व्हे सरस सापां वेदु हँ ॥
गुननि गुनत निरगुन नियगद जिदि पाइ दलपति पुरहूत पद वारे हँ ।
गति भए ताहूकी परमगति होति तन तीन्वी पन जाकी पतितईके पचो हँ ॥
ग्यान हग लपेते अलपु लघ्यो जाई जैहा परग परग भव नीरधि नवारे हँ ।
भगीरथ हेत मोपटाता जगदीस सतपथ साच लेके तेरो त्रिपथ सवारे हँ ॥८४॥
देव तरंगनि तेरे तगल तरंग हेरे दलपति मनके तरंग विनसाईये ।
सनमुष धाए सनमुष सुप होइ नियराये तनु परम पुरुषु नियराईये ॥
पोनु परसतन निरप परसिये नेक पांजुकिये पूरन पीयूष पांनु पाइये ।
नीरथ गुनाये ते न जइये जमनीरो अहडोरि नीर न्हाये भव नीरधि न न्हाईये ॥८५॥
भीषम जननि भागीरथी तेरो पीउ लुवेके पातकिन अंतक मजेजु मीडि माख्यो है ।
कहँ दलपति तीर भूरुह जंनम हेत जोगु केके जोगिन अगिनि तन चाख्यो हँ ॥
देव तरंगिनी तेरी वारु की वडाई सिव वारु की बनाये ही अधम लोकु तारथी हँ ।
तेरे जल जतनि फीहोस जगदीस मीन कूरम सरीर व्हे के जगनु उधाख्यो हँ ॥८६॥
पर धन माते पर धन रस राते कहँ मेलै तन परत्यो प्रवाहु पर भांति ही ।
व्याल माल देके हिमकरु माथे धख्यो औरलोचन लिलार के के कख्यो ध्यानगातही ॥
प्यासे पिथ्यो पान्यो सजु पान्यो सिर पेप्यो दलपति देप्यो अकथ तमामासीं पदु जातही

एके तनु प्रथम सवारयो आठ तन उहैं उरध निहाख्यौ अण-हाण अघ-हातरिं ॥ ८७ ॥
 पातकी परम कु करम रस राते काहूँ मांते गगातीरजाइ जरनि वुभाई है ।
 दलपति बाहीँठा पात पटु ओछें भयो सावरो चरन गई गातकी सुराड है ॥
 तन तापु आपनौ हरन आपु आयौ तहा ताहू तन ताप तीर्यौ लोककी नसाइ है ।
 द्वै भुज पधारि चलयौ न्दै कै भुज प्यारि दह नेंछुटु प्यारि सम देखें अपनाइ हैं ॥ ८८ ॥
 पूर हूत न्दै कै पूरहून पुर जाइ एकु पटुन्व्यौ अगाऊ परसत तीर पायकी ।
 औरना आइ बाही गीर की समीध लंग्यौ उहै लोडु बाहू पाछै पीयो तजि सायकी ॥
 दलपति काहू सेवक ही सीटराइ जलु मैली जानि चारक प्यारयो तिज मायकी ।
 ताहू इ म पाछि लगि गइ सुपु ठान्यौ भागीरथी तेरौ पार्यौ नकनान्यौ नाकतायकी ॥ ८९ ॥

राजा भरत कनोज वासु कियो तबते कनोजिया राठीर कहाए

राजा भरत क राजा पुज भए तिनको

कवित्त

जिना भुजबल भभृत विपक्ष घर पशहीन किय ।
 जिन अनेक मप करत वसुह सतमप पल द्विय ॥
 अमरावती कनोजविय गगा परत छहैं ।
 मधुर उधा सम राज भाँउ भुगायो नृपति जहैं ॥
 दलपति दागकर कल्पतरु समा सुधरमा सुभ करम ।
 राठीर निलकु नृव भरत सुतु सुभयो पुज पूरहुत सम ॥ ९० ॥

राजा पुजको तेरह रानो भई तिनके तेरह पुत्र भए तिनके तेरह साखि भई

तिनमें एक खी क पुत्र धम धाम दिन धम के बंदैसमाह

श्रीमहाराजाधिराज महाराजा जसवन्तसिपजू

दोहा

एक माह उर औतरे धम धाम द्वै आइ ।
 दयो राज वसु धम कहैं पुज परम सुपु पाइ ॥ ९१ ॥

धमको कवित्तु

गुजरेस निमख्यौ जिहि व गुजगत हरध किय ।
 तात गुजरा कहैं प्याह समय बह न्देष गंनु न्यि ॥

इक नृपति उत्थपत इक थप्यतं अविचल भुअ ।
 सत सिंध पाहरह प्रचंड पुरन प्रतापु हुअ ।
 भुगवर्ता राजु कनवज्र पुर जिन सतपथ वित्तस्थौ वसु ।
 जगमगु सकल जगमंडलहँ सु विमल वरनु नृप वंभ जसु ॥६२॥

वंभके राजा अभैचंद्र तिन कहँ वापुराइ कहिबोख्यौ तवते' राइ कहाए
 इक वीस पुरुपालौं राइ भाए तिनको
 दोहा

वंभ कह्यौ निज कुँवर कहँ रावु आपनै ओक ।
 इकईस पुरुपालौं चलयौ राइ वेकू' भुअ लोक ॥६३॥

कवित्तु

वंभ सुअन 'गुन गन अगांधु सागरु प्रसिद्ध हुअ ।
 ता मभहँ निहत्तयौ परम उजल अपुव्व भुअ ॥
 मगगन मन हुल्लसिय हरिय दारिदु तिमिर गन ।
 कमल दुअन संपुटिय कुसुद फुल्लिय सु मित्रजन ॥
 निकलंक स्वछ दल्पति भनि जेव लौहू जिमि वित्थरिय ।
 नृप अभैचंद्र जसचंद्र जग सु अट्टदिसह उदोतु किय ॥६४॥

राउ अभैचंद्र के राउ विजैचंद्र

दोहा

अभैचंद्र सुतु औतस्थौ विजैचंद्र बलवानु ।
 जिन आपनौ प्रताप भुअ प्रगट्यौ भानु समान ॥६५॥

तिनको कवित्तु

तेज तरनि अवतस्थौ कोप कहँ अंतकु पिघ्यौ ।
 परसरांम समर्येज कल्पतरु दान विसिध्यौ ॥
 गुन गनेसु अनुसंस्थौ रूप कंदर्प वपान्यौ ।
 सत्त जुधिष्ठिर गन्यौ इंद्र प्रभुता पहिचान्यौ ॥
 श्री अभैचंद्र नरनाथ सुतु जिन समस्त भुगई भुअ ।
 कनवज्र तिलकु राठौरमनि सु विजैचंद्रु अवतार हुअ ॥६६॥

विजैचद के राजा जैचद बड़े चक्रवर्ती भए ते दल पागुरे ऋहाए

दोहा

विजैचद गराग्य सुतु । चक्रवर्ती जैचद ।

दुअन जीति कनवजपुर राजु करयौ स्वच्छुद ॥६७॥ --

तिनको कवितु

इक छन भुअ राजु भुगयी इकनगुवर ।

इकहुईम जगनीसु चित्तु चि त्यौ गिसिवासर ॥

इकमीज वितरत दीन दारिइ विहडपी ।

इक़ु षोळ उचस्थौ इक़सईक रिषु पड्यौ ॥

दल इक़ु सिधलगु सचस्थौ जव आगे रिष्यो न पग ।

जैचद नृपति तदिन भयौ सु दल पागुरी प्रसिद्ध जग ॥६८॥

राज जैचद के सग असीलाप अखवार चले

दोहा

असीलाप सनद भट महासूर सिरदार ।

नीति निपुन जैचद नृप कियेदार रखवार ॥६९॥

राज जैचद को कथा

राजस्य भार भ करयौ जैचद बाहुपर ।

पृषीराज तिहि समय सेन सजिय कौज पर ॥

एत सोरुक्डु भवत राज चित्तइ सरोप हुअ ।

गुअदहु उचस्थौ कौनु कहँ रह्यौ गुपत भुअ ॥

दरपति प्रथित परभांनुतहँ हरय जोरि हनि उचस्थौ ।

राजाधिसज राठौर कुञ सुजगत कोपु काहु १ कस्थी ॥४००॥

दोहा

सयोगिता कुमारिका रच्यौ ररमवर पाजु ।

देस विदेसति तें तहां आयो राज समाजु ॥४०१॥

चद भाटपी चापरी । पृषीराज विचारि ।

सग सोरुद सामत लं गयी गुपत अनुहारि ॥२॥

नवोमिता कुमारिका वस्थी जरी चौशगुं ।
 तही पिथोरा फहं दयी राद अर्भं जियदानु ॥३॥
 राठी पृथ्वीराज की तहां बहुत विस्ताद ।
 में वग्नयो संछेपही मरुट कथाकी गद्य ॥४॥

राइ जैचंद्रके वरदाईसेन

दोहा

भयो राइ जैचंद्र सुतु नृप वरदाई सेतुं ।
 भुगवत रातु कनोज जिहि दयी प्रजनुरीं सेनु ॥५॥

तिनको कवितु

अमित वित्तु वित्तरिय अमित सांसन विप्रनि दिय ।
 उपवन कूप तलाइ विविध चाडली; अमित क्रिय ॥६॥
 अमित दुप उदरीय अमित हुञ्जन रन गंडिअ ।
 अमित भोग भुगवत नित्त जगदीस न छंडिअ ॥
 रारतिलकु दल्पति भनि जिहि समस्त नित्तिय अवनि ।
 जैचंद्र सुअन कनवञ्ज हुआ सु वरदाई विरदेत मनि ॥७॥

वरदाईसेन के राउ सीतराम तिनको वर्णन

घनाछरो छंद

राठीर तिलकु राई वरदाई सेन सुतु वही गयो वसुंहुं चियौ कामतर कामकी ।
 वास वंसमाननि सिंधौ सब रसत वसु कियो जिन करनु कनोडौ सात जामकी ॥
 जतननि कैके चतुरानन संवाख्यौ गुन जजरौ उज्यारौ प्रसु आलम तमामकी ।
 अजौली सिहात नरनाथ ठोर ठोर अँसौ नीकी जसु जगतु जगत सीतरामकी ॥८॥

सीतराम के राइसोहा

ते कनोज ते द्वारिका की जात्रा कहँ चले तहां फूलानी लायी मार्यौ
 दिद्ध जैसिंधके परंन.ए तवते मारवाड के ठाकुर भए तिनकी कथा

कवित्त

कमल कुमुदगन हंस :कुंद कयलीसजेवहरि ।
 जित्ति जड़ मूत्तिय मयंक मलयज मनोज अरि ॥
 दलिनूपार वनमार सुद्ध पारद पयोधि वरनिय ।

मल्लिअ पुव्व मालति वरनु जग मगतु राउ सीहा तुजसु ॥
सु विमल रूप जग जय करनु ॥६॥

राउ सीहाके चरित्र वर्णन

दोहा

कासीकांति अवतिका माया औष अदाय ।

मथुर, अरु छारिकाकहँ कस्थो पयागौराय ॥१०॥

छ द पाथरी

जय चल्थो सीहु राठीर राउ जगदीस निकट परसणह पाउ ॥११॥

तय चली सग चतुरग सैन नूप लगे विविध मग मॅट दें ॥१२॥

मातग मनोहर वर तुरग भूपन अगनित अरु पट सुरग ॥१३॥

गिज व्रतु विचारि राजाधिराज वे दये सवणि कौं फेरि साज ॥१४॥

घकसीसनि कै कै कस्थो मानु पायौ सवहिन नूप अभयदानु ॥१५॥

रा० सीहा मथुरा आए तहां मथुरा को वर्णन कियो तहा को कथा

छोरठ

मथुरा नगर अनूप लथ्यो राउ सीहा जही ।

तहा तन पुलकित रूप थल महिमा वरनु कस्थो ॥१६॥

घनाछरी छ द

देगे दलपति दुप दाहन पराई सीवपारै पाईयतु सिध ससार कौ सेतु हैं ।

अरथ घरम काम मुकृति करनि कस्थो जोई जाहि चाहें ताहिसेई फल देतु हैं ॥

वेदनि जनायो वेदव्यास समुभायो अतो अभुत मथुरापुरीय कोऊ पेतु हैं ।

निरगुण जामतु सगुन अनुहारि जेहा सगुन पधारि गिरगुन पड लेतु हैं ॥१७॥

दोहा

प्रथम दिवस मथुरा नगर राउ महा मति धीर ।

दल ममेत डेरा कस्थो तरनि तनू जा तीर ॥१८॥

दानु ददे माथुरनिके तहां पपारे पाइ ।

छाँफ भारती के समय पूजे केशव राइ ॥१९॥

चरन पूजि जगदीसके जपे अग गति नाइ ।

हाथ जोरि विगतीकरी सीहा सत्व शुभाइ ॥२०॥

हाथी हय हीर चीर द्वाडक हरिननेनी
 भुट्टु सांजी केके सांचु भुट्टुमी जनाइ
 । जिनग्यान दग देख्यो जैमी
 ।।के जान्यो बीसविसे केसीराइ
 लोकनिके आपार करम करतार लोक
 महिमा महोदधिआपने गोइ मरैजान
 स्वांग दस के के करयो संसाक विद्वत
 व्हे के जगनाइक नचावन जगजुनाथ
 दिज दुप दंदि दीनबंधु पहु पायी
 दामोदरलोक वेद पुराननि भाभौजव
 असे सारथक नाम भौननि मुनन होहूँ
 अछरजुं सरनुं विरदु न लजइये मेरे
 जननी जठर जठरागिनि जरत तनु
 विनुं मांगे थननि अपाजं दूधुकेके
 वेंसी जतननि करयो आपुरीं वढेरी
 टीर डौर सांकरे यचाइ केसीराइजेसी

नेननि लप्राइ अपनाइ देत आछै ही ।
 नांचुउटेवाचुं थापहीं रहत जाइ पाछै ही ॥
 तेमोतिन पेयी तिनहीको मोहु ताछै ही ।
 माया जालजगगइ इंड्रजाल काजुपाछै ही ॥२१॥
 फारन फरन नेदनि को साथ साचै ही ।
 मोहत सचनि तुमहूँ न मोह बचि ही ॥
 दल्पति अब आइ गुनिगन लीक पांचै हो ।
 अमी नांचु करयो जिदिनांचु आपु नाचै ही ॥२२॥
 दयासिधु धै गवायो लघु मिधुद छंटाइ के ।
 माइकीठावरी रायी उदद बंधाइ के ॥
 भयोनिदर्शित्तु चित्त चिना विसराइ के ।
 अचनि नसेये अघनासनु कष्टा के ॥२३॥
 तावतें निवाख्यो मनुं तावतें निवारिये ।
 देके आरजि आयी उहे पार पारिये ॥
 दल्पति चैरी पांचनि लगाइ केत मारिये ।
 तवनि विसाख्यो असे अब न विसारिये ॥२४॥

दीहा

सीहा चारह वन करतु देख्यो गोकुल गांज ।
 हरपित चित्त वा डौरकी महिमा वरणी राज ॥२५॥

गोकुलको वर्णन

निरगुन सगुन सख्य व्हे के जाइ
 जोगुकेके जिहि सनकादिकन जाम्यौतिदि
 देख्यो अचिरजु बंधा जनमु मरनुं होउ
 निगमनि गांई तिहु लोक मन भाइ

नंदकुमार कदाइ जेहा भूडी छाछिपाई हे
 गोपिनिकी गैया तैहां छरितु चराई हे ॥
 होत हरि वेजं निनि गोडेनि गुसांई हे ।
 अमी मथुरा निकट काहूँ गांवकी निकंईहे ॥२६॥

राठ सीहा मयुरा ते द्वारका कहँ चले तहाँ की कथा
छ द पाधरी

आगिले दिवस सीहा सुजातु द्वारिका नगर कहँ कियो पयानु ॥२७॥
फल्लु दिननि माऊ राठौर राइ देये पुनीत रनछोर पाइ ॥२८॥
देपत चरनिनि तन मिख्यो तापु निज दोष निवेदन लख्यो आपु ॥

राठ सीहा द्वारिका महँ रिणछोइजू मँ बिनती कीनी तहाँ को वर्णनु
सवेया

सेस वपु छै के धिष थाभ्यो भुअ भारु सोम सरज सरूप लोक तिमरु नसायो हँ ।

कहँ दलपति जइ जगम जहालीं जीव तहा घट घट अछ आपनौ रलायो हँ ॥

जानी जठर जठगगिनि बचाइ दिन दिन वेहा आहाक अगाऊ पहुचायो हँ ।

मानहुँ १ गुनु औसौ निगुनु जगनु एते गुननि करत नाधु निगुन कहायो हँ ॥३०॥

द्वारिका ते आवत सिद्ध जैसिध को ओर छै के लायो फूलानी कहँ माख्यो तहाँकी कथा
छ द पाधरी

फल्लु दिननि मनाइ सीहा गरेस आए मारग माइ प्रदेस ॥३१॥

कवित्तु

सोलकी नरनाथ सिद्ध जसिध इक हुआ ।

आस दुअनु लापा प्रताप प्रसिद्ध भुअ ॥

लापा मारा हेत सीहू ज्यो जयसिद्धेँ ।

असी कोस पुरदौर हन्यो जाडेचु राइ तहँ ॥

शुप सीतराम नदन भवल निकटक मरु देसु किय ।

कावजनाथ राठौर मनि सु विमल किर्ति भुअ विदयरिय ॥३२॥

घोरठो

सोलकी नरनाथ कुवर दई शुप राइ कहँ ।

ब्याह्र देक साथ मारवार महल्ल दयो ॥३३॥

राऊ सीहाके तीन बेटा भए आभ्यान १ अज २ सोनिग ३ आस्थान श्रीमहाराजधिराज

महाराजा श्री जसवतसिधजू के पुरिया अजके द्वारिका की भरतोमाँहो

वाडेल राठौर सानिग ईदरीया राठौर तिनको भणनं

सोरठा

ती १ महा बलवानु भणगाऊ सीहा तनय ।

सोनिग अज अस्थान एक एक देसाधिपति ॥३४॥

दोहा

देस द्वारिका अजन्मपति भुगयौ राजु अनूप ।
अर्जो विदवा वस महँ वाहेलादिक भूप ॥३५॥
सोनिग नृप ईडरनगर लह्यौ बाहुचल जोर ।
अर्जो विदित वा वंस महँ ईडगीया गठौर ॥३६॥

सोरठौ

पेड नगर वरजोर लह्यौ नृपति आस्थान तहँ ।
पेडेचा राठौर मारु प्रजा वंस मह ॥३७॥

आस्थान के राउ दूहडु

दोहा

आस्थान उर औतस्थ्यौ दूहडु नाम नरेसु ।
जिन प्रताप वर भोगयौ निरुपम मारु देसु ॥३८॥

राउ दूहडु को वर्णनु

सवैया

गनी जिवि कीरन तीपन तेग प्रताप महागिनी की अरनी हैं ।
जीति दिसानि लई भुज जोर दई जिहि दाननिही धरनी हैं ॥
जिंहि की कल कीरति चारन सिद्ध तपा मुनि मौनिन हूं चरनीं हैं ।
अर्जो भुअ लोक वषानत भूप वडी नृप दूहडु की करनीं हैं ॥३९॥

राउ दूहडु कर्णाट देसते आपनी चक्रीस्वरो मारवार ल्याए नागाने
गांव महँ थापनाकीनी तवते नागनेचीयां कहाई

सब राठौरन कुलदेवी

सोरठा

आंनी दूहडु राउ कुलदेवी नागान पुर ।
नागानेची नांड मरु मंडलहँ प्रसिद्ध हुअ ॥४०॥
दूहडुके राइ राइपाल ते महीरेलन कहाए तिनको वर्णन ,

सवैया

काहू कख्यौ विधि वाहन हंसु किधौं हर मानव लोक सिधायौ ।
काहं वख्यौ मुकुतागनु चारु तुसारु किधौं चहूँथां बगरायौ ॥

काहू कश्यो अनुसुद्ध किधौ रजताचड वेद पुराननि गावौ ।
 नीके निहारि कश्यो सवहीं है महीं महिरेलन कौ बसु छावौ ॥४१॥
 महिरेलन राउपाल एह जदुवभी रजपूत कहँ सवसु दाउ दोवौ
 भापुनौ भिछुक कोनौ तबत रोहडीया चारन भए तिनको कथा
 दोहा

पगट एकु जदुवस मँ भाटी च दा ताऊ ।
 गरबसु दे चारन कश्यो राइपाल नूपराऊ ॥४२॥
 रोहडीया चारनअर्जा च द बसु मरुदेस ।
 अगनित गयु दँद जिनहिँ मानत सकल नरेस ॥४३॥

राइपाल राउ काहर तिनको बर्णन

दोहा

राइपाल राउपाल सुतु प्रगट्यौ काहर राई ।
 जिन अपुव्व कीरति लही मारु सुवस वसाइ ॥४४॥

सवैया :

छहू रितु नूतन ओपमरी विर घात पनहू तछापन पाचे ।
 उजराइ निहारत गातनिकी नूप रीभत मानौ सराहत पांचे ॥
 सातपतालनि व्हे नमलोकनि की रतर गोनु अनूपम मांचे ।
 काह नरिंदकी कीर्त्तनटी निज वस चढी अजहू भुअ नाचे ॥४५॥

राउ काहर के राउ जालहण

दोहा

महाराउ काहर तनै जादहण राउ सुजानु ।
 यौ प्रतापनिधि औतखी ब्यौ कश्यपके भांनु ॥४६॥

तिनको बर्णन

सवैया

छिति घासन चारु सुमेरु सिपा सम नीरधि पूरन तेल भरयो ।
 प्रजानिकौ दुषु अभ्यारौ मिट्यौ गसु अजनु करधलोक पर्यौ ॥
 बूझायौ ग बैरी प्रभजन हू यौ छहू रितु वासर रँति वर्यौ ।
 नूप जालहण के परताप प्रदीप टहू दिशि दोह प्रकासु कर्यौ ॥४७॥

राज जादृण एक दिन सिंकार खेलन गए तहाँ एक कुंइरुका बेल
 देखी तब राज जादृण ज्यौ इमके फल और फोट न तोरे
 तबको उनकी गैर हुकमी के सोडा एक फटु तोर्यी
 तब राज उनको देरा लख्यौ तब उनके पर
 डाहु क्रियौ तबते सोदा बंटेले भए
 तहाँकी कथा
 दोहा

एक नमय मृगया करत नृपति जादृण राज ।
 अगनिन सुभट समेत तदा लख्यौ विंन वनुजाइ ॥४८॥
 उमरकोट नाइक तहां सोदा हुकम विमारि ।
 आइ आपनी कुमतिवस लख्यौ एक फल भारि ॥४९॥
 परसूर परमार कुल सोदा समर अपेनु ।
 अलख दोस ताकई कस्थी वादृण राज टंटेले ॥५०॥

राज जादृण के राज छाटा

महाराज जादृण तनय हुअ छाटा छिनि नाहु ।
 जा प्रताप प्वाला चढयो दिन-दिन अरि उर दाहु ॥५१॥

राज छाटा के राज तीडा

छिति नायक छाटा तनय तीडा तीछन रूप ।
 जाकी कीरत जगत महँ अनी वषानत भूप ॥५२॥

राहुतीका के राइ सलया

दोहा

भयौ राज तीडा तनय सलया मारु राइ ।
 जिन बील्यौ जालौर पति समर सांगुहै धार ॥५३॥

राज सलया को वर्णनु

सर्वैया

चारिहूँ और सातछ पूरि हरी त्रियकार हजार फनाकी ।
 नर नारिनी सचव सलप गनी मलिनाई नवाई घनी वसुधांकी ॥
 दलपति देव समाजनि वीर निराजति जेव अखणम जाकी ।
 भरी अध मथ्यम ऊरध हूँ सित कीरति देव नदी सलयाकी ॥५६॥

सत्रया के चारि बेटा

राउ माला १ जैतम ल २ वीरम ३ सोभित ४

दोहा

चारि तनय मारु तिलक जाये सलपा राइ ।
राउ माला अह जैतमलु वीरम सोभित नाइ ॥५७॥

राउ माला के चरित्र वर्णनु

राउ माला कहँ सिद्ध इक दइ समर जय सिद्ध ।
ता प्रभाउ दिन दिन षडी पूरन पूहमि समिद्धि ॥५८॥
तिमर लिंगु दिलीख इत उत गुजर प्रभु आइ ।
राउ माला सँ एकदिन गये बियौपम पाइ ॥५९॥
सोभित सेयौ सिंधु पति देस निकाख्यौ पाइ ।
दयौ जीव तिन समर महँ भारत गाइ बचाइ ॥६०॥
महा बाहु वीरम बली रिपुणि हनत रनमौह ।
भूक्त बख्यौ वरगननि गयौ मेदि रवि राइ ॥६१॥

राउ वीरम के पाँच बेटा

प्रथम राउ चोडौ १ गोंगा २ देवराज ३ जँसिप ४ बिजा ५

दोहा

प्रथम राउ चोडौ भयो निजकुल कैरवु इहु ।
जगमगातु जिहिवस महँ भी जसरान नरिहु ॥६२॥
गुनिधि गोंगा दूसरो प्रगथ्यौ परम सपूतु ।
अनी विदित या वस महँ सतु गोगा रजपूतु ॥६४॥
और औतख्यौ तीसरो देवराज सुम भोग ।
अनी देवराजोत भट वसुह बपानत लोग ॥६५॥

चौपाई छंद

चौथौ छत्रेसिंह इहि गाइ बिजा पांचथौ सत्व सुभाइ ॥६६॥

दोहा

तिरु धनी तिरामहँ भयो चोडा परम प्रचहु ।
तिरु प्रताप वर नृगनि सँ लयो आगति दहु ॥६७॥

राउ चाँडा मंडोवर अरु नागोर आगे जोर सौं लौनी तहाँको

कुँडरीया छंद

भुज जोरनि चाँडा बली रची महा रन रारि ।
देस कन्धौ बस आपनै अगनित दुअन संघारि ॥
अगनित दुअन संघारि कित्ति चहुं चफ चलाई ।
अर्जौ सकल नरनाथ फरत निनि र्जौस बढ़ाई ॥
मारवाइ मन्वान आन फेरी चहुं थोरनि ।
मंडोवर नागोर लइ चाँटा भुज जोरनि ॥६८॥

राउ चाँडा के वारह वेटा तिनके नाम

चौपाइ छंद

पूर्नी सत्तउ सहसमल वीर अर रुमलु रावतु रनधीर ।
कांन्ह भीम सिवाराजु वपातु लौभौ दिजौ रामदे जानु ॥
चाँडा छुन वारह विरदेत सबमहँ रिणमल राउ टीकेत ।
बळ्यौ सबनिके वंतु अपारु वरनत होइ प्रथ दिग्गार ॥६९॥

राउ चाँडा के टोके रणमल तिनके वंसमहँ महाराजाधिराज श्रीजसवन्तशिषजु

रणमल के चरित्र वर्णन

भयौ राउ चाँडा तनय रनमल रन विरदेतु ।
सौं प्रगथ्यौ राठीर कुल ज्यौं कुर कुल कपिधेतु ॥७०॥

राउ रनमल को कवित्तु

बाकी गरुचाइ माप दादेतैं सघाई गाई गीरजान लोकहू बढ़ाई भुजबलकी ।
पारथ लौं भारथु मचाइ राइ चाँडा तनै रापो कहुँ नैकन निसांनी पलदलकी ॥
औरनि जनम कमाई की निकाई जिहि जगत लपाई करतूत एक पलकी ।
बैरनि की जाई रनाई राई राई कैकै मेरुसी जनाइ ठकुराई रनमलकी ॥७१॥

राउ रनमल एकसौ साठि १६० जालौरीया कुत्रामहँ बोरे तहाँको कथा

साठि अधिक अरु एक सत जिन जालौरनरेस ।

सत्र रिपु बोरे कुन महँ रनमल मारु देस ॥७२॥

एक समय रामल बली पीरोपां पठावु ।
 कस्थी पराजित समर महँ हथी महसुद पावु ॥७३॥
 जव जीस्यो रनमल बली बैसलमेर नरेसु ।
 भाटी भाडु पठाइ तव निर्भय माग्यो देसु ॥७४॥

राउ रनमल के चौबीस बेडा तिनकी विगत

महाबाहु विरदेत मनि	रनमल सुन चौबीस ।
भये आपनी आपनी	ठीर सकल पुहमीस ॥७५॥
सव विधि जेठी सवामहँ	जोधा राउ टीकैतु ।
गयो पाछिलै नृपनि महँ	महावीर विरदेतु ॥७६॥
कुल मडनु मडनु विपौ	जा जसु बसुधा छोर ?
अर्जाबित्ति ता घस महँ	मडणोत राठौर ॥७७॥
अपेरात्र तीजो तहा	सुप समता पुरहूत ।
कृपा अरु जेताबियौ	जा कुल महँ रजपूत ॥७८॥
अगनित कृपावतनि महँ	राजतु नाहर पावु ।
जा सिरपर असराज नृप	तीन्यो कृपा वित्तावु ॥७९॥
चौधौ नाथा चतुर मनि	जा जसु गीरधि तीर ।
अर्जाबित्ति ता वसमहँ	नाथावत बरबीर ॥८०॥
भयो पांचवौ पुहमि महँ	डूगर सत्व सुमाउ ।
जगमगत जग मडलहँ	डूगरोत भट राउ ॥८१॥
भयो करज समता करतु	छठवौ दाउ विवेक ।
अर्जाबित्ति करैत भट	भुअ अगनित अमेक ॥८२॥
रूप नाम सम सातवौ	रूपी भट सिरतावु ।
अहँ रूपावतनिकौ	राजतु बसुह समावु ॥८३॥
रनमलोत सुत आठवौ	चावौ तेज निवावु ।
अगनित चौपावतनि महँ	राजतु धीटलद्रावु ॥८४॥
तवयो पाता औत्स्यौ	पूरत कला समेत ।
अर्जा जगमगत जगन पर	पातावत विरदेत ॥८५॥

दस्यौ बाला विधि रन्ध्रौ	महा निपुण सत्रभाति ।
अजहूँ बालावतनि की	जगमगाति जगपांति ॥८६॥
कंधिलु सुभट इग्यारहों	भयौ महारनधीर ।
कंधिलोत राठौर की	अर्नों वसुँ ह बहुभीर ॥८७॥
हुअ सायर छुत्र वारहों	मनहुँ वारहूँ भानु ।
अल्प वेस न्हे आथयौ	वसुधा तेज विधानुं ॥८८॥
भयौ तेरहँ तेज निधि	लप्रो लाप्रमहँ सूर ।
सुअनु चौदहों औतस्थ्यौ	हापौ गुननि गरूर ॥८९॥
प्रवलुं पंद्रहो मंडलौ	सफ्तु सोरहौ वीर ।
प्रगट्यौ सांडौ सत्रहो	महावली रनधीर ॥९०॥
इकु अडवाळु अठारहों	सुत्रु ऊजरौ उदार ।
उणईसो ऊधौ गण्यौ	दुसह दुअणजित वार ॥९१॥
सत्रसल्लु सुत वीसयौ	वीस त्रिसैं बलवंतु ।
इकईसौ वैरो भयौ	वैरसिरीकौ वंतु ॥९२॥
जेतमाल सुत्रु वार्ईसौ	भान समान उदोत ।
अर्नों विदित वा वंस महँ	पेतर्ष्योत राठौर ॥९३॥
चोवीसौ भापर भयौ	सकल कला करतार ।
इहिविधि षाड्यौ वंस महँ	रनमल कुल विस्तार ॥९४॥

राठ रणमल शीतोडगढ भाणजकी सद्दाइ कहँ गए तहां दगादे
मारै तहां की कथा

लापा पेता वंधु द्वै	गढ चीतौर नरेस ।
लापा रनमलकी बहनि	व्याह्यौ मारु देस ॥९५॥
प्रल घंडन पेता तहां	वढइनि वरी अनूप ।
जिहि वीत्यौ रनवासु सत्रु	सरस आपनौ रूप ॥९६॥
इचु चाढा तनय तने	मोकल गुननि गरूर ।
वढइनि जाए पूत द्वै	चाचा मेरा सूर ॥९७॥
चाचा मेरा लोभ रत	मोकल मास्थ्यौ ठौर ।
सकल देसु वस आपनै	दुहुअन कस्थ्यौवरजोर ॥९८॥

यहलुनि गढ चितौर कहँ पहुँच्यौ रामल राउ ।
 कूभा भानेजोतकीं मन प्रच कस्थी सहाउ ॥९९॥
 चाचा मेरा कहँ तथा पईपहार भजाई ।
 कुअरि दुइनकी लईसब राठोरनि पराई ॥४००॥
 कुभकरनु निषकुमतिवस आइनु षई टिग जाइ ।
 सोवत निसा निसाकचित मास्थी रनमल राइ ॥१॥

राउ रनमल के जेठे राउ जोधा तिनकौ जन्म सबत्

दोहा

चौहदे सई बहत्तरा १४७२ सचठु माधव मास ।
 भूअ भूपन रनमल तनय जोधा जनमप्रकास ॥२॥

राउ जोधा को बर्णन

धनाछरी छंद

लीनें बरजोर वाके गढ डीर डीर दीर जहा जाइ बार कमरु के वैगु वाइको ।
 कईयो चार कौपे रिपु फटक सधास्थी जिदि मास्थीमहि मोजनिमजेजु दरियायिकी ॥
 जाकी तेज आवि जिति और छोड तासो गयो साकरँ सहाईसदा सहज सुभाइको ।
 अजौ लो'मिहात चारथी चकके नूपनि औसौ जसु जगमगतु जगत जोध राइकी ॥३॥

राउ जोधा बापु की वैरु लीवे कह चोतोर गढपर चठि गपु तहाँ

राना कूभा कहँ विचलायो बहुरि पाछे सलाह भइ पहुरि

आइके जोधपुर बसायो तहाँकी कथा

कुवरीया छंद

भुअ भूपन जोधा बली सोरि बापकी वैरु ।
 कुमा कारन रोस चित धाइ करयो गढवेरु ॥
 धाइ करयो गढ वेरु सबकिहँ सकटास्थी ।
 रिपु राना विचलाइ वाइ देखेनिनास्थी ॥
 बहुरि आइ रठवेरवत सरसीवेइ पृथा ।
 रच्यौ जोधपुर गाव राउ जोधा भुअ भूपन ॥४॥

भूअ भूपन रनमल तनय जोधा जोधा राउ ।
 पंद्रहसैं पंद्रहोतरां रन्थौ जोधपुर गाउ ॥५॥

राउ जोधा गयाकी जाना कहैं गए तहां जौनपुरकौ साहिबु बाइकें पैडे महँ मिल्यौ राउ
 जोधा की महिमा कीनीनि यह मारगौ दिलीके पातसाह सौ हर्महि वचाउ । राउ
 जोधा तिहिंकी और व्हे कै बहलोलपासों लरे । बहलोलषां कौ भाइ सारंग
 षानिहि मार्यौ । गयाकौ कर दूरि कीयौ तहांको कथा

दोहा

गया करन निज तातकी गये जोध नृप राइ ।
 ईसु जौनपुर को तहां मिल्यौ अगाउ आइ ॥६॥
 सेवा करी विनीत तन मजलि द्वैक पहुँचाइ ।
 मांगी अभै दिलीसकी दई तहां तिहि आइ ॥७॥

कुंवरिया छंद

जबघेर्यौ बहलोलषां जाइ जौनपुर ईसु ।
 तत्र सहाउ जोधां कर्यौ रन भजाइ दिलीसु ॥
 रन भजाइ दिलीसु और कौ संकटु टार्यौ ।
 बहुस्थौ सारंगपान नाई रिपु बंधु संघास्थौ ॥
 गया नगर पगुधारिअ करकैं दुंदुभी फेस्थौ ।
 भली करी राठौर जहां जाकहँ जत्र थेस्थौ ॥८॥

राउ जोधा के चौदह वेटा तिनकी बिगति

महाराज जोधा तनय चौदह वीर समथ ।
 जिनि पुरिपारथ आग्नौ भवनि करी सवहथ ॥९॥
 प्रथम राउ सूजा त्रियौ सातलु गुननि गरुड ।
 तीजौ वीका साहसी चौथौ दूटा सूरु ॥१०॥
 राइपाल हुअ पाच्यौ छठौ कर्मसी धीरु ।
 सचविधि पूरौ सातथौ भयौ वसुंह वण वीरु ॥११॥
 सीविराजु इकु आठथौ नवथौ नीत्री नाइ ।
 बाहू बल बीदा दमों प्रगट्यौ सत्व सुभाइ ॥१२॥

सामतसिद्ध	इग्यारहों	माहु हर्यारहों रुद्र ।
भारमल सुतु	बारहों	उपज्यौ सील समुद्रु ॥१३॥
प्रगथ्यौ वगसिघ	तेरहों	सुअनु महा कर्मोतु ।
जोगी जनम्यौ चौदहों		जग प्रसिद्ध वरदेतु ॥१४॥
कश्यौ वास नीका नली		वीकोर यसाइ ।
अजों निटिति वा वसमहँ		कर्णादिक सत्र- राइ ॥१५॥
दुदा दुसाइ प्रताप तिधि		वस्थौ मेरता ओर ।
जगमगातु जिहि वस महँ		मेरतीया राठौर ॥१६॥
मेरतीया राठौर की		चटुनिधि विगति अपार ।
छा वरनत द्वे भारि भट		दूटाकुल सिरदार ॥१७॥
राजतु सु दरदास सुतु		मेरतीया गोपालु ।
जिहि देपत समाम महँ		होतु दुअन दल चालु ॥१८॥
वीर विशारीदास सुतु		श्री वनमाली दास ।
गोकुल सु दरदास वतु		गनीयत सुजस निवासु ॥१९॥
रामदास सुतु जगमगातु		जगतसिनु जगजानु ।
राइसिधु सुतु सील तिधि		दाता सुभट सुजानु ॥२०॥
राईपालु अरु कर्मसी		वसे धीं वसर गाऊ ।
कर्मस्थौत पीपार की		प्रिष्ठीराज सुभ नाऊ ॥२१॥
द्रु नाडे सिवराजु इकु		वस्थौ सुभट सिरमौर ।
गणु आर साइसी		सावतसिद्ध राठौर ॥२२॥
भारमल धीलारपुर		जिहि जीःथौ रिपु गोतु ।
अर्जा विन्ति वा वसमहँ		पृथ्वीराजु मलौतु ॥२३॥

। जोधा वनहुदिन राज कैने पद्रहसे पैतालीस सनत्सर १५४१ स्वर्गवासकियौ । तब तीन बरस सातल जोधपुर की राजु कियौ । पोछै राज सूजा पाट बैठै । तिनके वसमहँ महाराजाविराज थोमहाराज जसवतसिधजो तहां की कथा ।

पैताला पद्रहसइ जोधा निजकुल इतु ।

दइतन तन वरपद्रै सातु भयौ महीनु ॥२४॥

राउसूजाके जन्म कौ संवत्

चौदहसँ छिहानवा भादव सुभनिधि चार ।
कुल पुनीत सूजालयौ जोधां घर अचतार ॥२५॥

राउ सूजाके पाठ बंटे कौ संवत् ।

संवत् पंद्रहसे चरप वीतत अइतालीस ।
मारवार टीका लख्यौ सूजा कमधज ईस ॥२६॥

राउसूजा कौ वर्णन
घनाछरी छंद

जोधाकौ लाडिलौ जग जोधनि कौ जैतवार महारिपु भेदक निकाई नीके नाइकी ।
सीलकौ सागर कर्मनांनि कौ कलपनर औतख्यौ अमर सदा सुमति सुभाइकी ॥
रमापाइ जिहि रमा रमनुं रमायौ गायौ सत्र विवि पूरौ ऐसी परनिसु दाइकी ।
पूजा रत होत दूजा पूज्यौं न भगतु सेंघ औसौ राउ सूजानंद सूजाकी सुहाईंकी ॥२७॥

राउ सूजाके आठ बेटा तिनकी विगति
दोहा

आठ आठ दिगपाल सम सूजा सुअन समथ ।
दान कर(ण)ज्यौं औतरे पुरुवारथ ज्यौं पथ ॥२८॥
प्रथम कुकुर हूँ आथयौ वाघौ तेज निधानुं ।
दाहत रिपुकहँ छहूँ रितु ज्यौं ग्रीषमरितुभानुं ॥२९॥

राउ वाधा कौ वर्णन

बीर्यौ कर कणी करनुं दानुं दैदौ सदा सांकरे चरन सरनागतु वचासौ है ।
सूजाकौ सपूत रन बांकौ रजपूत ग्हे पुहुमि पुरहूतु पुरहूतु समगायौ है ॥
पुन्ब नौकां बैठै छत्रत्रितनि कठैठै जिहि जगहूसौं अँठौ भवनिधिपार पायौ है ।
अजीं सुर ओकलीं धिरपु भुअ लोकजीच औसौ राउ वाधां जसु बीजु वगरायौ हैं ॥३०॥

राउ वाधा कौ जन्म संवत्

पंद्रहसँ चौदह अधिक वीतत संवत्तु मानु ।
सूजा नृप उर औतख्यौ वाघा तेज निधानुं ॥३१॥

राज बाघा कौ स्वर्गवाम कौ रावतु

पद्मसै इन्द्ररा १५७१ बाघा भट विरताज ।
 कुभरायम मुअ लोडुतजि वैठ्यौ देव समाज ॥३१॥
 सरनागतु पालकु बियो सेपौ पुहमी । प्रवीनु ।
 तीजौ उदौ जिहि कस्यौ दुमद दुअन दल छीनु ॥३३॥
 दान कल्पतष औतस्यौ चोथी देईदासु ।
 प्रागु पाच्यौ भयो भुअ पूरा सुजसु निवाछ ॥३४॥
 पाहु बली सागौ छठी प्रगत्यौ परम सपूनु ।
 नरी सातयौ जहां तें गयौ नरी रजपूनु ॥३५॥
 सुनु आठयौ तिलोकसौ भयो सुभट अवतछ ।
 इहि त्रिधि याठ्यौ वसमहँ अगनित सूजा वसु ॥३६॥

राज सूजा चौबीस वरस राज कियो पद्मसै चहतरां स्वगवाछ कियो
 तब राज गांगा टोके बैठे राउबापाके बेटा तहांकी कथा
 दोहा

राज कस्यौ चौबीसवरस सूजा पूरन नाम ।
 पद्मसे नहतरा गोनु कस्यौ सुरषाम ॥३७॥

राउा बाघा के पांच बेटा तिनकी विगति
 प्रथम राज गांगौ १ वीरमदे २ जेतसी ३ पेतसी ४ प्रतापसी ५
 दोहा

बाहुबली बाघा सुभन दुअन दल मलन पाच ।
 दिगपालनि दाहति रही जिनकी तीछुन आंच ॥३८॥
 प्रथम राज गांगौ विधी वीरमदे बलवानु ।
 गम्यौ जेतसी तीसरौ जग सुरता निधानु ॥३९॥
 चोथौ प्रगत्यौ पेतसी अपे चौगुने चाइ ।
 भुअ प्रतापनिधि पांचयौ सुनु प्रतापसी नाइ ॥४०॥

टोका के धनी राज गंगा तिनकी जन्म सबतु
 चालीसा पद्मसै सई रिनु बरुत रमनीय ।
 जायौ बाघा राइ सुनु गांगा सुन कमनीय ॥४१॥

राठ गांगा टोके बैठे तबको संवतु

पंद्रहसँ चहत्तरं गुननिधि गांगा राठ ।

टीका बैठयो ओत्तपुर कस्यो प्रजन यहँ चाड ॥४२॥

राठ गंगाही वर्दन ।

राठ गांगा दीनशीकाको फौड विगलद फौडको हाकी मगुयो तहाको कथा
मनाएग राठ

बोळति गर्नीम सुदी मुंदासँ मगयो थाकी राठोर अगीअनीमेदमर सुखु दकाइके ।

दासनहुमर आमैऊनयो पण्डविमि थोदय अमकं मयो कट्टु गहाइके ॥

तहांराठ गांगा कुंभु दाननि विदाभिकारि रागे सुहुनाइय पमुंठ मगमरके ।

केसँ भगदत्त पीट पाग्य संघारयो ओसँ महागुन मारयो मीर नाजावन पाइके ॥४३॥

राठ गांगा सोरद बरम राठ कियो पाछँ एगंगण विमो तहाईके संवतु

पंद्रहसँ अठयासीयो गुननिधि गांगा राठ ।

कस्यो गीनु सुगुलोवहँ पूरन मल सुमई ॥४४॥

राठ गंगाके छव भेटा तिनको विगति

पट परमित गांगा सुभनु जिनयो जगल मराइ ।

सधमहँ जेठे मागुयो मारु मंडल नाइ ॥४५॥

मानसिध विवि भान सम प्रगठयो सुदमि प्रगठु ।

कृष्णदासु सुतु तीसरो कृष्ण भगत निव आपु ॥४६॥

कान्द नांम थोथी तखु प्रगठयो पुरमि धनेसु ।

भयो तेजवी पांचयो सुतु गुन गनिन गनेसु ॥४७॥

बैरसलु छठयो सुधनु रच्यो विरंचि संवारि ।

अमर बेलिची चौभई गांगा कुंड चटवारि ॥४८॥

राठ गंगा के जेठे राठ मालदेक टोका के धनी चक्रवर्ती राजा भए । असोदजार घोरा

संग षठे तिनके धंस मँह महाराजाधिराज महागजा श्री जसवंतसिंघजू

राठ मालदेक कौ जन्म संवत्

पंद्रहमे अर अरसठाँ १५६८ संवत् की परमानुं ।

राठ मालथी ओतरयो नंग सरोरह भांनु ॥४९॥

राठ मालदेव की गाठ बैठ श्री मन्त्र

पद्मदर्श अठानिना सुभ नभन सुभ जोगु।
पाठ बैठ नृप माल्यो कथ्यो इद्र सम भोग्य ॥५०॥

राठ मालदेव की वर्णन

छ द घनाधरी

राज रांनो राइ उमराइनि सर्वांग सिव नाइनाइ पाइन करी स शीप सेरणी ।

चमवर्ती भयो ननु तपन टी तया भुअपभु व्हेंके गयो सुरलो रणिकी देवणी ॥

ज कीपाक थाइ तीर्थी गिगि टवाइ बाइ पहुची पछाइगीय दावतहरेवणी ।

शिलीस हूगाइ छिति और जोग्याइ अगी निमल उसाइ माहागाउ मालदेवकी ॥५१॥

राठ मालदेव की घरती की विगति

दोहा

सोभत नाभर मेरता गाटू गढ बनौर ।
कोट हाटगी राइपुर भाद्राजत गागौर ॥५२॥
सीवानौगढ लोइगढ जयत धीकानेर ।
भगि माल अरु पुइरनु छट्ट राइमेर ॥५३॥
रंवाधौ अरु वासनी जोजावर जालौर ।
नू भलमेर गाडूल अरु फलोधी साचौर ॥५४॥
डिंडवानी अरु चाटनु फतपुर भवनाइ ।
उष घरती चीतोरणी लइ माल्यो राइ ॥५५॥
जीत अ रसर कोटरी और सामइ गांनु ।
पावडि अरु वानीरपुढ लयो मालदे राउ ॥५६॥
टूक टोही अजमेरगढ कीर्ति माल्यो कीर ।
सब उमराहा व्हें तहा घाटि दर्ई लुगीर ॥५७॥
जीति जानपुर उदेपुर परम तेज पहुचाइ ।
राता व्हें टुर माल्यो राधौ घननि भजाइ ॥५८॥
अभी सदस घोराणिअ राउ माल्यो थापु ।
छटातहा सब रनि व्हें प्रगल्पो परम प्रगापु ॥५९॥
तपोचट्ट दिवि मागौ मटोवर गणेशु ।
वाति करी गणिारणी लनी विरोही देनु ॥६०॥

मालदेव सम दूसरो भवौ न भूपति औह ।
जिहि कुलमहँ जसवंतवृषु जगमगातु राठौद ॥६१॥

राठ मालदेव के बाठ बेडा तिनकी धिगन
जेठे राम १ उदैसिंध २ चंद्रसेन ३ भोजराज ४ रतनसो ५ राहमल ६
विक्रमादित्य ७ भान ८ नितके
दोहा

मकल लीकू अभिरामु इकू भयो राम मम रांसु ।
उदैसिंह गुठू दूसरी हुयो मकल नृप धासु ॥६२॥
चंद्रसेन हू तीसरो चौथो रतनु महीपु ।
भोज पांचयो अरु छटौ राहमल कुंठ दीपु ॥६३॥
विक्रम सम तुनु सातयो भयो विक्रमादित्य ।
भानु आठयो भानुकी नयो हुअन कहँ नित्य ॥६४॥

राठ मालदेव चंद्रसेन कहँ रासु दियो । तम राम राना के उहाँ बाठ रहे ।
उदैसिंध अकबर पातसाह कहँ जाइ मिले चंद्रसेन मो जुद्ध कियो
तहांको क्या

दोहा

चंद्रसेन कहँ माल्यो द्यो जोगुपुर वासु ।
राम अछत ज्यौं भरत कहँ दसरथ ओष निवासु ॥६५॥
रांसु गयो रांना निकट उहै दुजह दुसुपाइ ।
उदैसिंध दिलेस कहँ सेयो तापन भाइ ॥६६॥
कछु दिन महँ सुरपुर गमनु कस्यो माल्यो भूप ।
चंद्रसेन भुगवन लग्यो भूतल तात सरूप ॥६७॥
उदैसिंध अरु राम तत्र दुहुन दुहुं टिसि धाइ ।
चंद्रसेन नरनाथ कहँ घेस्यो नगर दवाइ ॥६८॥
चंद्रसेन नृप राम सीं मेठ कस्यो इहि और ।
समर हेत धायो तहां उदैसिंध जा ठौर ॥६९॥
ज्यौं अरजुन अरु करनुं जुरि भीम तुजोधन वीर ।
जुद्ध कस्यो त्यों चंद्रवृष उदैसिंध रनधीर ॥७०॥

बुद्ध और दोऊ पवट नैछुहु भई न शरि ।
उदैसिध तत्र कञ्चु दिननि रह्यौ रोसु मन मारि ॥७१॥

राम कहँ सोमति दोनी चद्रसेन सौं सलाह भई

दोहा

राम पाइ सोभत नगरु मानिलयो सतौपु ।
चद्रमन नरनाथ सी कस्थौ वैरुने मोपु ॥७२॥

राम क सात बेटा तिनको विगति

महाबाहु विरदेत मनि भए रामसुत रात ।
जिाकी कीरति अर्जाछनि होत हरप जुत गात ॥७३॥
प्रथम राउ पूरामल करनु करनुसम और ।
फलाराद भूति कह्यो वैसव कुल सिरमोर ॥७४॥
छटो गाराण औतस्थो बसुह विमल बसु नासु ।
मदान्छी सुत सातयो गनियत राघवदासु ॥७५॥
चोली माहे सुख द्यो वैसव कहँ टिलीसु ।
अर्जा विदित वा वस महँ दजिन दिसि अवनिसु ॥७६॥

चद्रसेन के तीन बेटा

उमसेन १ आसकरन २ राईसिध ३ तिनकी विगति
चद्रसेन अगरीव कौ उमसेन बर भीरु ।
आसकरन अरु औतस्थो राईसिध राधीरु ॥७७॥

आइहँ चंद्रसेन राउ दियौ तव आसकरनु कहँ उमसेन मार्यौ आसकरण के पवान उमसेन कहँ
मार्यौ तव उदैसिध कहँ आइभर पातिसाह राइ ते मारधार को राजा कियो । राईसिध कहँ
अरुनर पातिसाह सिरोही पठ यो । तहा राईसिध जूझे । तव मोटे राजा सिरोही पर चडे
सिरोहीको राउ मार्यो सिरोही अपनी करै पेगकयो लीनो सिरोही कौ राउ
अपनो वै मार्यो तहाको कथा

आसकरन कहँ आपाँ चद्रसेन दियौ राउ ।
गिा कटुदिा राजाकट्यो मारु लोक समाउ ॥७८॥
उमसेननि अजुज कहँ द्यो कयारी खोर ।
उमसेन कहँ द्यो चीधरीया रादौर ॥७९॥

उदैसिंघ कहे छत्रपति द्यौं जोधपुर गाऊं ।
 सबविधि मोठ्यौतगधख्यौ मोटा राजा नाऊ ॥८०॥
 संवत् विक्रम नृपति के सोरसें चालीस ।
 उदैसिंघु राजा कख्यौ अकवर साह दिन्हीस ॥८१॥
 पाई बापकी साहिबी वही कमधज कुल ईस ।
 मागवार भुगवन लख्यौ उदैसिंघ अबनीस ॥८२॥

सोरठो

उदैसिंघ महिमेरु एक दिवस रनवास महे ।
 राइसिंघ कौ बैरु सोरत त्रिय दुपित भयो ॥८३॥

छंद पाधरी

आगिले दिवस मोरु नरेस दल सख्यौ सिरोही विकटदेस ॥८४॥
 जत्र चली सेन चतुरंग संग रथ सहस पयादे गज सुरंग ॥८५॥
 तत्र सहस सेरु कूरम समेत दल भारु भयो व्याकुल अचेत ॥८६॥
 नभ धूरि पूरि सुदि गयौ भानु चहुँ और मनहुँ तान्यौ चितानु ॥८७॥

दोहा

उदैसिंघ नगनाथकी निफट अवाई होत ।
 आवू नाइक यौ भज्यौ ज्यौं तसु तरनि उदोत ॥८८॥

मोटे महाराज राइसिंघकी पुनीसि कोपु कख्यौ जैसीं भारत कथानि गाईयतु है ।
 दिग्धगढ एकहीं हला हलायो जाइ जैसें तरवर पौनकी हला हलाइयतु है ॥
 देसु दलमल्यौ दल्यौ बैरीकौ कटकु जसु छीरनिधि छोरलौ छत्रीलौ छाईयतु है ।
 औसँ उदैसिंघ आवूनाइते उता ख्यौ नीरु अजौं नीठि सल्लि सिरोही पाईयतु है ॥८९॥

दोहा

सदन सिरोही देस महे सब सब ठौर दहाइ ।
 सुजसु प्रभलीं चौहरे रापे थिरु अपनाइ ॥९०॥

सोरठा

तीछन तेजु जनाइ उदैसिंघ नृप दयानिधि ।
 कलुक वंडु कुनुलाइ थिरु थाप्यौ आवू निलकु ॥९१॥

दोहा

आन आपनी चहु दिनि फेरि मिगोही देस ।

उदैसिध राठौर मणि आवे मारु देस ॥६२॥

उदैसिध कै ग्यारह बेटा तिनमें महाराजाधिराज महाराजा श्रीजपवंतसिधजू

उदैसिध के बेटानि के नाँव

दोहा

उदैसिध अवनीप सुनु ग्यारह उदित उदार ।

राजवनी नृप सूर तथा मारु भुअ भरतार ॥६३॥

भयो दूसरी सुभट मणि किसनसिध भुज जोरु ।

अर्जी विदिति वा वसमहँ रूपसिध राठौर ॥६४॥

सकतिनिधु सुनु तीसरी चौथी नरहरदासु ।

अपौराज पचथौ छठी भुगति तेन निवासु ॥६५॥

बेतसिनु सुनु सातथी अठथी दत्तपति राइ ।

ननथी मोहनु अरु दसौं माधौ सत्य सुभाइ ॥६६॥

सुअनु ग्यारहौं औतख्यौ भट भूपन भगवानु ।

गोटे राजा कौ बछइ इदिनिधि बसवतानु ॥६७॥

सब मँह टोका के धनी महाराजा सुरजसिध तिनकौ वर्णन

सूर्यसिध को जन्म कौ सषतु

सनत सोरहसँ वरप धींती अठाईस ।

उदैसिध घर औतरे सुरसिध अयनीस ॥६८॥

महाराजा सुरजसिध कौ पाठ बँठे कौ सबतु

सोरहसँ अरु यानना सचतकौ सचाह ।

छत्रपति अकधर सूर सिर राप्यौ मारु भाइ ॥६९॥

सूरसिध नृप नीति रत राजुकख्यौ इदिरीति ।

हथी सहोदर अनुजहु देपत दगनि अनीति ॥७०॥

गुजरातिकी सु हीम महाराजा सुरसिध महादुरसाहब कौ विचलायो

तहाकौ क्या

दोहा

तगमर्गा गुजरात अम प्रथी बाहादुर साहि ।

दूरकख्यौ यह सूर गम सुरसिध नर गौद ॥१॥

सूरसिंघ कहँ छनपति अकबर गाह नरेस ।

पटयौ साह निजाम पर जीतन दछिन देस ॥२॥

छंद पाभरो

नृप सूरसिंघ दछिन पभारि जसुल्यौ सकल दुजन संघारि ॥३॥

दछिन की लड़ाई महाराजा सूरजसिंघ तै तहां को वर्णन

छंद घनाछरो

दछिन मुंहोन मरदानै सूरसिंघ महामार कौ मचायौ तिषवारे सचरत है ॥

सोनितकी सरिता तरानै रूंड मुंड जेसैं सिंधु घींची घीच जल जंतु बिहरत हँ ॥

× × × × × ×

एते मान आमिय अवाने पग आसमान अजौं लौं अजीरनकी भावरे भवत है ॥४॥

महाराजाधिरज सूरजसिंघ के नाराहन आनदघन कौ रूप धरि आपु छाड़

वासु कियौ

दोहा

छत्र धर्म रत सत्व निधि सूरसिंघ अदनीसु ।

यह विचारि आनंदघनु पगट भयौ जगदीसु ॥५॥

सूरजसिंघके द्वै बेटा जेठे महाराजाधिराज महाराजा श्रीगजसिंघजू,

लहुरे सबलसिंघ

दोहा

सूरसिंघ उर औतख्यौ श्रीगजसिंघ नरेसु ।

जिन भोगियौ सुरेस सम निरुम मारु देसु ॥६॥

और मातु उर औतख्यौ सबलसिंघ सुतु धीरु ।

बाहुबलीरण वांकूरौ ग्याता गुननि गंभीरु ॥७॥

महाराजा सूरसिंघ देवलोक वासकियौ तब कौ संवतु

सौरह नई छिहंतरा सूरसिंघ नृप जानु ।

राजु भुगै चोवीस वरप उग्रपुर कियौ प्रयांतु ॥८॥

महाराजाधिराजा महाराज श्री गजसिंहजी को जन्म सबतु

सौरहसैं अरु वावना उभ संवतु परवेसु ।

सूरसिंघ उर औतख्यौ श्रीगजसिंघ नरेसु ॥९॥

महाराजाधिराज महाराजा श्रीगणेश मिश्रजी को वर्णन

घनादरो छ द

भाषक अछाकू अरापनु सभारिआपु जालौर पघारि रिपुसेना विचलाई है ।

पाई जहागीरकी रजाइ विरु नाइ साहिजहाहु सौ वारएक लराइ मचाई है ॥
दिलीपति हेत नहां जहाँ कामु पर्यौ तहाँ पारथलौ लख्यौ कस्यौ कोऊ न सहाइ है ।

छीरनिधि छौर लौ छत्रीली छहूरितु गजसिंघजू की जसकी निकाइ छिति छाइ है ॥१०॥
हार दैदे हीर दैदे चामीकरु चीरु दैदे हाथी दैदे दीन विपति बहाई है ।

परदलु पले आपु समर अनेलेमहा मोहुघर बरिनकी भिरो परनाइ है ॥
दल्पति देव द्विज दिलीपति विनु जिदि सपोहु काहु कहँ गीवन नघाई है ।

छीरनिधि छौरलौ छत्रीली छहूरितु गजसिंघजू की जसकी निकाइ छिति छाइ है ॥११॥
उपवन लाए कूप तलाइ बाणए दिजदेव अववाए अधवासना मिटाई है ।

घोहरे कराए महादुख विमराए मेटे सकट पराए प्रतिपाल सरनाइ है ॥
बहित नवाए हितवरग बसाए हितछली निकासए नीति इहालौ चलाई है ।

छीरनिधि छौरलौ छत्रीली छहूरितु गजसिंघजू की जसकी निकाइ छिति छाई है ॥१२॥
चाही अनचाही टेक आपनी निचाही पातिसाही हू सराही ऐसी करी ठकुराई है ।

चपेते गवाही रज रीति एसि पाइ सिधुसीध अवगाही घाक तहालौ जाइ है ।
दरयो नैक जाही कस्यो महाप्रभुताही जाकी दादनी छमाइ और भूपकी रजाइ है ॥

छीरनिधि छौर लौ छत्रीली छहूरितु गजसिंघजू की जसकी निकाइ छिति छाई है ॥१३॥

दोहा

श्रीगजसिंघ नरिदके अगनित महल समापु । -

पटरागी सकमायती जिदि जनम्यौ बसरापु ॥१४॥

सोनिगरी उर औतख्यौ महाराउ अमरेसु ।

आपुजिय गजसिंघनूप आभरँ दयो - विदेसु ॥१५॥

अमरसिंघ आबपरास महँ सलावतपां कहँ गस्थो आपुहु जूके तहाको

कवितु

आवपास आत्मपनाइ सनमूप घोले कस्यो कुबोलनि कुमाति सतराइ के ।

आघीही जपानी महामानी अमरेस माख्यौ एकही पटारी सूह सलावत घाइके ॥

पाछे पाछे आपुछे पथास्त्री सुप्र तर भाष्यो नम लोगनि उरुति उरुजाइके ।

बान्धी जिय अंतर भिट्यो न रोमु गंइजाइ देई जमलोकुहुं सजाइ पुनि सार्के ॥१९॥

श्रीमहाराजा श्री गजसिंघजू के नगना श्री जसवंतसिंघजू
टोका के भनी तिनको जन्म संवतु

संवत सोरह सई ब्यारि अनी नितीत तत्र ।

वर जूहानपुर सहर मथ्य प्रगट्यो मुहाम तत्र ॥

लगत माइ तिथिनोय समय मथ्यान्ठ श्यभिजित ।

नागाढण चक्रपान लगन लिपिय दिचारि चित ॥

सभ जोगु करतु मुम मुम नभतु सुम अइ मुम तारादिबर ।

गजसिंघ रगनि ररुमाग्नी सुनभयो जनो जुगजुमअमरु ॥१७॥

राजागजसिंघ के रवगंवाम को संवतु

सोरहस पचानवा श्रीपम लागतु मानु ।

श्रीगजसिंघ छिनीसमनि कख्यो देवपुर वाम ॥१८॥

श्री महाराजाधिराज महाराजा श्रीजसवंतसिंघजी के पाठ बंठे को संवतु

पंचानवा अमाठ बदि शुरु सतमी माइ ।

तिलक कख्यो जसराजसिर माइजहा नरनाह ॥१९॥

महाराजाधिराज महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू को वर्णन

प्रथम आसीवाँद

जौं लगि तरनि तारायनु तारापथु थिरु जौंलगि पवनु पय पावकु पुहमिवर ।

जौंलीं अलका निवासु करतु कुवेरु कयलास कामरिपु कनकाचल वसें अमर ॥

जौंलीं चाख्यौं वरनविदित चाख्यौं वेदवानी रामराजधानी कीरति गावतिनर ।

मारवारधनी गजसिंघको सपूतु तौंलीं जसवंतसिंघ चिरजी वहु जगतपर ॥१६॥

जौंलीं सातीं समुद सुमेरु सुरतरु जौंलीं जौंलौमुअ भारु सेस सीसतै न टर हैं ।

जौंलीं अमरावती उदित मघवान रहैं जौं लगि अवनि अवतारधरें हरि हैं ॥

दलपति परम पुनीत चाख्यौं वेद जौंलीं जौंलीं गिरराज पर मनमथ अरि हैं ।

तौंलीं चिरुजीवौ महाराजा जसवंतसिंघु जौंलीं ससिभाउ भानुसुता उरसरी हैं ॥२०॥

श्रीमहाराजाधिराज महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू को जन्म स्तुति

वरष वरप प्रगटनु उहैं मासु पाप पाप तिथि आठयें दिवस चार भोगु है ।

अठईस दिन उहैं नपतु परतु प्रतिदिन उहैं लगन धरतु सवु लोगु हैं ॥

दल्पति गनक गात उहै रिनु बाही रासि रजनीसहू कौ होछ अधियोष्ट हे ।

जिहि जोगु जाग्यो जसकौ जसुराज एहु बहुस्थौ न दूसरे जनायौ बह जोगु हँ ॥२१॥

श्रीमहाराजाधिराज महाराजा श्रीगणवतमिधज्ज क वर्णामहँ पूर्ब पुरुपति कौ सिंघातलोकन
घनाउरी छ द

प्रथम पुरुष निरगुत जगदीश जिा सगुन सत्त्व सनु ससाधु गचायौ हे ।

बहुस्थौ विरचि नाभि कौलतै प्रगटव्हैक लोकनि रचत लोक नाइकु कदायौ हे ॥

महाप्यान निधि विधि मनसा मरीच बायो प्रजापति कश्यपु सपूतु जिदियायौ हे ।

बाही तप बाही तेज बाही रस बाही रोज बाही बस राजा जसवतसिधु जायौ हे ॥२२॥

पूर प्रतापनिधि प्रगट्यो दिनेष्ट जिद्रि आपनी किरन लोक तिमरु गसायौ हे ।

मान महोदधि और औतस्थौ महीपुमनु अजर अमर जिहि जस प्रगसायौ हे ॥

बाही तप बाही तेज बाही रस बाही रोज बाही बस राजा जसवतसिधु जायौ हे ॥२३॥

भयो मायाता एहु दूसरो त्रिधाता पिना माता लँ प्रजानि जिहि सुपथचलायौ हे ।

सत्यव्रतु नद भयौ भूपु हरिच दु जिहि सही दुप द दु तऊ सनु न डुलायौ हे ॥

महिमा महिदु गयो रोहितु नरिदु जाने नाइ रोहितासुगट्ट अगम जनायौ हे ।

बाही तप बाही तेज बाही रस बाही रोज बाही बस राजा जसवतसिधु जायौ हे ॥२४॥

मयकी निसनी सुर गगर सिंघास्थौ एहु सगर महीपु जिहि सागरु पनायौ हे ।

भूमिकौ भूपन भयो भूप भगीरथु आपु नाक गदी रयाइ जग तापुन घटायौ हे ॥

नृपति दिलीपु सात दीप कौ गवीप व्हैके आपुगौ प्रगापु इद्रलोक पट्टु चायौ हे ।

बाही तप बाही तेज बाही रस बाही रोज बाही बस राजा जसवतसिधु जायौ हे ॥२५॥

धनवती यौ कुल मडनु महीपु रघु चास्थौ चक वीति जिहि सुजसु कसायौ हे ।

अन अवागोपु एहु सिधुरसत्त्व देव गधर्व सराथ्यौ निज प्रकृति रसायौ हे ॥

कौसल अधिप नृप दसरथराइ सुर साकर सहाइ व्हैके साकरो टिमायौ हे ।

बाही तप बाही तेज बाही रस बाही रोज बाही बस राजा जसवतसिधु जायौ हे ॥२६॥

परम पुरष अनु औतरे जितोसराम रागन एतनेत चारिधि बघायौ हे ।

कुप लव दाऊ गधुनदा सुँचर जिा बाग्दसा लयो जसु ताततै सबायौ हे ॥

दल्पति आग आग आपने गुागि याप गदेको सवति गुायाउ पिठरायौ हे

बाही तप बाही तेज बाही रस बाही रोज बाही बस राजा जसवतसिधु जायौ हे ॥२७॥

दक्षिण दिगीसु दिगपाल सन एकमयो भरत महीपु पिना मरीच कसायौ हे ।

पुंज पुहमीस पुरहूत की वडाइ अभोगत पाइ कुल कलंसा चढायौ है ।
बंभ धरणीस तात सुता सुताहि काचुली गुजरात देसु दैकें भलो वाईकौ मनायौ है ।

वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रोज वाही वंस राजा जसवंतसिंघ जायौ है ॥२८॥
अभैचंद सुत महावीर त्रिजैचंद कुलचंद वही दुअनकाँ लोक सोक तायौ है ।

अमीलाप जोधनि समेत जयचंदनू। धेलत सिंकारु येरु मंदरु हिलायौ है ॥
संवति निर्धान महाजान वरदाइसेन सुजस वितानु जगमंडल तनायौ है ।

वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रोज वाही वस राजा जसवंतसिंघ जायौ है ॥२९॥
लोक अभिराम सुपधाम सीतराम राजु करत कनौज काहू कोऊ न संतायो है ।

जयसिंह हेत कपिकेत समसीहा लापौ फूल नी हनत महा मार की मचायौ है ॥
वासथान राउ.....लौत गन मारि पेट नगरु पधारि नाऊ पेटचा..... ।

वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रोज वाही वंस राजा जसवंतसिंघ जायौ है ॥३०॥
फणाट जाइ कुलदेवी पधराइ.....इहनाउराउ धूहड चलायौ हैं ।

भयौ भुअपालु रैयागउ राइपालु मही रेलनि वकसि मही रेलनु कहायौ हैं ॥
दलपति काहू सम कान्हर नरिंद करतूति नु त्रिमल जस पुंजु छिति छायाँ है ॥

वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रोज वाही वंस राजा जसवंतसिंघ जायौ हैं ॥३१॥
सूरसिर मौर राइ जाल्हण नरिंद भुज जोरि जिहि जोरु जोरावरहिं जनायौ है ।

छाडाछिति नाह वाप दादेकी छाहँ तेज दाह दुअननि निज दंडुक तुलायौ है ॥
राठौर टिकेत राउ टीडा विरदेत वीर घेतरे पैचाउ चित चौगुनी चढायौ है ।

वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रोज वाही वंस राजा जसवंतसिंघ जायौ है ॥३२॥
औतख्यौ अमर सम सलपा सपूतु जिहि जंग जुरे जालौर नरि दु विचलायौ है ।

महावीर वीरम विरचि बाहु जोर जाई जोइकु महीपु जमलोकहीं पठायौ हैं ॥
वसु दैदै वासु दैदै वास वसमान राइ चौंडा मारु मंडल प्रजानि अघवायौ है ।

वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रोज वाही वंस राजा जसवंतसिंघ जायौ है ॥३३॥
रनमल राइ गढ सोनगिरि जाइ ल्याइ डेडुसे दुअन गनुं कुर्वन जुरायौ हैं ।

चितौर सिंधाइ महा जोधा जोधराइ राँना कूभा विचलाइ वैरु वापकौ वहायौ है ॥
सूजा रैयाराइ छिति छत्री वपु पाइ महा सांकरौ नसाइ सरनागत वचायौ है ।

वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रोज वाही वस राजा जसवंतसिंघ जायौ है ॥३४॥

महा बलवान् निरद्वैत राइ बाघा आपु जागौ प्रतापु छिति सौगुनीं उदायो है ।

दोलति गर्नीम सौं भिरत राइ गांगो कुमु जागि विदारि मुकतागि नु छायो है ॥

मालगौ महीपु अभीहजार कटक जोरि ओरन फौ देसु बरजोगनि छुडायो है ।

वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रंज वाही वस राजा जमवतसिधु जायो है ॥३५॥

उदित प्रतापु उदैसिध नराँह बेर पाछुत्रो सिरोहीपति गरद मिलायो है ।

दछिन मुहीम मरदाने सुसिध सनु दछिनी कटक पातु पातु के उडायो है ॥

गरीब निजाज माहाराजा गजसिध गजराजनि फी मौज दुहीगर दुरुगायो है ।

वाही तप वाही तेज वाही रस वाही रंज वाही वस राजा जमवतसिधु जायो है ॥३६॥

महाराजाधिराज महाराजा श्रीजमवतसिधजू कौ जस वणनु

सरद तिसाकौ ससि सावरी करत निदरत वारु बरन मराल मासकरे ।

मीडत मृनालनि मलत मुकुनगि सकुचावा सरोजनि हस हास हरके ॥

दल्पति गावत पयोधि तारपार जि हँ हेरे जसनु जठवा नर वरके ॥३७॥

पायो हिमगिरि एक हाथ कौ उलयधितु दूसरी बलय दये नैकुन धिरातु है ।

छीरधि छनीलौ पट्ट पहिस्थी सधारितन ऊरध वसन औदनकौ ललचाति हैं ।

दल्पति सुधारक फाँकौ भूपनु और फाँकौ भूपनु अनभये अकुलाति हैं ॥

गजा जमवतसिध रावरी कीरति आभ रनिनि फेके दूरिदूरि जाति हैं ॥३८॥

सुपनु साधि मुभ थालाधिब वैके दाँग सकुन जलदेक छरितु सिचाइ हैं ।

दल्पति बरथी करि वार आचरणु याते रिपुनकी आच ते फ लगन १ पाई है ।

दिन दिन फूलत फलत विग्धत गागनेक जरफैलि सुरलोक सापा धाई हैं ॥

राठौर तिलक महाराजा जमवत औसी रावरी कीरति बेलि रोहन सुदाइ हैं ॥३९॥

सुधारक नही सुधारक तकर फरी १ देव तुंगसु देव तुंगसु पसु हैं ॥

छीरिनिधि मथ्यौ जगदीस तामरसु सुर आधिमे वधतु तामरसु हैं ।

तिपुरारि तनु तिपुरानि ता आवौ हिमगिरि हिमागिरि १ ननु विना असु हैं ॥

कस्थी १ परतु महाराजा जमवतसिध औसी अनुपम चार तिहारो मुजसु हैं ॥४०॥

महाराजा श्रीजमवतसिधजू कौ प्रताप वर्णन

पसु पट बालु गरीमा फी सेना सिधु पूरा रदतु विघनतु १ घटायो है ।

सखी १ परतु एक टौर १ समतु अरि गांगि फ १ जल जातु न उभायो है ॥

कैक अनुमान विचार्यो कोविदिनि मात्र चाप के गुननि लेके विधिही बनायो है ।

राजा जसवंतसिंघ रावरी प्रतापु वीसविनें बड़वानन्य मो चीजुरी कौ जायो है ॥४१॥
सैषविनु सुअन जयंतहू के आगे पशु इंद्रके आश्रमे इंद्र लोक होतु रानी है ।

ईग उर जायो एकु लाइकु कुमार गायी सेना में नाइकु तऊ तातहीते ऊनी है ॥
दल्पति नश तहां वेदनि चपान्यो देव नइके सपुत्रु पितु गुननि विहनी है ।
मारु के तिलक महाराजा नमराज वसें चापहू ते प्रगट्यो प्रतापु दूनो है ॥४२॥

मारुके महीप गजसिंघ तनें तेरो वर बपनुविन्दु मधु आलमु मिदतु है ।
दल्पति सकल दिसानि विदिसानि तेरी अकथ कथानि हेरे हरपतु गातु है ॥
तूल तिन भूषेह लतानि पजरतु परसत जलु पाछें ओह पावकु बुभानु है ।
जसवंतसिंघ की प्रतापकी अगनि लखारोई जगतु तिनवारी नियगतु है ॥४३॥

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू कौ गुन वर्णन

जियवसें सूरता उदारता बसति चित्त नैननि नचनि निन वैननि भलाई है ।
भागु वसें भाल अनुगम वसें आननिमें भुजनि प्रतापु सब अंगनि निकाई है ॥
औरनि के वपु बीच दोपनि कियो वसेंगे तिन दिंग वसें दल्पति लघुताई है ।
इहे करतारसों निहोरि जसवंतनें मानो गुन गननि मिळिकि करियाई है ॥४४॥

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू कौ दाहिणो बाहू वर्णन

किधौं तेजक तपन उद्योत कौ अचलनीरें आवत बहतु दुअननि तन दाहु है ।
किधौं दिज आपद पयोनिवि तरनु सेतु किधौं दानपेतु देतु मनोरथ लाहु है ॥
किधौं दल्पति राजसिरी कौ सदन पशु देपत दगनि उपजावतु उछाहु है ।
किधौं जग जुरें लयकरीकौ निगडु किधौं राजा जसवंत कौ छवीली वरमाहु है ॥४५॥

नेत्रादि वर्णन

नेसकु निहारि टुप दाहण हरत सुप सिंधु चितरत तौलीय न लजात है ।
महा बलबाहु रन जंतु पत्रु लेके आपनें के रिपुराजनि अभय देत जात है ॥
दल्पति आगे गुन श्रोनन मुनत द्विज देवनि गुनत उर वासर विहात है ।
जसवंतसिंघ नौहू रसनि रसीले सरमीले असे रावरे रजीले सुम गात है ॥४६॥
मनोरथ दानि महाराजा जसवंतसिंधु भूपतु बनायो विधि भूतल सकल कौ ।
कहे दल्पति तेज दहति दिगंतपति पावतन पुहमि उछाहु एक पल कौ ॥

जाहि कोई मगन मुदित मा होत जैसे तरनि उदोत तनु फूलतु कमल को ।

साहसकी सीध सत सील को उदधि हिंदुवान को जिहाजु जेतवार पर दल नौ ॥४७॥
बलौ १ परतु महाराजा जसवत तुम काँ १ विधि पूरज परम तपु सच्यौ है ।

बडे कुल जनमु बडाई बडी महीभागु बडे तेज तीछा दुअन गनुतच्यौ है ॥
तो तनु वनाथत विमल बुधि लैके घहु जतागि कैके जगदीछु जिय पच्यौ है ।

तेरौई मसोदा पाकभासतु साराख्यौ आगे पाछे चतुराना चतुर तोहि रच्यौ है ॥४८॥
तेरे गुनगाये गुनी गायीयतु जेहा तेहा तेरे आगपाये नीकी लागति निबाई है ।

तेरी जानपनी जागपी अतिगोहीयति तेरे राज महाराज राजति रजाई है ॥
दल्पति जगत जसीले जसवतसिध तेरेसेये साहिकी साहिनी पति पाइ है ।

और भूपतिकी वसुमती तै बडाई भई तिहारी बडाई वसुमतीकी बडाई है ॥४९॥
राजा जसवतसिध तेरे जस आगे लागे पीके जम जनफज जाति पृथु नलके ।

कईयौ लाप भगन रहत द्वाक घरे तेरे लपनि के पालसे परच एक पलके ॥
दल्पति परम सरमसिधु सेतधारा धरमनिवेत कपिनेत बाहु घत्रके ।

मौज महीदधि महि मडल महीपमनि मारार साहिब सिगार साहि दलने ॥५०॥
बडे दुप दगने बगारु वसुह वीच बडे वस वासत करैया सत जागके ।

बडे राघोर बडे वीरन के जेतवार बडे जाग भूपन जनैया रग रागने ॥
बडे गुनगाहक जसीले जमराज रपवथा दल्पति वसुमतीके सुहागने ।

बेदा बडे बापके बडेने बडे भैयनि में बडे मारु देसके नरेस बडे भागने ॥५१॥
भूप सिरताज गुन गरीबनियाज हि दुवाण के जहाज सिधुराज सिरमनीके ।

आपदाहरन कर करी करत असराके सरन गुप दायक धरनीके ॥
मारु के सिगार महाराजा जसराज राजने रपैया भारी भीरके सहैया मसुयैया जानपतीके ॥५२॥

गजसिध नदा बनीले जसराज नीके लागत वसुह सन गुननि समेत ही ।
सीलके सदा गीति पथके बदन बनितागिने मदन बरिग काँ कपि केतु ही ॥

दल्पति कधि पूरधि लेके अगर आनि औतरे अत्रि दिज दीनगिने हेत ही ।
कहा अचरजु हा पाता को आहि औपै बडे कुल जाम वडाई बडी लेत ही ॥५३॥

तूही भोग विप्रमने आधमे बामुलीनी तेरीकर कीरति अपार छिति छाइ है ।
तेरी तकि साहिबी ति हात नराथ सत्र तेरी नाम पदवी सरेसई १ पाइ है ॥

कहँ दलपति महाराज जसवंतमिष आज तेग त्याग की तिहारे वांट आर्ड है ।

तेरो जु सुभाउ छु बडाई बडी लोगनि की तेरी एकु गोजु और राजाकी रजाई है ॥५५॥
सुनपतु सुवरी बिलोकि गजमिष तर्न औतख्यौ अवनि सज देसही सिंगार है ।

जाही करनूति की सगाह होति साहि टिंग जाके जानपनी कौ लखीन काहुँ पारु है ॥
कहँ दलपति महाराज जसवंतमिष तोहि रचि मयतँ सुचित कषतारु है ।

अरि दल दलिवे कौं दाहिबे दीन दुप दान करि वारिकौ तिहारे सिन भागु है ॥५५॥
गजसिच तर्न महागजा जसवंतमिष और भूपनि कौ मौजनि मजेजु मारिलेत हो ।

हीर हार हँवर रतन नीर चामीपर सकसत ज्ञासखलीं संपति निकेत हो ॥
दलपति लपनि लपत रनजाचकनि वरपत वान बसु कति ममेत हो ।

पाळिलीं रुपनि घर भैसौजे दे दान तुम दुअननि विनु भौं भयें देत हो ॥५६॥
राजा जसगज तेरो जानपनी के के विधि उहे छाहलेके जन दूसरो बनायो है

बहुख्यौ बसुह रब्यौ रावरी प्रतापु तिहि तेजकौ तनक द्रकु पूपनीं जनायो है ॥
कहँ दलपति तेरे गुन भव पूरि सेपभागु दूरि दूरि और लोकनि सनायो है ।

ऊजरी अनूपम तिहारी जसु कख्यौ उवरनु उवख्यौ सु विधु मंडल बनायो है ॥५७॥

श्रीमहाराजकी मौज वर्णन

संपति सहित पूरहूत सेवि संप्रेसव होडीहोडां देपेए साहिव कोऊ नए है ।

दलपति आछे असवार आसपास चौर दारत पवास मुकुताहलनि छए हैं ॥
गजमिष नंदन की अमित मौजगाइ पाइ जाइजाइ लोगनि दवाइ देस लए हैं ।

जेहां के महीप अेक्षा मगन कहा तेहां जसवंतसिचके भिग्यारी भूप भए हैं ॥५८॥
आछे आछे ऊजरे अनूप असवार संग सीधै सगमने वर चमन लसे घने ।

भूपन जराइ जेर नोहत निसानपरे मोदभरे आगें छुरीदार छविर्सी वने ॥
दलपति देपत कुनेर सम जाचरनि धाइ धाइ नरे तट पूछत जने जने ।

किधौं काहू दीपके महीप चलेजात किधौं जसवंतमिषके निवाजे महि मागने ॥५९॥

पंधार की सुहीम महँ महाराजा जसवंतमिष कहँ पातिसाहि हजूर राख्यौ तहां को
कवित्तु

आपुनों कटकू तोलिवेकौं पातिसाह आपु पंधार मुंहीम तुला चातुगी जनाई है ।

एक और राख्यौ महाराजा जसवंतसिखु एकु और कुले हिंदुवान पहुँचाई है ॥

दल्पति दुहु दिति धरा भारु धर्यौ दुहु ठौर अटक्यौ केहा कितिक भराई है ।

साहिजहा जायौ सत्र जगत बर्षायो बोभू भैहा अधिक रीततौ वैहा हरुआई है ॥६०॥
चाख्यौ चकलेत फिर्यौ बागत चकसा वली कैयौ सालजागै नेकु आलसु जनागौ है ।

पछिनी जरेस तौली प्रथम पराइ पाछें आपुहीकौ आपनी बतन पहु चायौ है ॥
तहा साहिजहा उमराइति पठाइवे तमाइदैके काबिल इबाइ जाइ छाया है ।
वेषी थाकी ठौर महाराजा जसवतसिंध हीकी चोकीसौयें आलम पनाइ सचुपायौ है ॥६१॥

साहिजहा पातिसाइ पोदकरनु बकख्यौ तहा को वर्णन
दोहा

सात अधिक सत्रइ सइ रितु बसत मधुमासु ।

साहिजहा जसराज कहें दिअ पुदकरनु मवासु ॥६२॥

महाराजा को देग बागमन वर्णन

एकेवर घर नारि अनुहारि उर कहें अनुरागकी उमग आग पुत्रकु जगावहीं ।

एकें तिय आपी सहेत्री समीप लाप भाति अति अधिलाप केके आनद बढावहीं ॥

दल्पति एकें अवलोकन की चीप चार चार अकुलाइ भाइ भरौपनि भावहीं ।

आगम सुत महाराजा जसवतसिंध नगर गगरी असें दिन गहरावहीं ॥६३॥

एकनिभगाऊरसिंध अनगाह्यौतियएकनि उमाह्यौ केके भारतौ उताख्यौ है ।

एकें सुति सभ्रम सद्धि उठिथाई औटि औरकौ जसनु तन आगरी यिताख्यौ है ॥

दल्पति एकें जसवतसिंध हेत पलकनि ने पाउडे बरुणि मयु भाख्यौ है ।

कहौ ग परतु नागरीन को उछाहु आउ जाधरी गगरमहाराजु पाउ थाख्यौ है ॥६४॥

अगाऊ पगाऊ चारु चोहटा बजार द्वार दहु दिति देपन अमित जग घाए है ।

हाथी हय चौर चामीकर पाइ पाइ दिजवदी चारन विधिघ सुन गाए है ॥

दल्पति जसवतसिंधहि तिहारि तरारिण के नैन मोद महोदधि न्हाए है ।

कौतुकनि छाया अमरनि की सगाजु आसु जाधरी गगरमहाराजुआपु आए है ॥६५॥

अथ महाराजाधिराज को देस वर्णन

गगर गगरी छर सुदरी अपु ध्योम जानकीधवल धौर हरति निकाइ है ।

उपवनु बदनु छरितु रमणीय बाउली तलाइ कूपनिकी सुषार्नी मधुराइ है ॥

दल्पति जेहां है गाइन हाहा हूहु उमराइन छात्रति देवर्ताणि की वडाइ है ।

राजा जसवतसिंध की सुत आमदागे मारवार भां इहं जमगावती पटा है ॥६५॥

श्री महाराजाधिराज महाराजा श्रीजगन्तर्मिषज् पोटकरन पर फौजों पठई तहां की विगति
 धारा

सात अधिक सत्रं मई शुक (शुद्ध) तीज आनोज ।
 भाटिन पर जसराज नृप पठई आपनी फौज ॥६६॥
 चहँ और राटौर दल उमच्यौ अमित शरार ।
 तहा नृपति जसराज क्रिय नीनि फौज विरदार ॥६७॥

छंद पाधरो

मेरत्तियन मटँ सोभा भिवायु सुंदरदासोत गुणालदासु ॥६८॥
 गोपालदासु सुतु महाभीरु चांगधन श्रीदलदास वीर ॥६९॥
 कृंपावत राजभिषोयु जनुं नाहर प्रानुं पारथ समानुं ॥७०॥
 हुजदार तीनि तहँ निहू टौर सिंचई पतापमल एक और ॥७१॥
 एक संग भंडागी जगन्नाथ मुहणोन नैणसी एक साथ ॥७२॥
 एक संग पंचाली मदनदास मत्र सरवगद महुँ तिहूँ पास ॥७३॥

श्रीमहाराजाधिराज महाराजा जगवतर्मिषज् फौजनि को पगानो वर्णनु

घनाछरो छंद

चल चमू अपार सेस होत बेसमहार धौंसाकी धुकार सुनि गिउन पगनें हैं ।

नेंने रन रुरे सूरु माहमी मवल सत्र छनत पयाको दिगपाल विदताने हैं ॥

भासमान छार छए दरिया दहलि गए पव्वई पिमान भए दाने थिरु थाने हैं ।

सोरु मुरलोग नागलोक नरलोक पर राजा जसवंतर्मिष कापर रिसाने हैं ॥७४॥

दोहा

पूर्व्यौ तिथि आसौज की तीर्यौ फौज पधारि ।
 नगर पुहकरन चहूँ दिमि गही कोटकी वारि ॥७५॥
 इहि विधि जत्र जसराज नृप पहुंचायौ निज तेजु ।
 मांगि धर्मपथु कोट महुँ भाटिन तज्यौ मजेजु ॥७६॥
 सात अधिक सत्रह सई कातिक छटि सनिवार ।
 तजी पुहकरन जाद्वनि मार्व्यौ धर्म दुवारि ॥७७॥
 शुद्धे भाटी समर महुँ वारह भट अवतंतु ।
 दमन बीच तिनका गह्यौ और सकल जुहुवतु ॥७८॥

महाराजा श्रीजयवंतसिंघजू की जीतिके कवित्तु पुढकरन बाबत

घनाउरी छ द

गारुके तिलक महाराजा जसराज तेरी तेक आच दुअउ तनुकाली दरु है ।

सब सगु चाहतु विधातहीकी चाह एक तेरोचित चाहहि विधातऊ चहतु है ॥

कालकी गिन्याई पुढरऊन छडाई रिपु सिरी पारिनाई जग आरुमु कहतु है ।

भाटिन के तेरी दरु लाग्योई रहतु जैसे आवरेकी आपनि अघेरोही रहतु है ॥७६॥

मारुके महिद महाराजनिके राजा तेरी अपतु सराह्यो साहिजहा पातिगाह है ।

उदसिष सरसिष देगन पाइ जहा सवि ७ दबाई गजसिष ,नरनाह है ॥

जहा जसराज को घनापु आपु जुख्यो तब भाटी भाज दुख्यो सोक सागर अयाह है ।

बैरिन की तेरो दरु भागोह रहतु जैसे पाछे देत पूषनु परति आगे छाह है ॥८०॥

रावनकी वार घनचरनि सहाह लैके रामु रतु स्यो गाईयतु दुपरतु है ।

पारथ हू फरतु सघालो छत्र बल वह अपजसु भारथ अजाँ ली सचरतु है ॥

दल्पति जगत जकीले जसराज तोमी जहा ७हा महारिपु मारको परतु है ।

तनने अगाऊ तेरो तजु पहुचतु तहा तेजहूते अपतु अगाऊनी लरतु है ॥८१॥

सत्रुकी सपत्ति अभिमारिका नाइकाहरि वर्णन तिहको

कवित्तु

कारे कारे जु जर निहारे जल्धरसम मुनि गरजति धुनि गोलाकी आवाजकी ।

मद दुर दिउ दहुँ दिसि दल्पति दीह दामिनी दमकनि सर साजकी ॥

आपने सुदत पिय अजत अवेरी अवलोकि गुजगनि कीने सुकृप लजकी ।

समर सामुदे महाराजा जसराज तेरो अभिधरी सपत्ति रमति रिपु राजकी ॥८२॥

धीस विसे जगत धसत जसवतसिष गून गन भौरली अमर गुजरत है ।

तरेही सुभन और भूपति मुमन सम पावक विक्रासु वासु वसुधा करत है ॥

दल्पति इशाली निनाइ के निवत होजु नाव लेत मातिनीके मांग विषरत है ।

तेरो पगु पवपुरनो वा रिपु राज नरमाइही वचत षठिनाइ निभरत है ॥८३॥

सब विगि राजतु रजौली जसवतसिपु उथपा थापा विरदु छिति छाइके ।

जाही बाइ छाइ छत्रवारी गरनाइ आह घमत अगाऊ छत्रछाई विसराइके ॥

गमचद भाटिह उपारि गभनधौ रा यो वसुधा सघसिपु 'अरे' अपनाहके ।

जैसे रिनुरागु पालु पाछिनीनिभारि बेदा आपगोई पातु पतीषा पछुशाई के ॥८४॥

सज्जनकी स्त्रीनको परावनौ वर्णलुं

वीर वर देत जसवंत तेरे बेरिन की बेअरें वननि थिललाती है ।

दलपति दीरघ पहारनि चदति नेसम्हारधैकै लटकित लतानि लपटाती है ।

नाहकी तिसारी चिरहानल दूसह जारी सीतल उज्यारीहून नैसुकु सीराती है ।

भीलनकी भामिनीन बूभती नबोदानारि अँघां हिमकरकी किरन होत तातीहै ॥८५॥

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू के हुजदारनकी विगति
दोहा

भ्याग्द पीदिनि कौ सदा पंचोलिन को वासु ।

स्वामि भगत मिरदार हँ वट्टु माहणदासु ॥८६॥

बलू कहँ जसराज नृप जानि बुद्धिकौ धांसु ।

हुकम कस्यौ मारुधनी ससु दीवानकौ कांसु ॥८७॥

महाराजा जसवंतसिंघजू के हाथीनको वर्णन

धूरिसौं धूरेठे धराधरसे धजारे धाराधरसे असित सदा मट वरगत हैं ।

सीसभ्रवै भौर चारु सोहत कपोल चौर सँनेहीके साज सब सँनेही लसत है ॥

कहँ दलपति दुजननि कौ दलत दावि दौरत इहालीं पौनहूँ सौं वमत हैं ।

लापनि लहत लपपती ललचात लपि अँसे हाथी राजा जसराज वरगत हैं ॥८८॥

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू के घोरनि को वर्णन

अँसे घोरें दैदें महाराजा जसवंतसिंघु दिनदिन भरतु भिपारिन कौ भोंसु है ।

थरकतु गातु देपें जगतु सिहातु जलपति ललचातु न छितीस अँसौ कौनु हैं ॥

दौरन कुलाचनि दिगंतनि दरत शुभ पाइन धरत अंतरि छरत गौनु हैं ।

मन उपजाइ किर्धौइन उपजायौ मनु पौनके पदाए कि पदायौ इन पौनु है ॥८९॥

कैसें पेज पूजतु अनूरु कौ अतुजु एतौ ऊरुजुत सहज सुभग रंग गातु हैं ।

दलपति जिन भोग बल मनुं वाँध्यौ वे मुनीस इनकह लालसति ललचात हैं ॥

गोनुं निरघत यों मुमोनुं व्हे रहतु वह पाँनु पाइ एतौ लाप पाइनि उडात हैं ।

गीत गुन गाइ जसराजहिं रिझाह आह अस हय भूतल भिपारी लौलौ जात हैं ॥९०॥

सबैया

चारु उतग कुरंगलीं कूदत गौन किये मनुं पौन नए हैं ।

बैस नवीन नूचे नटसे तन जान जगें जरवाफ छए हैं ॥

लोल अमोलकरार परे मारी जाव पंचक सीप टप है ।

साह सिद्धात लये जिद्वेगुन ते ह्य श्री जसराज दए है ॥६१॥

महाराजा श्रीजसवंतसिंघजू को महल सुख वानि

बोहा

प्रतिप्रता जसराजकी रानी पिय सुख दानि ।

हाडी फछनाही गवरि जदुवसनि चौहानि ॥६२॥

लाप पनासनि अगनित सकल कलानि प्रथीन ।

जिनिरिभूयौ जसराज नृप जाकहूँ जगु आधीन ॥६३॥

पोधी रस रतनावली ज्यां नवरस विस्तारु ।

दूया वरन्तु सछेगही नृप विहारु सिंगारु ॥६४॥

स्याधीन पतिका सौं सथोकी उक्ति

घनाछरी छद

सपत पयोधि सपताचल सतलोक सरत पताल जाकी तेज आनतए हैं ।

जाकी नित पाइ नित चाहतु जगतु जि दिलीस अदियानिकी पूतरी बीच छए हैं ॥

दलननि जाकी अगनित मोजेपाइ पाइ जाचरुनि जाइ पुरहूत सुपठए हैं ।

रूप मानसिग महाराजा जसवंतसिंघ भागनि घनेरें आली तेरे बसभए हैं ॥६४॥

प्रौढासौं सन्धीको उक्ति

केसो रजनीकीं अधरानि लगीकी वर बैनततरात में गों रमभिले हैं ।

जेहेंमन मोहें अ ग अ ग अर सोहै पिय सगने सुखनि तेरें रोम राम बिले हैं ॥

दलनति दुरायें दुरा जैने भाइ नपसिप गएचाइ जसवंत रूपदिलें हैं ।

नकीसी गोहति मरु छफीसी साहाजि मोहिआली कहूँतोहिमदागजु आउ मिलहै ॥६५॥

महाराजा श्री जसवंतसिंघजू सौं धदिताकी उक्ति

कानिदकीं जामिनी पाहूँ काहूँ कामिनी के सग केरु रति रगनि अनग रस जगे हैं ।

किधीं बहै सुन मेरे दास रोस भरे किधीं जहा तुम ठरेहो तहाक वेग पगे हैं ॥

किधीं दलनति वार डेक दाल दादलाल औरनि जनाए किधीं मोही जैसे लगे हैं ।

हादाके पूछा महाराजा जसवंतसिंघ जाकी कहो कश आउ गे रग मगे हैं ॥६६॥

रानि जगे रस रीति तुमाह पग किधीं पाहूँकी गद गएहै ।

रोसभरे छनि अहुज रूप किधीं कहुँ घू घूभां नएहै ॥

दलपति रोचन मांह रंगे किधौं जावक के जल बोरि लए हैं ।

सो रंग श्री जसवंत कहौ किनि जा रंग लोचन लाल भए हैं ॥६७॥

जावक की लीक पग लागें लगीभाल जागें लोयनिनि लाल लाल रंगु निचुगु हैं ।

इहांलौं उरोज गाढें छतियां लगाए होत न्यारेहूँ अर्जौं न चावचीन्हु विडुरु हैं ॥

मरोरत गात जंभु वात जसवंतसिंघ मेरे ननसुष रुपु वाही त्यों मुगु हैं ।

दुरावत सौह कैके नागर भरयक अहौ सुरतु खगंधु बहूँ दुराये दुरतु हैं ॥६८॥

श्री महाराजा जसवंतसिंघजू कहूँ देपिकें पंडिना नाइका की रीकि वर्णन

अंजनकी लीक लागें लापनि लहतु औठु भरै द्रिग नई अरुनेतैं निकारै हैं ।

तेसोई लसतु लाल जावक को चिन्हभाल विनु गुन माल उर सोहत छड़ाई हैं ॥

लटपटीपाग सिर राजति सुरंग दलपति सब अंगनि अनंग छवि छाई हैं ।

रसमस्यौ जोहि महाराजा जसवंतसिंघु रीकि रीक्षि रीक्षवारि रिस तिसराई है ॥६९॥

उत्कंठिता नाइका कौ वर्णन

किधौं कहूँ कमवस अन बसेरें बसे किधौं काहूँ वाम टोटिकानि विरमाए हैं ।

किधौं अगमनें नीद नेंननि जनाई किधौं मेरे मान दोस रोस वारिधि वटाए हैं ॥

किधौं कवि कोविद समाजु आजु छुटतू न किधौं दलपति नेह नूतन फंदाए हैं ।

अरै चित चंचल मिचारि कहूँ कोंगदेत राजानसराजजू अर्जौं न इत आए हैं ॥७०॥

अथ वासक सज्जा नाइका वर्णन

कंचन कलस सम सुंदर उरोज अरु रस्यौ मुपदीपक अमित दुति वारिकैं ।

सकल तरीरि चार चंपक कुसुम हारुसारु सरसिज द्रिग तोरनु सुधारिकैं ॥

अधर पीयूष पान भाजनु न्नाजनुवनाइमन रापीअभिजापसों जै लापनि विचारिकैं ।

राजा जसराजजूकौ आगमु निहारि नारि राध्यौ वपु वीच रति मंदरु सवौरिकैं ॥७१॥

देहा

जानि महाप्रभु सवनि महुँ मारवार मुअकंतु

सेधन श्री जसराज कहै प्रगद्यौ पुहमि वसंतु ॥२॥

महाराजा श्री जसवंतसिंघजू कहूँ वसंत उत्सव वर्णन

पावरी छंद

जसवंतसिंघ जहै वसुहंकंत तहै रस्यौ नृत्तु नाइक वसंत ॥३॥

गावति अगनि कोकिल समाजु कलतार देत बहु अंगराज ॥४॥

बाजत मृदग भृदु गधनाइ	गाचत भूरेह पूरा उत्साह ॥५॥
गव किसलय कर अभिनय लपाइ	मित वृष्टम बनावत हासभाइ ॥६॥
कदपु अल्प नट स्वांगु आइ	मोहतु लोगनि आनदु बदाइ ॥७॥
विरहिनि वियोगवस मन मलीन	कौतिकु गिरपत तन हीहि छीन ॥८॥
फूलहि सजोगिनि नारिनु द	हे जाहि मगन तापस मुनिद ॥९॥
दलपति मारु प्रभुरुहे रिखाइ	पायौ किताउ छिति छरितुराइ ॥१०॥

श्रीमहाराजा जसवतसिंधजू कहें फागु बरसव बर्णन घमारी राग मल्हार
फागुन पेल मचायौ ।

देया सभा महाराज्ञी	अमरनि अ वष छायौ ।
बाजत ताल मृदग चीन डफ	भ्लाभ मधुर घुनि नीके ॥
गागत गुननि गुनी मांगु	गधर्व देव नगरी के ।
पास पवास अरगजा भीजे	भिरत मोद मद माते ॥
परम सुगध लोभ मधुकरगन	नेछकु होतु निहाते ।
फगुना तेन काम रग गची	नगर नागरी आइ ॥
सात्विक भाइ डुराइ सयनि मिलि	प्रगट करी चतुराइ ।
छोलन सकृति विवस नै कोऊ	रूप रासि अचुरागी ॥
हरगै हाव तोरि तिय तापन	सुतियन वीनन लागी ।
आनद अश्रु उवा कहै काहु	नेन फूले लति लोछे ॥
श्रम प्रसेद मिस अग आपने	काहु पुलक अ गोछे ।
काहु रच्यौ नाचु आग नै	कपु आपगी भायो ॥
उभयौ उदन कुम कुमा काहु	वियरतु जातु न जोयो ।
बिनु अपराध साथ कहै काहु	भूडौ दोस लगायो ।
रूपी भौह चताइ भोग मिस	गज सुर भगु छुवायो ॥
अतरि गति की जानि मक्षगु	निकट आपने बोली ।
चिच चुराइ चद बदति उग	विहरत करत उठोली ॥
काहुकी अचीर मुर माडयो	गजति ललित ललाइ ।
मागु गुगत प्रीति द्वियराकी	परसत प्रगट आगइ ॥

काहूँ कै कपोलपर चोवा चुलु एक भरि नाथ्यौ ।
 मानहूँ रस निगार सपूरन वदन एक दिस राध्यौ ॥
 चूमति चिबुक चारु काहूँके अधर रद छतु कीन्हौ ।
 मानहूँ सुभग सुधा संपुट पर कस्यौ छाप सम चीन्हौ ॥
 दुहुँ उरोज बीच काहूँ कहूँ सुकृत माल पहिराई ।
 मानहूँ धसी सुमेर खिगतें सुरनरि धार सुहाइ ॥
 औरन सौं वचाइ नव लाइक रंग महल पहुँचाई ।
 श्री जसराज रीभि वाही सौं करी आपु चित भाई ॥
 देध्यौ दगनि सुन्धी कलुकाननि कौतुक परम सशयो ।
 दलपति कस्यौ जोरिअपरनि तव सीपि सकल जग गायौ ॥११॥

दोहा

इहि भातिनि जसराज कहूँ सेवहि पट् रितु आइ ।
 भुअ भुगवत जिहि इंद्र सम वासर रेंनि चिहाइ ॥१२॥
 चिरुजीवौ जसराजु नृपु सकल धर्म आधार ।
 जगु पालन जिहि सुरकुल लियो वसुंइ अवतार ॥१३॥
 आगैं जे जसराज नृपु करिहैं चरित सुभाइ ।
 होहूँ तिन कहूँ वरहूँ अरु ओरों कविआइ ॥१४॥

श्री महाराजा जसवंतसिंघजू सौं दलपतिकी विनती

दोहा

श्री जसवंत नरिंद के यथा सक्ति गुन गांइ ।
 यौं रिभूवतु ज्योँ ईससिर चांवरि चारि चढाइ ॥१५॥

घनाछरी छंद

धीह्वरु वांभनु गरीव गुनी जानि छुअपति अकवर कस्यौ नृपति वदाइकैं ।

गगहि निवाज्यौ दानि साहि साहिजां दे हय हाथी हेसु दंदै दल्यौ दारिदु वनाइकैं ॥

कस्यौ परसिद्धहि प्रसिद्ध पानपाना ठौर ठौर चहूँ और निज कीरति चलाइकैं ।

गरीब निवाज महाराजा जसराज त्यों तिहारे वाट पस्यौ दलपति कवि आइकैं ॥१६॥

भालम पाह सादिनहा १रनाह णिजु छ दकी १वाज्यौ महीं महाकविगार्क ।

विदित बु देला इद्रजीत कौ बदायौ केमौदाससु सिरैगायौ गुनिगवनागाार्क ॥

३ असालसीं निहाल एकभयौ कवि फेहरी कनौजिया कविंदु पदु पाहकै ।

गरीब निवाज महाराजा जसराज त्यों तिंहारे वाट पस्थो दलपति कवि आइकै ॥१७॥

श्री जसवतउद्योत का छँ को फल

जो जसवत उदात कहँ छँ भवन चित्तुलाइ ।

तिहिमानौ हरिवस की पोथी सुगी बनाइ ॥१८॥

कछुक वस वरण्याँ प्रथम विष्णु पुरानहि मानि ।

फरती साठि १रिंदकी फरती लोक कथानि ॥१९॥

लोक वेद बुधिजन सकल कहत एकही रीति ।

यह विचारि या ग्रथ महँ मागहु परम प्रतीति ॥२०॥

इति श्री बुलसीराम सुत दलपति कवि विरचिते जसवत उद्योते घसावली

प्रकरणे सपूर्णम् ॥ शुभ भवत्तु ॥

स० १७४१ रा मिगसिर वद १४ धार भीमदिने लिपित भेडता १गर मध्ये

लिपित चूरा महीधर पोथी ना० चूरा महीधर छै ॥ शुभ भवत्तु ॥

परिशिष्ट

१ राठौर पंशावलि (स १६४५ की, महाराजा रायसिंह के प्रशस्ति लेख से)

१ मारायण	२७ प्रव(मन)	५३ दशरथ
२ ब्रह्मा	२८ त्रिवन्धन	५४ एकविने
३ मरोचि	२९ सत्यवत	५५ विश्वसह
४ कश्यप	[त्रिशकु]	५६ खट्वांग
५ झूय	३० हरिश्चन्द्र	५७ दोर्मबाहु
६ मनु—	३१ रोहित	५८ रघु
(श्राद्धदेव-बैवस्वत)	३२ हरित	५९ अज
७ इन्द्राकु	३३ चम्प	६० दशरथ
८ विकुक्षि	३४ सुदेव	६१ रामचन्द्र
९ पुरंजय (ककुत्थ)	३५ विजय	६२ कृष्ण
१० अनेना	३६ भरुक	६३ अतिथि
११ विश्वगंधि	३७ वृक	६४ निषध
१२ इन्द्र	३८ बाहुक	६५ नल
१३ युवनाश्व	३९ सगर	६६ पुण्डरीक
१४ सावस्ति	४० अममंजस	६७ अत्रधन्वा
१५ बृहदाश्व	४१ अशुमान	६८ देवानीक
१६ कुयलयाश्व [बंधुमार]	४२ दिलोप	६९ अहित
१७ हबाश्व	४३ भगीरथ	७० पारिपात्र
१८ हयश्व	४४ अत	७१ बलस्थल
१९ कृशाश्व	४५ नाम	७२ अर्क
२० सेनजित	४६ सिधुद्वीप	७३ वज्रनाभ
२१ युवनाश्व	४७ अयुतायु	७४ सगण
२२ मानधाना	४८ ऋतुपर्ण	७५ विविष्टति
२३ पुष्कुरस	४९ सर्वकाम	७६ हरिष्यनाभ
२४ प्रनादश्व	५० सुदास	७७ पुष्य
२५ धानश्व	५१ अरमक	७८ ध्रुवसंधि
२६ हयश्व	५२ मूलक	७९ भव

८० सुदर्शन	१०३ प्रतिष्ठा	१२६ तृगनाथ
८१ अग्निवर्ण	१०४ सुप्रतीक	१२७ भरत
८२ गीघ्र	१०५ मरुदेव	१२८ पुंजराज
८३ मरु	१०६ सुनक्षत्र	१२९ वंभ
८४ प्रश्रुत	१०७ पुष्कर	१३० अजयचंद
८५ संघ	१०८ अन्तरीक्ष	१३१ अभयदेव
८६ अमर्षण	१०९ सुतप	१३२ विजयचंद
८७ सहस्रज्ञान	११० धामित्रजित	१३३ जयचन्द्र
८८ विश्वशाक्त	१११ बृहद्भानु	१३४ वरदायीसेन
८९ प्रसेनजित्	११२ बर्हि	१३५ सीताराम
९० तक्षक	११३ कृतजय	१३६ सोहा
९१ बृहद्बल	११४ रणजय	१३७ आस्थान
९२ बृहद्गण	११५ संजय	१३८ भृहद्
९३ गुप्तक्रिय	११६ थाप	१३९ रायपाल
९४ षत्सवृद्ध	११७ शुद्धोद	१४० कल्ह
९५ प्रीतिव्योम	११८ लांगुल	१४१ जातूण
९६ भानु	११९ प्रसेनजित्	१४२ छाहा
९७ विदग्ध	१२० क्षुद्रक	१४३ तोटा
९८ वाहिनीपति	१२१ रुपक	१४४ सलखा
९९ सहदेव	१२२ सुरथ	१४५ वीरम
१०० वीर	१२३ समित्र	१४६ बामुण्डराय
१०१ बृहद्दश	१२४ पदार्थ	१४७ रणमल
१०२ भानुमन	१२५ ज्ञानपति	१४८ योधराय

(इसके भागे बीकानेरके राजवंश को नामावली है । एक अन्य यातमें वंगालके २८० नाम होनेका उल्लेख टैलीटोरील्ले साहब ने किया है) ।

२ राठौर वंशावली (महाराजा रायसिंहके समयकी, हमारे सग्रहकी अन्य)

१ शिवशक्ति	२६ निधु	५१ योगरा (३)
२ विगत	२७ हरिसेन	५२ भद्र
३ अविगत	२८ वीरसेन	५३ शीतरावण
४ इन्द्र	२९ विद्युवति	५४ अस्थान
५ इन्द्राधिपति	३० वाराह निधि	५५ धूहट
६ मुदमुदाकार	३१ अत्यादिक	५६ रायपाल
७ ब्रह्मा	३२ अमरोपम	५७ काहरा
८ मरोवि	३३ सत्यास	५८ आहण
९ समुद्र	३४ पुजराज	५९ छाडड
१० चन्द्रमा	३५ शातन राजा	६० तीडड
११ कृत्तु	३६ गोगेय, चित्र, विचित्र	६१ सलखट
१२ विधातक	३७ घृतराष्ट (विचित्रके पुत्र)	६२ वीरसु
१३ मचुकडु	३८ पांडु (चित्रक पुत्र)	६३ अठ डड
१४ हरिणाख्य	३९ कलिंग	६४ रिणमल्ल
१५ प्रहराज	४० मेघमल्ल	६५ जोधउ
१६ विरोचन	४१ चंपसेन	६६ सातल
१७ बलि	४२ विशाखसु	६७ सूर्यमल्ल (सातल भ्राता)
१८ इगोध	४३ मदभ्रम	६८ गांगा
१९ सहस्रप्राजुन	४४ कृशाभ्रम	६९ मालदेव
२० करुप	४५ अज	
२१ चन्द्रप्रहाम	४६ कमलज	
२२ वकरा	४७ अदचद	
२३ जेल	४८ विजयचद	
२४ प्रभकु	४९ जयचद (पंगुलउ)	
२५ नल	५० कम्मणु	

विशेष नाम सूची

अ
अकबर ६६, ६७, ७०, ७६
अकबरपुर २
अखैराज ६९
अमिरव ३८
अमिर्वर्ण ३६
अज १७, ५१, ५२
अजमेर ६५
अजामिल ३
अजैराज ५७
अतिथि ३४
अत्रिय ६
अनेनस ८
अभिमान्यु ३७
अमंचंद ४६, ७४
अमरसर ६५
अमरसिंह ७१
अयुताजित १४
अयोध्या ७
अरजुन ६६
अइवलाइव ९
अस्मक १५
अस्वसेन ३८
असमंजस १३
अहीनग ३५
आ
आगरा ३
आनंदघन ७०

आबू ६८
आसकरन ६७
आस्थान ५१, ५२, ७४
इ
इन्द्र १५
इन्द्रजीत ३२
इस्वाक ७
इस्वाकुवंश ३७, ३८
ई
ईडर नगर ५२
ईडरीया राठौर ५२
ऊ
ऊजरो ५८
ऊधौ ५८
श्रु
श्रुतु ६
ए
एलबिल १५
औ
औधि (अवधदेश) १८, ६६
अं
अंगद २८
अंगिरा ६
अंतरीक्ष ३७
अंवरोष १०
अंभुसेन ३६
असमंजस १३

क
कछवाही ८३
कनोजु ४३, ४४, ४५, ४६, ४८
५१, ७३, ७४
कनौजिया राठौर ४४, ८८
कपिल १३
कर्गसिंह ६१
कर्णसेन ३८
कर्नाटक देश ३६, ४०, ५२, ७४
करन ६७
करनु ३६
कर्मसी ६०, ६१
कर्मस्योत ६१
कसरराज ३८
कल्की ६
कस्यप ६७, ७३
काकलदेव ३८
काकुरथ ७, ८
कांधल ५८
कान्ह ५६, ६४
कान्हूर ५३, ७४
काबिल ७८
काशी ४२
कासली ६५
किसनसिंह ६६
कीर्तिवर्मा ३८
कुकुरु ६२
कुम्भकरण ३२
कुम्भलमेर ६५

कुम्भा ५९, ७४
 कुबलाश्व ८, ६
 कुश ३४, ७३
 कृष्णा ५७
 कूर्म ४
 कुंभावत ८०
 कृष्णा ५
 कृष्णादाम ६४
 कृष्णादश ६
 केरुई १७, २०, २१, २३
 केशरी १२, १३
 केशवराइ ५०
 केसव ६७
 केसौ (केशव) दास ८७
 केहरो ८७
 कोटरौ ६५
 कौशिल २३, ३४, ७३
 कौसिक २२
 कौसिन्या १७, २०
 ख
 खखण ३५, ३६
 खाघार ७०
 खरदूषण २५
 खाटू ६५
 खानखाना ८६
 खावडि ६५
 खोवमर ६१
 खेतसी ६३
 खेतस्योत ६८
 खेता ६८, ७४

खेडनगर ६२, ७४
 खेडेचा राठौर ६२, ७४
 खेमसेन २६
 ग
 गजसिंह ७१, ७२, ७६, ७६
 ७७, ७८, ८१
 गंग (कवि) ८६
 गंगा १६, ४४
 गनेस १
 गया ४०, ४३, ६०
 गवरि ७३
 गागा ६३, ६४
 गुज्जर ६६
 गुजरात ४६, ६९, ७४
 गोकुल ३, ६०, ६१
 गोपगोविंदु ३८, ३६
 गोपाल (दास) ६१, ८०
 गोंगा ६६
 व
 वक्रेश्वरी ६७
 वदभाट ४७
 वदामाटी ५३
 वद ८
 वन्दसेन ६६, ६७
 वद ११
 वम्पानगरी ११
 वाचा ५८, ५९
 वाटसू ६६
 वाडा ५८
 वांवा ५७

वापावत ८०
 चित्रकूट (चितौर) २४, ७८,
 ५९, ६५, ७४
 चीतौर दे० चित्रकूट
 चौडा ५५, ५६, ७४
 चौहान ४८, ८३
 छ
 छाहर ६५
 छाडा ५४, ७४
 छेमधन्वा ३५
 ज
 जगतसिंध ६१
 जगनाथ ८०
 जग्यकथल ३८
 जदुवशा ५३, ८३
 जसवत-खदोत १, ८७
 जसवंतविलास २
 जसवतसिंह (जसराज) १, १०, ४५,
 ५१, ५५, ५६, ५७, ६१,
 ६४, ६६, ६६, ७० से ८७
 जहानावाद २
 जहांगीर ७१
 जाजपुर ६५
 जादव ८०
 जानकी दे० सीता
 जामवत २९
 जालौर १६, ६५, ७१, ७४
 जालिण ६३, ५६, ७४

जालौरिया ५६

जेतविह ६९

जेसलमेर ५७

जेचन्द ४७, ४८, ६४

जेखल ६५

जंतमल ५५

जंतमाल ५८

जेता ५७

जेतसी ६३

जेसिध ५५, ७४

जेसिह ४८, ५१

जोगा ६१

जोजावर ६५

जोधा ५७, ५९, ६०, ६१, ६२,

७४

जोधपुर ५९, ६०, ६१, ६४,

६६, ६८

जौनपुर ६०

ट

टोडा ७४

टंक ६५

टोडा ६५

ड

डंटेला ५४

डांवा ६०

डिडवाना ६५

डूंगर ५७

त

तिमरलिंग ५५

तिलोक्तो ६३

तीडा ५४

तुलसी (गम) २, ८७

तेजसी ६४

द

दक्षिणदेश ६७, ७०, ७५

दक्ष ८३

दल ३५

दलपति ६९

दलपति मिश्र १, २, ३ (कविनाम
प्रायः प्रत्येक पृष्ठमें)

दलपागुरा ४७

दगरथ १७, १९, २०, २१, २३,

२४, २९, ६६, ७३

दूडाइव ९

द्वारिका ४८, ४९, ५१, ५२

द्विवटु २८

दिल्ली ३, ५५, ६०, ६५, ६६

७०

दिलोप १३, १५, ७३

दिवाकर ३७

दीप मिश्र २

दुहड ५२

दुनाडे ६१

दूदा ६०-६१

देइदास ६३

देवराज ४५

देवानीक ३५

दौलतिया ६४

ध

धंधु ८, ९

धाम ४५

धूहड ७४

न

ननपाल ३८, ४०

नभ ३५

नरहरदास ६९

नरा ६३

नल ३५

नराइण ६७

नागाना ५२

नागौर ५६, ६५

नाडूल ६५

नाथा ५७

नाभ १४

नाराइण ३, ७०

नाहरखान ५७, ८०

निकुंभ ६

निजाम ७०

निपध ३५

नीबा ६०

नील २९

नेणसी ८०

प

पंचोली ८०, ८०

प्रपुलि ३९
 परमार ५४
 प्रलभुस ३६
 प्रतापमल (सिधई) ८०
 प्रतापसी ६३
 प्रयागपुर ४०, ४२
 पदलाह ४
 पाता ५७
 पारिजात ३५
 पात्र ३७
 प्रागु ६३
 पीपार ६१
 पीरोर्मा ५७
 पुत्र ४१, ७३
 पुढरीक ३५,
 पुरकुस १०
 पुरजय ७, ८
 पुलक ६
 पुष्य ३६
 पुहुकरन ६५, ७९, ८०, ८१
 पूना ५६
 पुरनमल ६७
 पृथ्वीराज ४०, ४८
 पृथ्वीराज ६१
 पृथ्वीराज वल्लोत ६१
 पृथ्वीराज रामो ४८
 प्रसु ८
 फ
 फर्तपुर ६५

फलोधी ६६
 फारसराम ५, २३
 ब
 बभ ४५, ४६, ७४
 बटराज ३९
 बघनौर ६५
 बघनौरपुर ६१
 बनारसी ४२, ४३
 बलिराज ४
 बल ८२
 बढलोलया ६०
 बहादुरसाह ६९
 बद्धा ६
 बाढेल राठौर ५१, ५५
 बाघा ६२ ६३, ७५
 बाला (वत) ५८
 बालि २८
 बाहबमेर ६५,
 बाहुल १२
 बिभोक्षण ६४
 " (२) ३८
 बिक्र १०
 बिहारीदास ६१
 बीकानेर ६१, ६५
 बीरुबय ८६
 बीलारपुर ६१
 बु देला ८७
 बुधराज ६
 बुढान (बुरहान) पुर ७०

बृदछन ३७
 बृददक्ष ८, ९
 बृददक ३७
 बृददाहु ३७
 बैरी ६८
 ब
 बहारी ८०
 भगवान ६६
 भगीरथ १३, ४४, ७३
 भरण २१, २३, २४, ६६
 भरत (२) ४०, ४२, ४३,
 ४४, ४५
 भारतखंड ४०
 भास्कर ५८
 भागीरथी दे० गया
 भाटो ५७
 भाद्राजन ६५
 भारमल ६१
 भागवत २३
 भाग ६६
 भोनमाल ६५
 भोम ५६, ६६
 भूपति (१) ६७
 भूपति ६९
 भोज ७७
 भोजराज ६६
 म
 मंडन ५७
 महणोत राठौर ५७

संडलो ५८

संडोवर ५६, ६५

सथुरा ४८, ५१

सदनदास ८०

सनु ७

सरीच ५, ७३

सरु ३६

सहमदखान ५७

सहीरेलन ५२, ५३

सहीधर (चूरा) ८७

सान्धाता १०, ७३

साधो ६९

सानसिंह ६४

साल (देव) ६४, ६५, ६६, ७५

साला ५५

सारवाड ४८, ५१, ५२, ५६,

६५, ६८, ७२, ७६, ७९, ८४

सार ५२, ६७, ६९, ७०,

८१, ८२

सित्रसह १४, १५

सोन ३

सुचकुन्द १०

सुहणोत ८०

सूलक १५

मेरता ६१, ६५, ८७

मेरा ५८, ५९

मेरतिया राठौर ६१, ८०

मोकल ५८

मोहन ६६

घ

युवनाश्रव ८

युवनाश्रव (२) १०

र

रघु १५, १६, ७३

रघुनाथ दे० राम

रणछोड ५१

रतनसो ५६

रणमल ५६, ५७, ५८, ५९,

६०, ७४

रसरत्नावली ८३

राइपाल (१) ५२, ५३

राइपाल ६०, ६१, ७४

राइपुर ६५

राइसिंघ ६१, ६७, ६८

राइमल ६६

राघवदास ६७

राजसिंह ८०

राठौर ७, ३४, ३७, ४४, ४५,

४६, ४८, ४९, ५१, ५६, ५९,

६०, ६४, ६७, ७४, ७५

रामनरेस ३

रामचन्द्र ५, ७, १८, २०, २१,

२२, २३ से, ६६, ७३, ८१

रावत ५६,

रामदे ५६

रामदास ६१

राम ६६, ६७

रामचंद भाटी ८१

रामन ७, १८, १९, २४, २५, २६,

३१, ३२, ३३, ३४, ७३, ८१

रिलुपर्ण १४

रिष्यश्रृंग १९

रुक्मावती ७१, ७२

रुक्क १२

रूपसिंह ६६

रूपा ५७

रैवासा ६५

रोहिया चारन ५३

रोहित, ११, ७३

रोहितासगढ़ ७३

ल

लंक २९, ३४

लखन २१, २२, २३, २४, २५,

२९, ३०, ३२

लखो ५८

लव ३४, ७३

लाग्वा ५८

लाखौ फुलाणी ४८, ५१, ७४

लाडनू ६५

लोभो ५६

लोहगढ ६५

व

वज्रनाभ ३४

वनमालीदास ६१

वरदाइसेन ४८, ७४

वरसिंह ६१

वस्तुविंश ३७

सुमिग्राजित ३७

सुमंत्रि ३६

सुवान ३७

सूपनखा २४, २५

सूर्य ७

सूजा ६०, ६१, ६२, ६३, ७४

सूरजसिंह ६९, ७०, ७५, ८०

सेखा ६३

सेनजित ९

सोजत ६५, ६७

सोदा ५४

सोनिग ५१, ५२

सोभित ५५

सोलंकी ५१

सोनागिर ७४

सोनगिरी ७१

ह

हसुमंत २७, २९, ३२

हर्जन्व (१) ९

हर्जन्व (२) १०

हरिवंश ८७

हरित ११

हरिनकुंग ४, १९

हरिचन्द्र ११, ७३

हरिण्यनाम ३६

हाडी ८३

हापौ ५८

त्र

त्रसदक्ष १०

त्रिजटा ३१

त्रिपांडुविजय ३८

त्रिवंधन ११

त्रिवेणी ४१

त्रिगंकु ११

